सम्पादकीय

# सदाक़त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ प्रमुख पक्ष

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला ने इस साल इस विशेषांक के लिए सदाक़त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की मंज़ूरी प्रदान की है और अपनी अत्याधिक व्यस्तता के बावजूद ईमान वर्धक पैग़ाम भी भिजवाया है जो निस्संदेह हम पाठकों के लिए बहुत ही ख़ुशी और प्रसन्नता का विषय होगा। हम हुजूर अनवर का इस मुहब्बत तथा करूणा के लिए बहुत अधिक धन्यवाद अदा करते हैं और दिल की गहराई से दुआ करते हैं اَللّٰهُمَّ اَيِّدْ اِمَامَنَا بِرُوْحِ الْقُدُسِ وَبَارِكْ لَنَا فِيْ عُمْرِهٖ وَاَمْرِهٖ

इसमें कोई भी शंका नहीं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त (सच्चाई) के तर्कों को सम्पूर्ण रूप से जानना बहुत ही मुश्किल है बल्कि असंभव है। आपका पूरा जीवन, आपकी लेखनी, आप की तक़रीर, आपका चेहरा, आपका चरित्र और आदतें, आपके सहाबा, आप की औलाद, आपका इश्के इलाही, इश्के रसूल, इश्के क़ुरआन, आप की भविष्यवाणियां आप के मुअजज़ात तथा करामात, कबूलियते दुआ आप का इल्म तथा फज़ल, इस्लाम सेवा, मानव जाति की सेवा, मानव जाति की सहानुभूति, अत: बेशुमार पक्ष हैं। आप की सच्चाई के समस्त पक्षों का को जानना संभव नहीं। हमने आपकी सदाक़त की एक झलक पाठकों के सामने प्रस्तुत करने की कोशिश की है। सदाक़त के बहुत से पक्ष और बहुत से दलीलें नि:संदेह वर्णन होने से रह गए होंगे जिसका हमें एहसास है।

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाकत की दलीलें बहुत अधिक चारों तरफ बिखरी पड़ी है अगर कोई दर्दमन्द दिल लेकर विचार करे तो बहुत जल्द आप की सच्चाई उस पर खुल सकती है जिन्होंने सच्चे दिल से विचार किया वे वास्तविकता को पा गए उन्होंने आपको स्वीकार कर लिया और आप की जमाअत में शामिल हो गए।

आप अल्लाह और उसके रसूल के भविष्यवाणियों के अनुसार ठीक समय पर प्रकट हुए जबकि उम्मते मुस्लिमा को आपकी ज़रूरत थी और सारी उम्मत आप का रास्ता देख रही थी उम्मत के बुज़ुर्गों की भविष्यवाणियों के कारण उस समय यह बात सर्वसाधारण में प्रचलित थी कि मसीह तथा महदी चौदहवीं सदी में नाज़िल होगा अत: सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार आप ठीक तेरहवीं सदी के आख़िर में तथा चौदहवीं सदी के आरंभ में प्रकट हुए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"याद रहे कि जो व्यक्ति उतरने वाला था वह बिल्कुल समय पर उतर आया और आज सम्पूर्ण नविश्ते (पूर्व लिखित वचन) पूरे हो गए। समस्त नबियों की पुस्तकें इसी युग का प्रमाण देती हैं। ईसाइयों का भी यही अक़ीदा (आस्था) है कि इसी युग में मसीह मौऊद का आना आवश्यक था। उन पुस्तकों में स्पष्ट तौर पर लिखा था कि आदम से छटे हज़ार के अन्त पर मसीह मौऊद आएगा। अत: छठे हज़ार का अन्त हो गया और लिखा था कि उससे पहले ज़ुस्सिनीन सितारा निकलेगा तो वह भी निकल चुका। और लिखा था कि उसके दिनों में सूर्य और चन्द्र को एक ही महीना में जो रमज़ान का महीना होगा ग्रहण लगेगा तो एक समय हुआ कि यह भविष्यवाणी भी पूर्ण हो चुकी और लिखा था कि उसके युग में बड़ी भयंकर ताऊन (प्लेग) पैदा होगी इसकी ख़बर इन्जील में भी मौजूद है। अत: देखता हूँ कि ताऊन ने अब तक पीछा नहीं छोड़ा। और क़ुरआन शरीफ,हदीसों और पहली पुस्तकों में लिखा था कि उसके युग में एक नई सवारी होगी होगी जो आग से चलेगी और उन्हीं दिनों में ऊंट बेकार हो जाएंगे और यह अन्तिम भाग की हदीस सहीह मुस्लिम में भी मौजूद है। अत: वह सवारी रेल है जो पैदा हो गई और लिखा था कि वह मसीह मौऊद सदी के आरम्भ में आएगा अत: सदी में से भी इक्कीस वर्ष गुज़र गए। अब इन समस्त निशानों के बाद जो व्यक्ति मुझे झुठलाता है वह केवल मुझे नहीं समस्त नबियों को झुठलाता है और ख़ुदा तआला से युद्ध करता है। यदि वह पैदा न होता तो उसके लिए अच्छा था।"

(तज़करतुश्शहादतैन, रूहानी खज़ायन जिल्द 20 पृष्ठ 24)

अल्लाह तआला ने अपनी सुन्नत तथा वादों के अनुसार कि

اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا. كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ

और اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ

के अनुसार आप की सहायता की। आप का विरोधी क्या हिन्दू क्या आर्या और क्या ईसाई सब ने किया। सब ने अलग-अलग और मिल कर आप को फना करने में कोई कसर बाकी न रखी। जंग अहज़ाब की तरह आप पर चढ़ाई की गई। परन्तु अल्लाह तआला की सहायता तथा मदद प्रत्येक क्षण आप के साथ रही। आप ने कई स्थानों पर अपनी तकरीरों तथा तहरीरों में अपने विरोधियों को समझाना चाहा कि अगर मैं अगर झूठा हूं तो मेरे जैसी कोई उपमा पेश करो कि किसी झूठे की अल्लाह तआला ने सहायता की हो? हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलम फरमाते हैं

"मैं सच-सच कहता हूं कि जब इल्हाम का क्रम आरंभ हुआ तो उस युग में मैं जवान था, अब मैं वृद्ध हुआ और आयु सत्तर वर्ष के निकट पहुंच गई तथा उस युग पर लगभग पैंतीस वर्ष गुज़र गए परन्तु मेरा ख़ुदा मुझ से एक दिन भी पृथक नहीं हुआ। उसने अपनी भविष्यवाणियों के अनुसार एक संसार को मेरी ओर झुका दिया। मैं निर्धन तथा दरिद्र था, उसने मुझे लाखों रुपए प्रदान किए तथा मुझे एक दीर्घ अवधि पूर्व आर्थिक सफलताओं की सूचना दी और प्रत्येक मुबाहला में मुझे विजय दी और मेरी सैकड़ों दुआएं स्वीकार कीं और मुझे वे नेअमतें दीं कि जिन्हें मैं गिन

पृष्ठ 35 पर शेष

# विषय सूची


| | | |
|---|---|---|
| 1 | सम्पादकीय | 1 |
| 2 | पवित्र क़ुरआन | 2 |
| 3 | पवित्र हदीस | 5 |
| 4 | कलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम | 7 |
| 5 | हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की संक्षिप्त जीवनी | 8 |
| 6 | सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इश्के इलाही, इश्के कुरआन, और इश्के रसूल के आइना में | 13 |
| 7 | हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरोधियों का इबरत वाला अन्जाम | 20 |
| 8 | हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर सात मुक़दमे आप की सदाक़त के सात निशान | 28 |


जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

# इमाम महदी व मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव और आप की सदाकत के बारे में कुरआन मजीद की आयतें

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَ يُزَكِّيْهِمْ وَ يُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ ۗ وَ اِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۙ﴿۳﴾ وَّ اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ؕ وَ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۴﴾ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۵﴾

(सूरह अल्जुम्अ: 2 से 5)

**अनुवादः** जो आकाशों में है और जो धरती में है अल्लाह ही का गुणगान करता है । वह सम्राट है, वह पवित्र है, पूर्ण प्रभुत्व वाला और परम विवेकशील है।

वही है जिसने निरक्षर लोगों में उन्हीं में से एक महान रसूल भेजा जो उन पर उसकी आयतों का पाठ करता है और उन्हें पवित्र करता है और उन्हें पुस्तक की और विवेकशीलता की शिक्षा देता है जबकि इससे पूर्व वे निश्चित रूप से खुली खुली पथभ्रष्टता में पड़े थे। और उन्हीं में से दूसरों की और भी (उसे भेजा है।) जो अभी उनसे नहीं मिले। वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है। यह अल्लाह की कृपा है वह उसको जिसे चाहता है प्रदान करता है और अल्लाह बड़ा कृपालु है।

**हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:**

““ख़ुदा की वाणी में यह बात निश्चित थी कि इस उम्मत का दूसरा भाग वह होगा जो मसीह मौऊद की जमाअत होगी। इसलिए ख़ुदा तआला ने इस जमाअत को दूसरों से पृथक करके वर्णन किया है जैसा कि उसका कथन है وَّ اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ अर्थात् मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत में से एक अन्य वर्ग भी है जो बाद में अन्तिम युग में आने वाले हैं और सही हदीस में है कि इस आयत के उतरने के समय आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना हाथ सलमान फ़ारसी की पीठ पर मारा और कहा -

لو كان الايمان معلّقا بِا الثريا لناله رجل من فارس

और यह मेरे बारे में भविष्यवाणी थी, जैसा कि ख़ुदा तआला ने बराहीन अहमदिया में इस भविष्यवाणी के सत्यापन के लिए वही हदीस बतौर वह्यी मुझ पर उतारी तथा वह्यी के अनुसार मुझ से पूर्व इसका कोई चरितार्थ निश्चित न था और ख़ुदा की वह्यी ने मुझे निश्चित कर दिया। प्रत्येक प्रशंसा ख़ुदा के लिए है। इसी से।

وَ اِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَ مُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ ؕ

فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۷﴾ وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَ هُوَ يُدْعٰۤى اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ وَ اللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۸﴾ يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ وَ اللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَ لَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۹﴾ هُوَ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَ دِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ وَ لَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ﴿۱۰﴾

(सूरह अस्सफ 7 से10)

**अनुवादः** और (याद करो) जब मरियम के पुत्र ईसा ने कहा हे बनी इस्राईल! निस्संदेह मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का रसूल बन कर उसकी पुष्टि करते हुए आया हूं जो तौरात में से मेरे सामने है। और एक महान रसूल का शुभ समाचार देते हुए जो मेरे बाद आएगा जिसका नाम **अहमद** होगा। फिर जब स्पष्ट चिन्हों के साथ उनके पास आया तो उन्होंने कहा यह तो एक खुला-खुला जादू है। और उससे अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गड़े हालांकि उसे इस्लाम की और बुलाया जा रहा हो और अल्लाह अत्याचारी लोगों को हिदायत नहीं देता। वे चाहते हैं कि अपने मुंह की फूंकों से अल्लाह के नूर को बुझा दें हालांकि अल्लाह अवश्यमेव अपना नूर पूरा करने वाला है चाहे काफिर बुरा मनाऐं। वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत के साथ भेजा ताकि वह उस धर्म (के प्रत्येक क्षेत्र) पर पूर्ण रूप से विजयी कर दे चाहे मश्रिक बुरा मनाऐं।

**हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:**

“यह कुरआन शरीफ में एक महान भविष्यवाणी है जिसके बारे विश्वसनीय उल्मा सहमत हैं कि यह मसीह मौऊद के हाथ में पूरी होगी।

( तिर्याकुल कुलूब रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 15 पृष्ठ 232)

इसी प्रकार फरमाया:

“आयत وَ مُبَشِّرًا بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ में यह इशारा है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो वसल्लम का आख़रू ज़माना में एक प्रादुर्भाव होगा मानो वह उस का एक हाथ होगा जिसका नाम आसमान पर अहमद होगा और वह हजरत मसीह के तरीके पर जमाली रूप में धर्म को फ़ैलाएगा ”

इसी प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं

“इल्हाम में खुदा तआला ने मेरा नाम ईसा रखा और मुझे इस कुरआन की की भविष्यवाणी(هُوَ الَّذِيْۤ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَ دِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ) का मिस्दाक ठहराया जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के लिए विशेष रूप से थी। और आने वाले मसीह मौऊद के सारे गुण मुझ में स्थापित किए।

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪ وَ لَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَ لَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْـًٔا ؕ وَ مَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ

(अन्नूर: 56)

**अनुवाद:** तुम में से जो लोग ही ईमान लाए और पुण्य कर्म किए उनसे अल्लाह ने पक्का वादा किया है कि उन्हें अवश्य धरती में ख़लीफा बनाएगा। जैसा कि उसने उनसे पहले लोगों को ख़लीफा बनाया। और उनके लिए उनके धर्म को जो उसने उनके लिए पसंद किया अवश्य दृढ़ता प्रदान करेगा। और उनकी भयपूर्ण अवस्था के बाद अवश्य उन्हें शांतिपूर्ण अवस्था में परिवर्तित कर देगा। वे मेरी उपासना करेंगे मेरे साथ किसी को साझीदार नहीं ठहराएंगे और जो उसके बाद भी कृतज्ञनता करें तो यही वे लोग हैं जो अवज्ञाकारी हैं।

**हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:**

"हे प्रियो ! जब कि सनातन से अल्लाह तआला की यह आदत है कि खुदा तआला दो कुदरतें दिखाता है ताकि विरोधियों की दो झूठी खुशियों को नष्ट कर के दिखला दे अत: यह संभव नहीं है कि ख़ुदा तआला अपनी पुरातन आदत को छोड़ दे इसलिए तुम मेरी इस बात से जो मैंने तुम्हारे पास वर्णन की दुखी मत हो और तुम्हारे दिल परेशान न हो जाऐं क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना ज़रूरी है और इसका आना तुम्हारे लिए बेहतर है क्योंकि वह चिरस्थाई है जिसका क्रम क़यामत तक विच्छेद नहीं होगा और वह दूसरी कुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊं लेकिन मैं जब जाऊंगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो हमेशा तुम्हारे साथ रहेगी।

(अल्वसीयत रूहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 305)

وَ لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ﴿۴۵﴾ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ﴿۴۶﴾ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ﴿۴۷﴾ فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ﴿۴۸﴾

(अलहाक्क: 11-10)

**अनुवाद:** और यदि वे कुछ बातें झूठ के रूप में हमारी और सम्बन्धित कर देता तो हम उसे अवश्य दाहिने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:सन्देह उसकी प्राण-स्नायु को काट डालते फिर तुम में से कोई एक भी उससे हमें रोकने वाला ना होता

**हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:**

ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में एक नंगी तलवार की भांति यह आदेश देता है कि यह नबी यदि मुझ पर झूठ बोलता और किसी बात में झूठ बनाता तो मैं उसकी हृदय की रक्त ले जाने वाली धमनी काट देता और वह इतने लम्बे समय तक जीवित न रह सकता। अत: अब जब हम अपने इस मसीह मौऊद को इस पैमाने से नापते हैं तो बराहीन अहमदिया के देखने से सिद्ध होता है कि यह दावा ख़ुदा की ओर से होने तथा ख़ुदा से वार्तालाप का दावा लगभग तीस वर्ष से है और इक्कीस वर्ष से बराहीन अहमदिया प्रकाशित है। फिर यदि इस अवधि तक इस मसीह का मृत्यु से अमन में रहना उसके सच्चे होने पर प्रमाण नहीं है तो इस से अनिवार्य होता है कि नऊज़ुबिल्लाह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तेईस वर्ष तक मृत्यु से सुरक्षित रहना आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चा होने पर भी प्रमाण नहीं है, क्योंकि जबकि ख़ुदा तआला ने यहां एक झूठे तौर पर नबी का दावा करने वाले को तीस वर्ष तक ढील दी और لَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا (अल हाक़्क़:- 45) के वादे का कुछ ध्यान न रखा तो इसी प्रकार नऊज़ुबिल्लाह यह भी अनुमान के निकट है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी झूठा होने के बावजूद ढील दे दी हो, किन्तु आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का झूठा होना असंभव है। अत: जो बात असंभव को अनिवार्य करे वह भी असंभव है और स्पष्ट है कि यह क़ुर्आन का तर्क नितान्त स्पष्ट तभी ठहर सकता है जब कि वह क़ाइद: कुल्लिय:(व्यापक नियम)माना जाए कि ख़ुदा उस झूठ बनाने वाले को जो प्रजा को गुमराह करने के लिए ख़ुदा की ओर से मामूर होने का दावा करता हो कभी ढील नहीं देता। क्योंकि इस प्रकार से उसकी बादशाहत में गड़बड़ी पड़ जाती है तथा सच्चे और झूठे में अन्तर जाता रहता है।

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 17 ज़मीमा तोहफा गोलड़विया पृष्ठ 42)

وَ قَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ ۖ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗۤ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَ قَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَ اِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَ اِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿۲۹﴾

**अनुवाद:** और फिरऔन की संतान में से एक मोमिन पुरुष ने जो अपने ईमान को छिपाए हुए था कहा कि क्या तुम केवल इसलिए एक व्यक्ति का वध करोगे कि वह कहता है कि मेरा रब्ब अल्लाह है और वे तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से स्पष्ट चीन लेकर आया है यदि वे झूठा निकला तो निस्संदेह उसका झूठ उसी पर पड़ेगा और यदि वह सच्चा हुआ तो जिन बातों से वह तुम्हें डराता है उनमें से कुछ अवश्य तुम्हें आ पकड़ेंगे निस्संदेह अल्लाह उसे हिदायत नहीं दिया करता जो सीमा से बढ़ा हुआ और अत्यंत झूठा हो।

**हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:**

"ख़ुदा तआला के सच्चे और उसकी ओर से भेजे हुए कि मुकाबले में हर किस्म की कोशिशें उन को कमज़ोर करने के लिए की जाती हैं परंतु ख़ुदा उनके साथ होता है वे सारी कोशिशें मिट्टी में मिल जाती हैं। ऐसे अवसरों पर कुछ शरीर फितरत लोग भी होते हैं जो कह देते हैं وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ सच्चों की सच्चाई ख़ुद उनके लिए एक ज़बरदस्त सबूत और दलील होती है और झूठे का झूठ ही उस को हलाक कर देता है। अत: अगर उन लोगों को मेरे विरोध से पहले कम से कम इतना ही ढूंढ लेना चाहिए था कि खुदा तआला की किताब में यह एक रास्ता, सच्चे की निशानी का रखा गया है मगर अफसोस तो यह है कि ये लोग कुर्आन पढ़ते हैं मगर उनके गले से नीचे नहीं उतरता।"

( तफसीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिल्द तफसीर सूरत पृष्ठ 199 )

☆ ☆ ☆
☆ ☆
☆

# इमाम महदी तथा मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बारे में

## सय्यदना हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक उपदेश।

### मसीह मौऊद तथा इमाम महदी के प्रादुर्भाव की भविष्यवाणी

يُوْشِكُ مَنْ عَاشَ مِنْكُمْ اَنْ يَّلْقٰى عِيْسَى بْنَ مَرْيَمَ اِمَامًا مَهْدِيًّا حَكَمًا عَدْلًا يَكْسِرُ الصَّلِيْبَ وَيَقْتُلُ الْخِنْزِيْرَ ۔

( मस्नद अहमद, जिल्द 2, पृष्ठ 156, बहवाला हदीकतुस्सालेहीन, लेखक मलक सैफुर्रहमान साहिब, हदीस संख्या: 948)

**अनुवाद:** तुम में से जो जीवित रहेगा वह (इंशा अल्लाह) ईसा बिन मरियम का ज़माना पाएगा। वही इमाम महदी और हकम और न्याय करने वाला होगा जो सलीब को तोड़ेगा और सुअर को कत्ल करेगा।

### इमाम महदी और मसीह मौऊद का हुलिया और काम

**इस के माध्यम से सलीब को दूर करेगा और सूअर के गुण वाले लोगों का सफाया करेगा।**

**इस के ज़माने में इस्लाम के सिवा बाकी धर्मों को मिटा देगा।**

عَنْ اَبِىْ هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِىِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : اَلْاَنْبِيَآءُ اِخْوَةُ الْعَلَّاتِ اُمَّهَاتُهُمْ شَتّٰى وَاَنَا اَوْلَى النَّاسِ بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ لِاَنَّهٗ لَمْ يَكُنْ بَيْنِىْ وَبَيْنَهٗ نَبِىٌّ وَاِنَّهٗ نَازِلٌ فَاِذَا رَاَيْتُمُوْهُ فَاَعْرِفُوْهُ فَاِنَّهٗ رَجُلٌ مَرْبُوْعٌ اِلَى الْحُمْرَةِ وَالْبَيَاضِ سَبْطٌ كَاَنَّ رَاْسَهٗ يَقْطُرُ وَاِنْ لَمْ يُصِبْهُ بَلَلٌ بَيْنَ مُمَصَّرَتَيْنِ فَيَكْسِرُ الصَّلِيْبَ وَيَقْتُلُ الْخِنْزِيْرَ وَيَضَعُ الْجِزْيَةَ وَيُعْطِلُ الْمِلَلَ حَتّٰى يُهْلِكَ اللّٰهُ فِىْ زَمَانِهِ الْمِلَلَ كُلَّهَا غَيْرَ الْاِسْلَامِ وَيُهْلِكُ اللّٰهُ فِى زَمَانِهِ الْمَسِيْحَ الدَّجَّالَ الْكَذَّابَ وَتَقَعُ الْاَسَنَةُ فِى الْاَرْضِ حَتّٰى تَرْتَعَ الْاِبِلُ مَعَ الْاَسَدِ جَمِيْعًا وَالنُّمُوْرُ مَعَ الْبَقَرِ وَالذِّئَابُ مَعَ الْغَنَمِ وَيَلْعَبَ الصِّبْيَانُ وَالْغِلْمَانُ بِالْحَيَّاتِ لَا يَضُرُّ بَعْضُهُمْ بَعْضًا فَيَمْكُثُ مَا شَآءَ اللّٰهُ اَنْ يَّمْكُثَ ثُمَّ يُتَوَفّٰى فَيُصَلِّىْ عَلَيْهِ الْمُسْلِمُوْنَ وَيَدْفِنُوْنَهٗ۔

(अबु दाऊद, किताबुल मलाहिम, बाब खुरूजिदज्जाल, पृष्ठ 594, मस्नद अहमद बिन हंबल, जिल्द 2, पृष्ठ 437, बहवाला हदीकतुस्सालेहीन हदीस नंबर 945)

हज़रत अबू हुरैरा कहते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया निबयों का आपस में रिश्ता भाइयों जैसा है, जिनके पिता एक और माताएं अलग अलग हैं। मेरे लोगों में से, हज़रत ईसा बिन मर्यम से निकटतम सम्बन्ध है क्योंकि मेरे और उसके बीच कोई नबी नहीं है। (इस वजह से वह मेरा आध्यात्मिक प्रतिरूप बनकर निश्चित रूप से प्रकट होगा।) जब तुम इसे देखो तो इस हुलिए से इस पहचान लेना कि वह मध्यम कद का होगा। लाल और सफेद रंग, सीधे बाल उस के सिर से बिना पानी प्रयोग किए हुए गिर रहे होंगे अर्थात उस के बाल चमक के कारण गीले लगते होंगे। वह प्रकट होगा कर सलीब को तोड़ेगा अर्थात सलीब का झूठा होना प्रमाणित करेगा। सूअर को कत्ल करेगा अर्थात सूअर के गुणों वाले लोगों का सफाया करेगा।जिज़्या समाप्त करेगा अर्थात उस का ज़माना धार्मिक जंगों की समाप्ति का ज़माना होगा। उस के ज़माना में इस्लाम के इलावा अल्लाह तआला अन्य धर्मों को रूहानी दृष्टि से भी और शान तथा शौकत की दृष्टि से भी मिटा देगा। और झूठे मसीह दज्जाल को समाप्त कर देगा। और इस प्रकार का अमन तथा शान्ति का ज़माना होगा कि ऊंट शेर के साथ, चीते गायों के साथ, भेड़िए बकिरयों के साथ इकट्ठे चरेंगे। बच्चे और बड़ी उमर के लड़के सांपों के साथ खेलेंगे। अत: अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार जितना समय अल्लाह तआला चाहेगा मसीह दुनिया में रहेगा। फिर वफात पाएंगे मुसलमान उन का जनाज़ा पढ़ेंगे और उन को दफन करेंगे।

### आने वाला मसीहा मसीह मौऊद आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़लीफा होगा

اَلَا اِنَّ عِيْسَى بْنَ مَرْيَمَ لَيْسَ بَيْنِىْ وَبَيْنَهٗ نَبِىٌّ وَلَا رَسُوْلٌ ، اَلَا اِنَّهٗ خَلِيفَتِىْ فِىْ اُمَّتِىْ مِنْ بَعْدِىْ ، اَلَا اِنَّهٗ يَقْتُلُ الدَّجَّالَ وَيَكْسِرُ الصَّلِيْبَ وَيَضَعُ الْجِزْيَةَ ، وَتَضَعُ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا اَلَا مَنْ اَدْرَكَهٗ فَلْيَقْرَأْ عَلَيْهِ السَّلَامَ ۔

(तिबरानी अल्औसत वस्सग़ीर)

ख़बरदार रहो कि मर्यम मसीह मौऊद और मेरे मध्य में कोई नबी नहीं होगा। ध्यान से सुन लो कि वह मेरे बाद उम्मत में मेरा ख़लीफा होगा। सलीब अर्थात सलीब की आस्थाओं को टुकड़े टुकड़े कर देगा और ज़िज्याको समाप्त कर देगा। अर्थात इस का रिवाज उठ जाएगा क्योंकि) उस समय धार्मिक जंगों की समाप्ति हो जाएगी। याद रखो कि जिसे भी उस का ज़माना मिले वह उन्हें मेरा सलाम ज़रूर पहुंचा दे।

### इमाम महदी और मसीह मौऊद कदआ नाम के गांव में प्रकट होंगे

قَالَ النَّبِىُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : يَخْرُجُ الْمَهْدِىُّ مِنْ قَرْيَةٍ يُقَالُ لَهَا كَدْعَهٗ وَيُصَدِّقُهُ اللّٰهُ تَعَالٰى وَيَجْمَعُ اَصْحَابَهٗ مِنْ اَقْصَى الْبِلَادِ عَلٰى عِدَّةِ اَهْلِ بَدْرٍ بِثَلَاثِ مِائَةٍ وَثَلَاثَةَ عَشَرَ رَجُلًا وَمَعَهٗ صَحِيْفَةٌ مَخْتُوْمَةٌ فِيْهَا عَدَدُ اَصْحَابِهٖ بِاَسْمَائِهِمْ وَبِلَادِهِمْ وَخِلَالِهِمْ۔

(कज़ा फिल अरबईन, जवाहेरुल असरार कलमी, पृष्ठ 56, लेखक हज़रत शेख अली हमज़ा बिन अली अल्मुलक अत्तौसी, इर्शादाते फरीदी, जिल्द 3, पृष्ठ 70, मुद्रित मुफीद आम प्रैस आगरा 1330 हिजरी)

जवाहेरुल असरार पुस्तक के लेखक लिखते हैं कि अरबईन में यह रिवायत वर्णन हुई है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया महदी एक ऐसे गांव से प्रकट होगा जिसका नाम "कदअ" होगा। (कादियान की तरफ इशारा है) अल्लाह तआला उसकी सत्यता में निशान दिखाएगा। और बदरी सहाबा की तरह जैसे विभिन्न क्षेत्रों के रहने वाले तीन सौ तेरह पवित्र सहाबा उसे प्रदान करेगा। जिन के नाम तथा पते एक पुस्तक में वर्णन होंगे।

### इमाम महदी को आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सलाम पहुंचाने का ताकीदी आदेश

اَلَا اِنَّ عِيْسَى بْنَ مَرْيَمَ لَيْسَ بَيْنِىْ وَبَيْنَهٗ نَبِىٌّ وَلَا رَسُوْلٌ ، اَلَا اِنَّهٗ خَلِيفَتِىْ فِىْ اُمَّتِىْ مِنْ بَعْدِىْ ، اَلَا اِنَّهٗ يَقْتُلُ الدَّجَّالَ وَيَكْسِرُ الصَّلِيْبَ وَيَضَعُ الْجِزْيَةَ ، وَتَضَعُ الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا اَلَا مَنْ اَدْرَكَهٗ فَلْيَقْرَأْ عَلَيْهِ السَّلَامَ ۔

(तिबरानी अल्औसत वस्सग़ीर)

ध्यान से सुनो ईसा बिन मर्यम और मेरे बीच कोई नबी या रसूल नहीं होगा। ख़ूब सुन लो कि वह मेरे बाद मेरी उम्मत में से मेरा ख़लीफा होगा। वह ज़रूर दज्जाल को कत्ल करेगा। सलीब (यानी सलीबा विश्वास) को चकनाचूर कर देगा और जज़िया को ख़त्म कर देगा (यानी इसका रिवाज उठ जाए क्योंकि) इस समय में (धार्मिक) युद्धों का ख़ात्मा हो जाएगा। याद रखो जिसे भी उन से मुलाकात का सम्मान प्राप्त हो वह उन्हें मेरा सलाम ज़रूर पहुंचाए।

# मैं ख़ुदा तआला का ज़िल्ली तथा बरौज़ी रूप से नबी हूं

**और प्रत्येक मुसलमान को धार्मिक मामलों में मेरी इताअत करनी वाजिब है और मसीह मौऊद मानना वाजिब है और प्रत्येक जिस को मेरी तब्लीग़ पहुंच गई चाहे वह मुसलमान है और मुझे अपनी हकम नहीं ठहराता और न मुझे मसीह मौऊद मानता है और न मेरी वह्य को ख़ुदा की तरफ से जानता है वह आसमान पर काबिले मुआख़ज़ा (सज़ा के योग्य) है।**

## उपदेश हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

### कोई अक़ीदा मेरा अल्लाह और उस के रसूल के विरुद्ध नहीं।

“ मुझे प्रताप वाले अल्लाह तआला की क़सम है कि मैं काफिर नहीं لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ मेरा अक़ीदा है और لٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ पर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में मेरा ईमान है। मैं अपने इस बयान पर इतनी दृढ़ता से कसमें खाता हूं जितने ख़ुदा तआला के पवित्र नाम हैं। और जितने कुरआन करीम के अक्षर हैं और जितने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अल्लाह तआला के निकट पवित्र कमाल हैं कोई अक़ीदा मेरा अल्लाह और उस के रसूल के विरुद्ध नहीं और जो कोई इस प्रकार विचार करता है उस की ग़लत फहमी है और जो आदमी मुझे अब भी काफिर समझता है और काफिर कहने से नहीं रुकता वे अवश्य याद रखे कि मरने के बाद उस से पूछा जाएगा। मैं अल्लाह तआला की क़सम खा कर कहता हूं मेरा ख़ुदा और रसूल पर वह विश्वास है कि अगर ज़माना के सारे इमानों को तराज़ू के एक पल्ले में रखा जाए और मेरा ईमान दूसरे पल्ले में तो अल्लाह के फज़ल से यही पल्ला भारी होगा।”

(लैक्चर लुधियाना रूहानी खज़ायन भाग 20 पृष्ठ 260)

### मैं ख़ुदा तआला की कसम खा कर कहता हूं कि मैं और मेरी जमाअत मुसलमान है।

“मैं सच कहता हूं और ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि मैं और मेरी जमाअत मुसलमान है। और वह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और पवित्र क़ुर्आन पर उसी प्रकार ईमान लाती है जिस प्रकार से एक सच्चे मुसलमान को लाना चाहिए। मैं एक कण भर भी इस्लाम से बाहर क़दम रखना मौत का कारण विश्वास करता हूं और मेरा यही मत है कि कोई व्यक्ति जितने लाभ और बरकतें प्राप्त कर सकता है और जितना ख़ुदा का सानिध्य पा सकता है वह केवल और केवल आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे आज्ञापालन तथा पूर्ण प्रेम से पा सकता है अन्यथा नहीं। आपके अतिरिक्त अब नेकी का कोई मार्ग नहीं।

(लैक्चर लुधियाना रूहानी खज़ायन भाग 20 पृष्ठ 260)

### इमामुज़्ज़मान मैं हूँ मुझ में ख़ुदा तआला ने वे समस्त लक्षण और शर्तें रख दी हैं और इस सदी के सिर पर मुझे पैदा किया है मैं रूहानी रूप से सलीब को तोड़ने के लिए और मतभेदों को दूर करने के लिए भेजा गया हूं।

“इस ज़माना में इमामुज़्ज़मान कौन है जिसके पीछे चलना समस्त मुसलमानों, ज़ाहिदों, स्वप्न देखने वालों और इल्हाम (ईशवाणी) पाने वालों पर ख़ुदा तआला की ओर से अनिवार्य किया गया है। अत: मैं इस समय बेधड़क कहता हूँ कि ख़ुदा तआला की कृपा और मेहरबानी से वह -

इमामुज़्ज़मान मैं हूँ मुझ में ख़ुदा तआला ने वे समस्त लक्षण और शर्तें रख दी हैं और इस सदी के सर पर मुझे पैदा किया है जिसमें पन्द्रह वर्ष बीत भी गए और ऐसे समय में मैं प्रकट हुआ हूँ कि जब इस्लामी अक़ीदे मतभेदों से भर गए थे और कोई अक़ीदा मतभेद से खाली न था। इसी तरह मसीह के नुज़ूल (अवतरण) के बारे में अत्यन्त गलत विचार फैल गए थे। उस अक़ीदे में भी मतभेद का यह हाल था कि कोई हज़रत ईसा के जीवित रहने का क़ाइल था और कोई मौत का, कोई जिस्मानी नुज़ूल (अवतरण) मानता था और कोई प्रतिरूपी नुज़ूल पर विश्वास रखता था, कोई दमिश्क में उनको उतार रहा था और कोई मक्का में, कोई बैतुल-मुक़द्दस में, कोई इस्लामी फ़ौज में, और कोई सोचता था कि हिन्दुस्तान में उतरेंगे । अत: ये विभिन्न विचार और बातें एक न्याय करने वाले हकम् (न्यायक) को चाहते थे। अत एव वह हकम् (न्यायक) मैं हूँ । मैं रूहानी तौर पर सलीबी विचारधारा को तोड़ने के लिए और मतभेदों को दूर करने के लिए भेजा गया हूँ। इन्हीं दोनों बातों ने तक़ाज़ा किया कि मैं भेजा जाऊँ । मेरे लिए ज़रूरी नहीं था कि मैं अपनी सच्चाई की कोई दूसरी दलील (तर्क) प्रस्तुत करूँ क्योंकि ज़रूरत ख़ुद दलील है। लेकिन फिर भी मेरे समर्थन में ख़ुदा तआला ने कई निशान प्रकट किए हैं और जैसा कि मैं दूसरे मतभेदों में फैसला करने के लिए हकम् (न्यायक) हूँ उसी तरह मौत और ज़िन्दगी के मतभेद के झगड़े में भी मैं हकम् (न्यायक) हूँ। और मैं इमाम मालिक और इब्नि हज़म् और मुअतज़्ल: के कथन को मसीह की मौत के बारे में सही ठहराता हूँ और दूसरे अहले-सुन्नत को ग़लती खाने वाला समझता हूँ। इसलिए मैं हकम् (न्यायक) होने की हैसियत से उन झगड़ा करने वालों में यह आदेश जारी करता हूँ कि नुज़ूल (अवतरण) के संक्षिप्त अर्थों में यह गिरोह अहले-सुन्नत का सच्चा है क्योंकि मसीह का प्रतिरूपी तौर पर नुज़ूल (अवतरण) होना ज़रूरी था। हाँ नुज़ूल की दशा बयान करने में इन लोगों ने ग़लती खायी है। नुज़ूल प्रतिरूपी विशेषता थी न कि मूलरूप से असल। और मसीह की मौत के बारे में मुअतज़्ल: और इमाम मालिक और इब्नि हज़म् इत्यादि और उनकी जैसी विचारधारा रखने वाले सच्चे हैं। क्योंकि क़ुरआन शरीफ़ की सुस्पष्ट आयत (फ़लम्मा तवफ़्फ़ैतनी) के अनुसार मसीह का ईसाइयों के बिगड़ने से पहले मृत्यु पाना ज़रूरी था । यह मेरी तरफ़ से बतौर हकम् (न्यायक) फ़ैसला है। अब जो व्यक्ति मेरे फैसले को स्वीकार नहीं करता वह उसको नहीं मानता जिसने मुझे हकम् बनाया है। अगर यह सवाल किया जाए कि तुम्हारे हकम् (न्यायक) होने का सुबूत क्या है? इसका यह उत्तर है कि जिस ज़माना के लिए हकम् (न्यायक) आना चाहिए था वह ज़माना मौजूद है और जिस क़ौम की सलीबी ग़ल्तियों का हकम् (न्यायक) ने सुधार करना था वह कौम मौजूद है और जो निशान उस हकम् (न्यायक) की सच्चाई पर प्रकट होने थे वे निशान प्रकट हो चुके हैं तथा अब भी निशानों का सिलसिला जारी है। आसमान निशान दिखला रहा है। धरती निशान प्रकट कर रही है। उन्हें

मुबारक हो जिनकी आँखें अब बन्द न रहें ।

मैं यह नहीं कहता कि पहले निशानों पर ही ईमान लाओ। बल्कि मैं कहता हूँ कि अगर मैं हकम् (न्यायक) नहीं हूँ तो मेरे निशानों का मुक़ाबला करो। मेरे सामने जो अक़ीदों के मतभेद के समय आया हूँ, दूसरी सब बहसें व्यर्थ हैं। सिर्फ हकम् (न्यायक) की बहस में हर एक का अधिकार है जिसको मैं पूरा कर चुका हूँ। ख़ुदा ने मुझे चार निशान दिए हैं :-

1. मैं क़ुरआन शरीफ़ के चमत्कार के नमूने के तौर पर अरबी भाषा के सरल, सुस्पष्ट, बोधगम्य और अलंकृत एवं प्रभावी रंग में बयान करने का निशान दिया गया हूँ। कोई नहीं कि जो इसका मुक़ाबला कर सके ।

2. मैं क़ुरआन शरीफ़ के सच्चे और यथार्थ ज्ञान बयान करने का निशान दिया गया हूँ, कोई नहीं कि जो इसका मुक़ाबला कर सके ।

3. मैं अधिकता के साथ दुआओं के क़ुबूल होने का निशान दिया गया हूँ कोई नहीं कि जो इसका मुक़ाबला कर सके। मैं शपथ खाकर कह सकता हूँ कि मेरी दुआएँ तीस हज़ार के लगभग क़ुबूल हो चुकी हैं और उनका मेरे पास सुबुत है।

4. मैं ख़ुदा की ओर से ख़बरें पाने का निशान दिया गया हूँ कोई नहीं कि जो इसका मुक़ाबला कर सके ।

ये ख़ुदा तआला की गवाहियाँ मेरे पास हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियाँ मेरे प्रति चमकते हुए निशानों की तरह पूरी हुईं।

(ज़रूरतुल इमाम रूहानी खज़ायन भाग 13 पृष्ठ 495)

## हम ने मैदान फत्ह कर लिया क्या सारी धरती में कोई पादरी है जो निशान दिखाने में मेरा मकाबला कर सके।

"बराहीन अहमदिया पृष्ठ 522 में यह भविष्यवाणी है -

بخرام کہ وقت تو نزدیک رسید وبائے محمدیان برمنار بلند تر محکم افتاد

उस युग पर पच्चीस वर्ष से भी अधिक हो गए जब यह भविष्यवाणी प्रतापी ख़ुदा की बराहीन अहमदिया में प्रकाशित हुई थी। जिस का अभिप्राय यह था कि तेरे उत्थान के दिन आने वाले हैं जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के धर्म की प्रतिष्ठा और सम्मान में वृद्धि करेंगे और उस युग में जैसा कि सब लोग जानते हैं मैं एक अज्ञात कोने में छुपा हुआ और गुप्त था और मेरे साथ एक भी व्यक्ति न था और न किसी को आशा थी कि मुझे यह पद मिलेगा अपितु मैं स्वयं इस भावी वैभव और प्रतिष्ठा से अज्ञान था और सत्य तो यह है कि मैं कुछ भी न था। बाद में ख़ुदा ने मात्र अपनी कृपा से न कि मेरी किसी कला से मुझे चुन लिया, मैं गुमनाम था मुझे प्रसिद्धि दी और इतनी शीघ्रता से प्रसिद्धि दी कि जैसे बिजली एक ओर से दूसरी ओर अपनी चमक प्रकट कर देती है और मैं नादान था मुझे अपनी ओर से ज्ञान दिया और मैं कोई आर्थिक विशालता नहीं रखता था। उसने कई लाख रुपए की मुझे सफलताएं दीं और मैं अकेला था उसने कई लाख लोगों को मेरे अधीन कर दिया तथा पृथ्वी-आकाश दोनों में से मेरे लिए निशान प्रकट किए। मैं नहीं जानता कि उसने मेरे लिए यह क्यों किया क्योंकि मैं अपने अन्दर स्वयं में कोई विशेषता नहीं पाता और मैं शैख़ सा'दी रहमहुल्लाह के इस शे'र को ख़ुदा के दरबार में पढ़ना अपने यथायोग्य पाता हूँ।

پسندید گانے بجائے رسند زمام کہ ترانت چہ آمد پسند

मेरे ख़ुदा ने प्रत्येक पहलू से मेरी सहायता की प्रत्येक जो शत्रुता के लिए उठा उसे नीचे गिराया। प्रत्येक ने जो दण्ड दिलाने के लिए अदालतों में मुझे खींचा, उन सब मुक़द्दमों में मेरे स्वामी ख़ुदा ने मुझे विजय प्रदान की, प्रत्येक ने जो मुझ पर बद-दुआ की, मेरे स्वामी ने वह बद-दुआ उसी पर डाल दी जैसा कि दुर्भाग्यशाली लेखराम ने अपनी झूठी प्रसन्नताओं पर भरोसा करके मेरे बारे में प्रकाशित किया था कि वह तीन वर्ष के अन्दर अपने समस्त पुत्रों सहित मर जाएगा। अन्तत: परिणाम यह हुआ कि स्वयं ही मेरी भविष्यवाणी के अनुसार नि:संतान मर गया और संसार में उसका कोई वंश न रहा। इसी प्रकार अब्दुल हक़ ग़ज़नवी उठा और उसने मुबाहला करके अपनी बद-दुआओं से मेरा समूल विनाश चाहा। अत: प्रत्येक दृष्टि से मुझे जितनी उन्नति हुई उस के मुबाहले के बाद हुई। कई लाख लोग अधीन हो गए, कई लाख रुपया आया। लगभग समस्त विश्व में सम्मापूर्वक मेरी ख्याति हो गई, यहां तक कि दूसरे देशों के लोग मेरी जमाअत में सम्मिलित हुए और कई लड़के बाद में पैदा हुए किन्तु अब्दुल हक़ की नस्ल कट गई जो मरने के आदेश में है और एक कण के बराबर ख़ुदा तआला की ओर से उसे बरकत न मिली और न बाद में उसने कोई सम्मान पाया और

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ

का पूरा चरितार्थ हो गया। फिर मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर क़सूरी उठा और उसे शौक हुआ कि मुहम्मद ताहिर की भांति मुझ पर बद-दुआ करके जाति में सम्मान प्राप्त करे अर्थात् जिस प्रकार मुहम्मद ताहिर ने एक झूठे मसीह और झूठे महदी पर बद-दुआ की थी और वह तबाह हो गया था उसी प्रकार अपनी बद-दुआ से मुझे तबाह करे किन्तु उस बद-दुआ के पश्चात् वह स्वयं ही इतनी शीघ्रता से मृत्यु का शिकार हुआ जिसका उदाहरण नीं पाया जाता। कोई मौलवी उत्तर नहीं देता कि यह क्या रहस्य है कि मुहम्मद ताहिर ने तो अपने युग के झूठे मसीह पर बद-दुआ करके उसे तबाह कर दिया और ग़ुलाम दस्तगीर अपने युग के मसीह पर बद-दुआ करके स्वयं ही संसार से कूच कर गया। यह तो आन्तरिक ख़ुदाई सहायता है बाह्य तौर पर ख़ुदा तआला ने मुझे वह रोब एवं दबदबा प्रदान किया है कि मेरे मुकाबले पर कोई पादरी नहीं आ सकता। या तो वह समय था कि वे लोग बाज़ारों में चिल्ला-चिल्ला कर कहते थे कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से कोई चमत्कार नहीं हुआ तथा पवित्र क़ुर्आन में कोई भविष्यवाणी नहीं और या ख़ुदा तआला ने उन पर ऐसा रोब डाला कि इस ओर मुख नहीं करते जैसे वे सब इस संसार से कूच कर गए। मुझे क़सम है उस हस्ती की कि जिसके हाथ में मेरे प्राण है कि यदि कोई पादरी इस मुकाबले के लिए मेरी और मुख करे तो ख़ुदा उसे बहुत अपमानित करेगा और उस अज़ाब में ग्रस्त करेगा जिसका उदाहरण नहीं होगा और उसे शक्ति नहीं होगी कि जो कुछ मैं दिखाता हूँ वह अपने काल्पनिक ख़ुदा की शक्ति और बल से दिखा सके। ख़ुदा मेरे लिए आकाश से भी निशानों की वर्षा करेगा और पृथ्वी से भी। मैं सच-सच कहता हूँ कि यह बरकत अन्य जातियों को नहीं दी गई। अत: क्या सम्पूर्ण संसार में पूरब से लेकर पश्चिम तक कोई पादरी है जो मेरे मुकाबले पर ख़ुदा के निशान दिखा सके। हमने मैदान जीत लिया है किसी में शक्ति नहीं जो हमारे मुकाबले पर आए। अत: यह वही बात है जो ख़ुदा तआला ने आज से पच्चीस वर्ष पूर्व बतौर भविष्यवाणी कही है

بخرام کہ وقتِ تو نزدیک رسید وبائے محدیان برمنار بلند تر محکم اوفتاد

ख़ुदा की क़सम कि हम मुहम्मदी आज बुलन्द मीनार पर हैं और प्रत्येक व्यक्ति हमारे पैरों के नीचे है।

(हकीकतुल वह्यी रूहानी खज़ायन भाग 22 पृष्ठ 347)

☆ ☆ ☆

# कलाम

## हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

## सिदक मसीह मौऊद (अ)

**कलाम हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व मेहदी मा'हूद अलैहिस्सलाम**

इक ज़माना था कि मेरा नाम भी मस्तूर था
कादियाँ भी थी निहाँ ऐसी कि गोया ज़ेरेग़ार
कोई भी वाकिफ़ न था मुझ से न मेरा मुअतकिद
लेकिन अब देखो कि चर चाकि सकदर है हरकिनार
उस ज़माने में ख़ुदा ने दी थी शोहरत की ख़बर
जो कि अब पूरी हुई बाद अज़ मरुरे रोज़गार
खोल कर देखो बराहीं जो कि है मेरी किताब
उस में है यह पेशगोई पढ़ लो उस को एक बार
अब ज़रा सोचो कि क्या यह आदमी का काम है
इसकदर अमरे-निहाँ पर किस बशर को इकतदार है
पाक दिल पर बद गुमानी है ये शक्वत का निशाँ
अब तो आँखें बन्द हैं देखेंगे फिर अन्जाम कार
जबकि कहते हैं कि काज़िब फूलते फलते नहीं
फिर मुझे कहते हैं काज़िब देख कर मेरे समार
क्या तुम्हारी आँख सब कुछ देख कर अन्धी हुई
कुछ तो उस दिन से डरो यारो के है रोज़े शुमार
आँख रखते हो ज़रा सोचो कि ये क्या राज़ है ?
किसतरह मुमकिन के वो कुद्दूस हो काज़िब का यार
इफतरा लअनत है और हर मुफतरी मलऊन है
फिर लईं वह भी है जो सादिक से रखता है नकार
तिशना बैठे हो किनारे जूए शीरीं हैफ है
सर ज़मीने हिन्द में चलती है नहरे ख़ुशगुवार
इन निशानों को ज़रा सोचो कि किस के काम हैं
क्या ज़रूरत है कि दिखलाओ ग़ज़ब दीवाना वार
मुफ़त में मुल्ज़िम ख़ुदा के मत बनो ऐ मुन्किरो
ये ख़ुदा का है न है ये मुफतरी का कारोबार
ये फतोहाते नुमायाँ ये तवातुर से निशाँ
क्या ये मुमकिन हैं बशर से क्या ये मक्कारों का कार
ऐसी सुरअत से ये शुहरत नागिहाँ सालों के बाद
क्या नहीं साबित ये करती सिदके कौले किरदिगार
कुछ ते सोचो होश करके क्या ये मामूली है बात
जिस का चर्चा कर रहा है हर बशर और हर दियार
मिट गए हीले तुम्हारे हो गई हुज्जत तमाम
अब कहो किस पर हुई ऐ मुनकिरो लानत की मार
बन्दाए दरगाह हूँ बन्दगी से काम है
कुछ नहीं है फतह से मतलब न दिल में खौफे हार
मत करो बक बक बहुत, उसकी दिलों पर है नज़र
देखता है पाकिये दिल को न बातों की संवार
कैसे पत्थर पड़ गए है है तुम्हारी अक्ल पर
दीं है मुँह में गुर्ग के, तुम गुर्ग के ख़ुद पासदार

(दुर्रे समीन)

## हक के प्यासों के लिए आबे बक़ा हो जाओ

**हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह तआला अन्हो**

अहदे शिक्नी न करो अहले वफा हो जाओ
अहले शैतां न बनो अहले वफा हो जाओ।।
गिरते पड़ते दरे मौला पे रसा हो जाओ
और परवाने की मान्निद फिदा हो जाओ।।
जो हैं ख़ालिक से ख़फा उन से ख़फा हो जाओ
जो हैं उस दर से जुदा उन से जुदा हो जाओ।।
हक के प्यासों के लिए आबे बक़ा हो जाओ
ख़ुश्क खेतों के लिए काली घटा हो जाओ।।
गुंचए दीं के लिए बादे सबा हो जाओ
कुफ्र व बिदअत के लिए दस्ते कज़ा हो जाओ।।
सर ख़रू रोबरूए दावरे महशर हो जाओ
काश तुम हश्र के दिन अहद बर हो जाओ।।
बादशाही कि तमन्ना न करो हरगिज़ तुम
कुचाए यारे यगाना के गदा हो जाओ।।
वस्ले मौला के जो भूखे हैं उन्हें सैर करो
वह करो काम कि तुम ख़वाने हुदा हो जाओ।।
पंबए मरहमे काफूर हो तुम ज़ख्मों पर
दिले बीमार के दरमां व दवा हो जाओ।।
तालेबाने रुख़े जानां को दिखाओ दिलबर
आशिकों के लिए तुम किबलः नुमा हो जाओ।।
अमरे मारूफ को तावीज़ बनाओ तुम जां का
बेकसों के लिए तुम अक्दा कुशा हो जाओ।।
दमे ईसा से भी बढ़ कर हो दुआओं में असर
यदे बैज़ा बनो मूसा का असा हो जाओ।।
राहे मौला में जो मरते हैं वही जीते हैं
मौत के आने से पहले ही फना हो जाओ।।
मौरदे फज़लो करम वारिसे ईमानो हुदा
आशिक अहमद व महबूब ख़ुदा हो जाओ।।

☆ ☆ ☆
☆ ☆
☆

# हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की संक्षिप्त जीवनी

## (फलाहुद्दीन क़मर, मुरब्बी सिलसिला, कादियान)

प्यारे आक़ा सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो वसल्लम ने यह भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि मुसलमानों पर एक ऐसा ज़माना भी आएगा जबकि ईमान सुरैया सितारे पर चला जाएगा अर्थात ज़मीन ईमान से ख़ाली हो जाएगी। उम्मत 72 संप्रदायों में बट जाएगी। प्रत्येक प्रकार की ख़राबी उसमें पैदा हो जाएगी और उल्मा की अवस्था इस कदर गिर जाएगी कि वे लोगों की हिदायत की बजाय उन की गुमराही, उनमें फित्ना व फसाद पैदा करने और उनके मध्य कत्ल तथा उपद्रव का कारण होंगे परंतु इसके साथ ही आपने उम्मत को यह ख़ुशख़बरी भी प्रदान फरमाई के उसके बहार के दिन भी लौट कर अवश्य आएंगे। वह ज़माना इमाम महदी और मसीह मौऊद का ज़माना होगा जब ईमान धरती पर दोबारा स्थापित किया जाएगा। अत: आप ने फरमाया

كَيْفَ أَنْتُمْ إِذَا نَزَلَ ابْنُ مَرْيَمَ فِيكُمْ وَإِمَامُكُمْ مِنْكُمْ

(बुख़ारी किताबुल इंबिया बाब नज़ूले ईसा बिन मर्यम जिल्द 2 पृष्ठ 336)

हज़रत अबू हुरैरा वर्णन करते हैं आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया तुम्हारी क्या अवस्था होगी जब इब्ने मरियम तुम में अवतरित होंगे और वे तुम्हारे इमाम होंगे तुम में से होंगे। सभी फिर्कों का यह कहना है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह भविष्यवाणी अभी पूरी नहीं हुई है जबकि जमाअत अहमदिया पूर्ण विश्वास रखती है कि हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब कादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वजूद में यह भविष्यवाणी पूरी हो चुकी है।

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने इस युग का इमाम तथा मसीह मौऊद बना कर भेजा है। सैंकड़ों सालों के सूखे के बाद किसी नबी ने अपना चेहरा दिखाया। परन्तु अफसोस बन्दों पर जब भी उन के पास कोई अल्लाह तआला का रसूल आया उन्होंने उस से उपहास किया।

हमारे विरोधी, दुनिया की मुख़ालफत को, हंसी और उपहास को हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी अलैहिस्सालम के झूठा ठहराने की निशान ठहराते हैं। परन्तु ख़ुदा तआला इसे आप की सच्चाई का निशान ठहराता है अल्लाह तआला ने सच्चे नबी की निशानी यह बताई है कि वे अपने मिश्न में ज़रूर सफल होते हैं और पूरी दुनिया का विरोध उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकती है।

كَتَبَ اللّٰهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِي ۚ إِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ

(अल्मुजादिल: 21)

अर्थात अल्लाह ने यह लिख छोड़ा है कि वह और उसके रसूल अवश्य विजय प्राप्त करेंगे और अवश्य अल्लाह बहुत विजय वाला और प्रभुत्तव वाला है।

इस निबंध में दो पुस्तकों "सिलसिला अहमदिया भाग 1 लेखक साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि अल्लाह तआला अन्हो" और "सवानेह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम लेखक मौलाना दोस्त मोहम्मद शाहिद" से सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की जीवनी बहुत संक्षेप के साथ प्रस्तुत की जाती है।

### पारिवारिक स्थिति

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ईरानी कबीला बरलास के चश्मो चिराग़ थे। आप का परिवार एक शाही परिवार था। आप के वंश के आदि पुरुष मिर्ज़ा हादी बेग साहिब थे। जो कि 1530 ई में अपने परिवार के साथ कुश से पंजाब में आए और कादियान में आदर्श राज्य की स्थापना की जो 1802 ई तक चली जिस पर अंतत: आप के दादा मिर्ज़ा अता मुहम्मद साहिब के समय सिख काबिज़ हो गए और आपके ख़ानदान को कपूरथला राज्य में शरणार्थी होना पड़ा, जो महाराजा रणजीत सिंह के ज़माना में फिर कादियान आ गया और आप के पिता जी ग़ुलाम मुर्तज़ा साहिब को पांच गांव वापस मिल गए।

### जन्म

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम हज़रत चिराग़ बीबी साहिबा के गर्भ से 14 शव्वाल 1250 हिज्री अर्थात 13 फरवरी 1835 ई को फज्र के समय कादियान में जुड़वां पैदा हुए। हज़रत मसीह नासरी की तरह आप का जन्म भी आश्चर्य का रंग रखता था क्योंकि आप मुह्युद्दीन इब्ने अरबी के कथन के अनुसार जुड़वां पैदा हुए।

### पवित्र बचपन, शिक्षा और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दर्शन

आप फरमाते हैं कि आरम्भ से ही अल्लाह का घर अर्थात मस्जिद मेरा मकान, सालेहीन मेरे भाई, ज़िक्रे इलाही मेरी दौलत और मानव जाति मेरा ख़ानदान रहा है। एक करामत वाले और वलीउल्लाह मौलवी ग़ुलाम रसूल साहिब ने आप को बचपन में देखा तो सहज कहा कि "अगर इस समय कोई नबी होता तो यह लड़का नबुव्वत के लायक है।"

6-7 साल की उम्र में आप ने क़ादियाना में एक हनफ़ी बुजुर्ग फज़्ल इलाही साहिब से कुरआन सीखा और कुछ फारसी की किताबें पढ़ीं। लगभग 10 साल के हुए तो एक अहले हदीस आलिम मौलवी फज़्ल अहमद साहिब ने बहुत ध्यान और मेहनत से केवल कुछ किताबें और कुछ सर्फ तथा नहू पढ़ाए। 17-18 साल में बटाला के एक शीया विद्वान मौलवी गुल अली शाह साहिब से आप ने नहू, तर्क और हिक्मत आदि की प्रचलित पुस्तकें पढ़ीं और चिकित्सा की किताबें अपने पिता जी से पढ़ीं। छात्र अवस्था में आप को पहली बार हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ियारत हुई। आपने देखा कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कुर्सी ऊंची हो गई है। यहां तक कि छत के क़रीब जा पहुंची है और आपका चेहरा मुबारक ऐसा चमकने लगा कि मानो उस पर सूर्य और चंद्रमा की किरणें पड़ रही हैं।

### सियालकोट में इस्लाम की तब्लीग़

1864 ई से 1867 ई तक, आपने सियालकोट में रोज़गार के लिए निवास किया। आप का अधिकांश समय कुरआन की तिलावत, इबादत करने, इस्लाम की और मानव जाति की सेवा में व्यतीत होता। ईसाइयों ने पंजाब को और पंजाब में विशेष रूप से सियालकोट को ईसाइयत के फैलाने के लिए भारी केंद्र बना रखा था। हज़रत अक़दस ने यहां इस्लाम का प्रचार और ईसाइयत के रद्द का बड़ा मोर्चा खोल दिया और विशेष रूप से स्काच मिशन के बड़े नामी पादरी बटलर से आप के बड़े-बड़े मुकाबले हुए।

### मुनाज़रा से हटना और आसमानी बिशारत

सियालकोट से लौटने के बाद, आप फिर से कादियान आए और धर्म की सेवा की गतिविधियों को जारी रखा। 1868 ई में जबकि आप बटाला में मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी से केवल अल्लाह तआला के लिए

मुनाज़रा करने से मना कर दिया और हनफियों के संघर्ष के बावजूद कुरआन की बातें रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कथन से बढ़ कर होने की घोषणा कर दी तो ख़ुदा तआला ने इस बात पर ख़ुश ख़बरी व्यक्त की और आप को ख़बर दी तेरा ख़ुदा तेरे इस कर्म से राज़ी हुआ और तुझे बहुत बरकत देगा। यहाँ तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत तलाश करेंगे।

**कलमी जिहाद**

1872 ई में आपने इस्लाम के समर्थन में क़लम के जिहाद को शुरू किया और अख़बार मन्शूरे मुहम्मदी आफ बंगलौर और अन्य मुस्लिम प्रेस में लेख लिखने का काम शुरू किया। लगभग 1873 ई में आप ने शायरी को इस्लाम के प्रकाशन का माध्यम बनाया। आप पहले फरुख़ उपनाम रखते थे।

**रौज़े का महान मुजाहिद:**

1875 में आपने नौ महीने तक रोज़े का महान मुजाहद: किया। जिस में आप को आध्यात्मिक सैर कराई गई और पिछले नबियों और सालेहीन से और हज़रत अली रज़ि अल्लाह और हज़रत फातिमा रज़ि और हज़रत हसन,हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहो अन्हुम के अलावा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जागरूकता की स्थिति में दर्शन हुआ।

**पिता की मौत के बाद बहुत अधिक वह्य का आरम्भ**

2 जून सन् 1872 ई में आप के पिता हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा साहिब का निधन हुआ और साथ ही बड़े जोर-शोर से आप पर मुकालमात और मख़ातबात आरम्भ हो गए। इस के बाद आप पूरी तरह धर्म की सेवा में व्यस्त हो गए और विशेष रूप से आर्या समाज के हमलों का उत्तर दिया। जिस में इस्लाम को विजय प्राप्त हुई।

**बराहीन अहमदिया का प्रकाशन**

1880 ई के बाद से 1884 ई तक आप के क़लम मुबारक से बराहीन अहमदिया जैसी महान पुस्तक लिख कर सामने आई जिस पर उपमहाद्वीप भारत में ज़बरदस्त तहलका मच गया और हिंदुस्तान के मुसलमान जो अन्य धर्मों के भयानक हमलों से निढाल हो गए थे, इस्लाम को बराहीने अहमदिया जैसे तर्कों से एक नया जीवन और नई शक्ति महसूस प्राप्त होने लगी और मुसलमान उलेमा और फुज़ला जैसे अबू सईद मुहम्मद हुसैन बटालवी अहले हदीस, हजरत सूफी अहमद जान साहिब लुधियानवी, मौलाना मुहम्मद शरीफ साहिब बेंगलुरु ने इस किताब को एक बेनज़ीर शाहकार स्वीकार किया।

**दावा मामूरियत और निशान दिखाने का विश्वव्यापी आमन्त्रण**

मार्च 1882 ई में आप को मामूरियत से सम्मानित किया गया। जिस के बाद 1884 ई और 1885 में आप ने सारी दुनिया के ग़ैर मुस्लिम नेताओं और रास्ता दिखाने वालों को निशान दिखाने की विश्वव्यापी दावत दी और इस सिलसिले में बीस हज़ार उर्दू और अंग्रेज़ी विज्ञापन रजिस्ट्री कर के भिजवाए परन्तु

आज़मायश के लिए कोई न आया हर चन्द
हर मुख़ालिफ को मुकाबिल पे बुलाया हम ने

**मुबारक ख़ानदान की बुनियाद और पेशगोई मुस्लेह मौऊद**

नवम्बर1884 ई में दिल्ली के सूफी हज़रत ख्वाजा मीर दर्द के पोते हज़रत मीर नासिर नवाब साहिब की बेटी हज़रत सय्यदा नुसरत जहां बेगम साहिबा आप के निकाह में आईं। इस तरह ख़ुदा तआला ने सारी दुनिया की सहायता के लिए एक मुबारक ख़ानदान की नींव रखी। 1886 ई में अल्लाह तआला के आदेश से आप ने होशियारपुर में चिल्ला किया। जिसके परिणाम में आपको अपने श्रद्धालुओं और अपने परिवार के बारे में भारी बिशारतें मिलीं इसी तरह मुस्लेह मौऊद जैसे बेटे की ख़बर दी गई। जो 12 जनवरी 1889 ई को सय्यदना महमूद अल-मुसलेह अल-मौऊद के नूरानी अस्तित्व के जन्म से पूरी हुई।

**सितारों का गिरना**

1885 ई के अंत में अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के समर्थन में एक अजीब निशान दिखाया अर्थात 27 और 28 नवम्बर 1885 ई की रात सितारों के टूटने का अजीब नज़ारा प्रदर्शित हुआ। इस रात बहुत सारे सितारे टूटे मानो कि सितारों की आग की बारिश हो रही थी इस तरह सितारों का टूटना तस्वीरी भाषा में इस बात का प्रतीक था कि अब दुनिया की शैतानी सेनाओं पर रहमानी सेनाओं के हमले का समय आ गया है और आकाश की शक्तियां असामान्य गतिविधि में हैं।

**लुधियाना में बैअत का समारोह**

23 मार्च 1889 ई का मुबारक दिन हमेशा तारीख अहमदियत में प्रतिष्ठित रहेगा क्योंकि उस दिन हज़रत सूफी अहमद जान साहिब लुधियानवी के मकान मुहल्ला जदीद में पहली बार बैअत का समारोह हुआ और 40 लोगों ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुबारक हाथ पर बैअत की और धर्म को दुनिया पर प्राथमिकता देने का वादा किया। सब से पहले बैअत करने का श्रेय मौलाना हकीम नूरुद्दीन साहिब भैरवी (ख़लीफतुल मसीह अव्वल) को मिला।

**दावा मसीहियत**

1890 ई के अंत में आप ने दावा किया कि "मसीह इब्ने मर्यम रसूलुल्लाह फौत हो चुका है और उसके रंग में होकर वादा के अनुसार तू आया है।" इस पर 1891 ई में आपने "फत्ह इस्लाम" तौज़ीह मराम" और "इज़ाला औहाम" किताबें प्रकाशित करके समय के उलमा पर इतमामे हुज्जत की। इसके अलावा लुधियाना में मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी और दिल्ली में मौलवी बशीर अहमद साहिब भोपालवी से मुबाहले किए।

**दावा महदियत**

आप ने यह भी दावा किया कि इस्लाम में जिस महदी का मसीह के ज़माने में वादा किया गया था वह मैं हूं मगर मैं किसी जंग के मिशन के साथ भेजा नहीं गया बल्कि मेरा काम शांति के तरीके पर है। आप ने मुसलमानों के विचार को कि ख़ूनी महदी आएगा ग़लत और निराधार साबित किया। आप ने कहा कि मसीह और महदी दरअसल अलग अस्तित्व नहीं हैं बल्कि एक ही व्यक्ति के दो अलग नाम हैं यानी मसीह के प्रतिरूप होने के लिहाज़ से आने वाले वुजूद का नाम मसीह है और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रतिरूप होने के लिहाज़ से उसका नाम महदी है जैसा कि एक हदीस में भी आता है कि मसीह मौऊद के सिवा और कोई महदी नहीं।

**पहला जलसा सालाना**

27 दिसंबर 1891 ई जमाअत अहमदिया का पहला जलसा सालाना नमाज़ ज़ुहर के बाद मस्जिद अक्सा कादियान में हुआ। जिस में हज़रत मौलाना अब्दुल करीम साहिब सियालकोट रज़ि अल्लाह ने हुज़ूर की लिखी किताब आसमानी फैसला पढ़कर सुनाई और जलसा समाप्त हुआ। इस पहले जलसा में केवल 75 लोग शामिल हुए है।

**महारानी विक्टोरिया को इस्लाम की दावत**

1893 ई में आप ने आइना कमालाते इस्लाम के नाम से एक मआरिफ़ से भरी किताब लिखी जिस में महारानी विक्टोरिया को इस्लाम स्वीकार करने के लिए दावत दी। जिस पर हज़रत ख्वाजा ग़ुलाम फरीद चाचड़ शरीफ जैसे अल्लाह वाले लोगों ने श्रद्धांजलि दी। जून 1897 में रानी की जयंती हुई इस समारोह में आप न केवल रानी को फिर दावते इस्लाम दी

बल्कि इंग्लैंड में एक सर्व धर्म जलसा का प्रस्ताव भी पेश फ़रमाया।

**तीन महत्त्वपूर्ण बातें**

1895 ई को यह विशेषता प्राप्त है कि इस साल आप ने अल्लाह तआला के समर्थन व नुसरत से तीन ऐसे ज्ञान वर्धक बातें वर्णन कीं जिन से इस्लाम की जीत के नकारे बजने लगे। अत: आप ने ज़बरदस्त तर्कों से साबित किया कि

(1) अरबी भाषा उम्मुल अलसिना (सभी भाषाओं की मां) है। (2) हज़रत मसीह की कब्र मुहल्ला ख़ानियार कशमीर में है (3)श्री गुरू नानक जी मुसलमान थे।

**अरबी भाषा में मुकाबला करने की दावत**

ख़ुदा तआला ने आप को इस्लाम की सेवा करने के लिए भेजा था। और आप को कुरआन के ज्ञान से मालामाल किया। आप अलैहिस्सालम ने 1893 ई में उल्मा को दावत दी कि वह आप से अरबी भाषा में कुरआन के ज्ञान तथा मआरिफ में मुकाबला कर लें आप ने यह भी एलान किया कि ख़ुदा तआला की तरफ से एक रात में आप को 40 हज़ार अरबी भाषा की धातुएं सिखाई गई हैं। ख़ुदा तआला ने आप को अरबी भाषा में इतना कमाल प्रदान किया है कि कोई आदमी आप का मुकाबला नहीं कर सका अपनी आयु के अन्त तक आप इस चैलन्ज को दुहराते रहे। मगर किसी को भी आप के अरबी भाषा के मुकाबला में किताबें लिखने का साहस न हुआ। आप की अरबी भाषा की कुल पुस्तकें 21 हैं।

**कसोफ और ख़सोफ का निशान**

1894 ई में अल्लाह तआला ने आपके समर्थन में एक भव्य निशान दिखाया और वह यह कि इस प्राचीन भविष्यवाणी के अनुसार जो महदी मौऊद के बारे में पहले से बयान की गई थी। 1894 ई अनुसार 1311 हिजरी के रमज़ान में ग्रहण लगा। इस ग्रहण को यह विशेषता थी कि उसके बारे में पहले से सटीक तिथियाँ बता दी गई थीं कि रमज़ान के महीने में अमुक अमुक तिथि में चंद्रमा और सूर्य को ग्रहण लगेगा तथा यह कि उस समय एक व्यक्ति मसीह का दावा करने वाला होगा जो अल्लाह की ओर से होगा। 1894 ई के रमज़ान में ठीक इसी तारीख़ों में इन्ही शर्तों के साथ ग्रहण दिखाई दिया। इस से पहले यह निशान कभी प्रकट नहीं हुआ।

**तहफ्फुज़ नामूसे रसालत के लिए संवैधानिक तहरीक**

1895 ई में आप ने आई,पी,सी की धारा 298 के विस्तार की मांग की और सुरक्षा नामूसे रसालत के लिए एक संवैधानिक तहरीक की जिसका मुसलमानों ने ज़बरदस्त स्वागत किया।

**जुम्अ: की छुट्टी की तहरीक**

पहली जून 1886 ई को आप ने वायसराय भारत के नाम विज्ञापन प्रकाशित किया कि मुसलमान कर्मचारियों को जुम्अ: की छुट्टी दी जाए कि यह पवित्र दिन इस्लामी आदर्श का रूप रखता है।

**सर्व धर्म सभा लाहौर**

दिसंबर 1896 ई के अंतिम सप्ताह में लाहौर में एक सर्व धर्म सभा आयोजित हुई जिस में आप ने इस्लाम की व्याख्या का हक़ अदा कर दिया आपने इस्लामी उसूल के सिद्धांत शीर्षक से एक ईमान वर्धक लेख लिखा जिसे हज़रत मौलाना अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी ने बहुत अच्छे रंग से वर्णन किया। आप ने समयपूर्व विज्ञापन के द्वारा पेशगोई फ़रमाई कि यह लेख विजयी रहेगा। अत: ऐसा ही हुआ और इस्लाम को आप के हाथों महान जीत नसीब हुई जिसे उर्दू और अंग्रेज़ी प्रेस ने भी स्वीकार किया।

**पेशगोई के अनुसार, पंडित लेखराम की मृत्यु**

पंडित लेखराम की सम्बन्ध आर्य समाज से था। इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक को गालियां दिया करता था। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पूछने पर उसने बड़ी बेबाकी और दुस्साहस से कहा कि आप जो चाहते हैं मेरे बारे में पेशगोई प्रकाशित कर दें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने छह वर्षों के अन्दर, उस के कत्ल की भविष्य वाणी प्रकाशित की। अत: 2 मार्च 1897 ई को यह प्रसिद्ध शातम रसूल लेखराम पेशावरी आपकी भविष्यवाणी के अनुसार "तेग़ बुर्राने मुहम्मद" से टुकड़े टुकड़े किया गया।

**ग़ैर अहमदियों के पीछे नमाज़ न पढ़ने और उन्हें अहमदी लड़कियां न देने के बारे में आदेश**

1898 ई में आप ने अल्लाह तआला के आदेश दो आदेश जारी फरमाए। प्रथम कि भविष्य में कोई अहमदी किसी ग़ैर अहमदी की इमामत में नमाज़ अदा न करे। इस आदेश की घोषणा अपने 1900 ई में की। दूसरा कि कोई अहमदी लड़की किसी ग़ैर अहमदी लड़के के साथ ब्याही न जाए।

**पंजाब में प्लेग का ज़ोर और जमाअत की असाधारण तरक्की**

प्लेग एक महामारी का रोग है इस के कीटाणु चूहों के द्वारा फैलते हैं और बीमारी प्रकृति के कानून अधीन होती है। अत: शुरूआत में जब प्लेग मुंबई में प्रकट हुई और अभी वह पंजाब में नहीं आई थी तो 1898 ई में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक ख़वाब देखा कि पंजाब में कुछ लोग काले रंग भयानक दृश्य वाले पौधे लगा रहे हैं और जब आप ने उनसे पूछा कि यह कैसे पौधे हैं उन्होंने कहा कि यह प्लेग के पेड़ हैं जो अब पंजाब में फैलने वाली है और आप को यह भी बताया गया कि इस बीमारी के फैलाने का आध्यात्मिक कारण लोगों का धर्म से विमुख होना है। इस प्लेग के माध्यम से अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वालों और न मानने वालों के मध्य में अन्तर कर दिया। वे लोग जो आप अलैहिस्सालम के "अद्दार" में शामिल हुए अल्लाह तआला ने उन्हें बचाया और वे लोगों के लिए निशान बने।

**एजाज़ुल मसीह और तोहफा गोलड़विया का लिखना और प्रकाशन**

28 अगस्त 1900 ई को हुज़ूर ने गोलड़ह शरीफ के प्रसिद्ध सज्जादा नशीन मेहर अली शाह साहिब को तफसीर लिखने की दावत दी। पीर साहिब तो यह निमंत्रण टाल गए लेकिन उन पर दोहरे रंग में इतमामे हुज्जत हुई। अत: एक तो एजाज़े मसीह के नाम से सूरे अल्फातिहा नाम से अरबी में इनाम वाली तफ्सीर प्रकाशित फ़रमाई और अरब व अजम के देशों में उसका ख़ूब प्रकाशन किया जिस में आप की सच्चाई के निर्विवाद दलीलें हैं। पीर मेहर अली आजीवन इस का जवाब देने में असमर्थ रहे ।

**ख़ुत्बा इल्हामिया**

1900 ई के आरम्भ में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर एक बहुत सूक्ष्म और ज्ञान वर्धक चमत्कार प्रकट हुआ। ईदुल अज़हिया के अवसर पर अल्लाह तआला ने आपको आदेश दिया कि तुम अरबी भाषा में ख़ुत्बा दो और हम तुम्हारी मदद करेंगे। बावजूद इसके कि आप ने इससे पहले अरबी में कोई भाषण नहीं दिया था, आप इस इलाही आदेश के पालन के लिए ख़ुत्बा के लिए खड़े हो गए और कुरबानी के मस्ला के ऊपर एक लंबा भाषण शुरू कर दिया है। यह भाषण ख़ुत्बा इल्हामिया के नाम से प्रकाशित हो चुका है।

**फिर्का अहमदिया नाम**

1901 ई में आधिकारिक तौर पर जनगणना होने वाली थी इसलिए आप ने 4 नवम्बर 1900 ई को विज्ञापन दिया क्योंकि आँ हज़रत सल्लल्लाहो

अलैहि वसल्लम का जमाली नाम अहमद था इस के अनुसार जमाअत का नाम अहमदिया जमाअत रखा जाता है ताकि उस नाम को सुनते ही हर व्यक्ति समझ ले कि यह संप्रदाय दुनिया में शांति फैलाने आया है।

**रिव्यू आफ रिलेजनज़ का शुभारंभ और अन्य समाचार पत्र और पत्रिकाएं**

1902 ई से आपके आदेश उर्दू और अंग्रेज़ी में पत्रिका रिव्यू आफ रिलेजनज़ जारी किया गया जिस से मग़रबी देशों में तब्लीग़ का नया दौर शुरू हुआ। इस पत्रिका ने धार्मिक क्रांति का माहौल बनाया।

**जमाअत अहमदिया का अद्भुत विकास**

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से ज्ञान पाकर समय पूर्व यह बता दिया था कि देश प्लेग की चपेट में आने वाला है और इस मुसीबत से अल्लाह तआला आप और आप की जमाअत को चमत्कार पूर्ण तरीके से सुरक्षित रखेगा। अत: 1902 ई में प्लेग ने हर तरफ एक क़यामत बरपा कर दी लेकिन जमाअत के श्रद्धालु और विशेषकर आपका "अद्दार" इसके हमले से पूरी तरह से सुरक्षित रहा अल्लाह तआला के इस चमत्कार को देख अनगिनत सईद रूहें आप पर ईमान ले आईं। "दाफेउल बलाय" और "कश्ती नूह" उस युग की यादगार पुस्तके हैं।

**हज़रत मसीह मौऊद की शिक्षा की सारांश**

जब 1902 ई में प्लेग का ज़ोर होने लगा तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी जमाअत को नसीहत फ़रमाई और लोगों को विनाश से बचाने के लिए एक किताब लिखकर प्रकाशित की जिसका नाम आप "कश्ती नूह" रखा। मानो इस तूफान तथा आपदा में यही किताब एक नूह की कश्ती थी जिसमें बैठकर लोग मौत से बच सकते थे। इस पुस्तक में आप ने अपनी शिक्षा का सारांश पेश किया और बताया कि आप अपनी जमाअत से किन मान्यताओं और किन कामों की उम्मीद रखते हैं।

**जमाअत के चन्दों का संगठन**

आप अलैहिस्सलाम की तरफ से कोई ऐसी तहरीक नहीं थी कि हर व्यक्ति ज़रूर नियमित माहवार चंदा दे। जमाअत के सभी प्रकार के खर्च उनके चन्दों से पूरे किए जाते थे जो जमाअत के दोस्त अपनी ख़ुशी से भिजवाया रहते थे लेकिन अब न केवल प्रत्येक मद के खर्च बढ़ गए थे और केवल अतिथि खर्च बहुत अधिक हो गया था इसलिए आप ने 1902 में एक विज्ञापन द्वारा जमाअत के नाम यह निर्देश जारी फ़रमाया कि आगामी हर अहमदी नियमित माहवारी चंदा दिया करे जिस में किसी रूप में देरी न हो। आप ने इस चंदा की कोई दर निर्धारित नहीं किया बल्कि राशि को हर व्यक्ति की ईमानदारी और परिस्थितियों पर छोड़ा लेकिन यह अनिवार्य बताया कि हर व्यक्ति अपने लिए एक राशि निर्धारित करके रिपोर्ट दे। यह वह मूल ईंट थी जिस पर सिलसिला के चन्दों और मुहासिल की इमारत खड़ी हुई है।

**एजाज़े अहमदी का लिखना**

8 नवम्बर से 12 नवम्बर 1902 ई अर्थात केवल चार दिन में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बहस अमृतसर के बारे में एक किताब लिखी जिस में एक एजाज़े अरबी क़सीदा भी लिखा और 15 नवम्बर को प्रकाशित और उसका नाम एजाज़े अहमदी रखा। जिसमें मौलवी सना उल्लाह अमृतसरी और अन्य विद्वानों को आमंत्रित किया कि अगर वह भी पांच दिनों में ऐसा अरबी क़सीदा इतने उर्दू लेख के साथ प्रकाशित करें तो बिना किसी देरी के उन्हें दस हज़ार रुपया दे दूंगा। लेकिन भविष्यवाणी भी की कि यह कभी भी संभव नहीं होगा। अल्लाह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की यह भविष्यवाणी पूरी हुई

**मुकदमों का नया युग**

1903 ई से 1905 ई तक आप को मुकदमों के एक नए युग को झेलना पड़ा जिसके शुरुआत में आपको झेलम यात्रा करनी पड़ी जिस में आप अल्लाह तआला ने जबरदस्त लोकप्रियता दी और हज़ारों लोग आप की जमाअत में शामिल हुए। झेलम मुकदमा में बरी हुए। लेकिन जल्द ही मौलवी करम दीन ने भी झेलम की अदालत में अभियोजन दायर कर दिया जो जून 1903 ई में स्थानांतरित होकर गुरदासपुर में एक पक्षपातपूर्ण आर्य चन्दूलाल की अदालत में आया। आर्य लोग जो कत्ल लेखराम के बाद आप के ख़ून के प्यासे थे, ने इस अवसर को बहुमूल्य समझा और चन्दूलाल से मिलकर आप को कैद कर की योजना बनाई मगर चन्दूलाल अल्लाह तआला की क्रोध की तजल्ली का शिकार हो गया और आप हाई कोर्ट में इज़्ज़त के साथ बरी हो गए। यह 7 जनवरी 1905 ई की घटना है।

**मिनारतुल मसीह की बुनियाद**

13 मार्च 1903 ई जुम्अ: के दिन आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि की भविष्यवाणी के अनुसार मिनारतुल मसीह का शिलान्यास रखा गया। जिस की पूर्णता ख़िलफत सानिया के ज़माना में हुई।

**तालीमुल इस्लाम कॉलेज का उद्घाटन**

18 मई 1903 ई को कादियानी में तालीमुल इस्लाम कॉलेज का उद्घाटन हुआ। इस समारोह में हुज़ूर अनवर बीमारी के कारण आप पधार न सके लेकिन बैयतुद्दुआ में कॉलेज के लिए बहुत दुआ की जिसकी स्वीकृति पर तालीमुल इस्लाम कॉलेज एक जीवित और सन्निहित बुरहान बन गया।

**तीन सौ साल में अहमदियत के विजय की भविष्यवाणी**

14 जुलाई 1903 ई को हज़रत साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ साहिब काबुल में शहीद कर दिए गए जिस पर हुज़ूर ने "तज़कतरतुश्शहादतैन" किताब लिखी। और इसमें बहुत दर्द से हज़रत मौलवी अब्दुल रहमान साहिब और हज़रत शहज़ादा अब्दुल तलतीफ साहिब की शहादत को विवरण से लिखा और हज़रत साहिबज़ादा साहिब को संबोधित कर कहा: "हे अब्दुल लतीफ! तेरे पर हज़ारों रहमतें तूने मेरे जीवन में ही ईमानदारी का नमूना दिखाया।" साथ ही यह पुर शौकत भविष्यवाणी फ़रमाई कि तीन सदियों के अन्दर सारी दुनिया में अहमदियत की विजय हो जाएगी। अत: आपने फरमाया कि "दुनिया में केवल एक ही धर्म होगा और एक ही पेशवा होगा मैं तो एक बीज बोने आया हूं। अत: मेरे हाथ से वह बीज बोया गया और अब वे बढ़ेगा और फूलेगा और कोई नहीं जो इसे रोक सके।"

**देश के प्रमुख शहरों में ईमान वर्धक व्याख्यान**

हुज़ूर अक़दस अलैहिस्सलाम ने 3 सितम्बर 1904 ई को लाहौर और 2 नवम्बर 1904 ई को सियालकोट की सार्वजनिक सभाओं में ईमान वर्धक लेक्चर दिए। अगले साल, अक्तूबर 1905 ई में आखरी यात्रा दिल्ली की। वापसी पर आप ने लुधियाना में 6 नवम्बर को और अमृतसर में 9 नवंबर को व्याख्यान दिए।

**एक विनाशकारी भूकंप और खुदाई भविष्यवाणी का प्रकटन**

4 अप्रैल 1905 ई को एक खतरनाक भूकंप आया। इस भूकम्प का केंद्र ज़िला कांगड़ा के पहाड़ थे जहां सबसे अधिक विनाश आया लेकिन यह विनाश केवल धर्मशाला तक सीमित नहीं थी बल्कि पंजाब के एक बहुत बड़े क्षेत्र में तबाही आई थी। यह विनाशकारी भूकंप आप की एक भविष्यवाणी के अनुसार था जो कुछ माह पहले प्रकाशित हुई

थी जिस के शब्द ये थे कि '' अफ्फतिद्दियारो महल्लुहा व मुकामुहा '' यानी जल्द एक विनाश आने वाला है जिसमें वास के अस्थायी स्थान और स्थायी स्थान दोनों मिट जाएंगे। अत: एक और इल्हाम हुआ था कि "दर्दनाक मौतों से अजीब तरह से शोर क़यामत बरपा है और मौता मौती लग रही है।"

दोनों पेशगोइयों के अनुसार दुनिया ने इस भयानक घटना का नज़ारा अपनी आँखों से देखा और बड़ी सफाई के साथ दोनों पेशगोइयां पूरी हुईं।

**मृत्यु के निकट होने के इल्हाम**

आप को अक्टूबर और दिसम्बर 1905 को रउया और इल्हामों के माध्यम से यह खबर दी गई कि आपकी मृत्यु का समय क़रीब है। जिस पर आप ने दिसंबर 1905 ई में पत्रिका अल-वसीयत लिखी और इस में अपनी जमाअत को महत्त्वपूर्ण नसीहतें कीं।

**कुदरते सानिया की ख़बर**

पत्रिका में आप ने विशेष रूप से यह खबर दी कि कुदरते सानिया यानी ख़िलाफत की प्रणाली मेरे बाद क़यामत तक क़ायम रहेगा।

**बहश्ती मकबरा और सदर अंजुमन अहमदिया की बुनियाद**

पत्रिका अल्वसीयत के माध्यम से अल्लाह तआला के हुक्म से आप ने एक बहश्ती मकबरा भी स्थापित किया और उसकी आय को धर्म के प्रकाशन पर खर्च करने के लिए सदर अंजुमन अहमदिया की नींव रखी और इस सिलसिले की वित्तीय और प्रशासनिक सेवाएं इस के सुपर्द कीं।

**मदरसा अहमदिया की बुनियाद**

सदर अंजुमन अहमदिया के साथ मदरसा अहमदिया की नींव दीनयात क्लास की शक्ल में डाली गई जो पहले तालीमुल इस्लाम हाई स्कूल के साथ जुड़ी थी। फिर पहली ख़िलाफत में एक स्थायी शैक्षणिक संस्था में बदल गई जिसके छात्रों ने आगे चल कर विश्व स्तर पर प्रचार सेवा का काम किया और कर रहे हैं। जमाअत के दो प्रतिष्ठित विद्वान हज़रत मौलाना अब्दुल करीम साहिब सियालकोट रज़ि अल्लाह तआला और हज़रत मौलाना बुरहानुद्दीन साहिब जेहलमी रज़ि अल्लाह तआला का इसी साल निधन हुआ था और क़ौम में ज़बरदस्त ख़ालीपन पैदा हो गया था इस ख़ालीपन को दूर करने और भविष्य में उलमा पैदा करने के लिए इस मदरसा की ज़रूरत पड़ी।

**हकीकतुल वह्यी का लिखना एवं प्रकाशन**

15 मार्च 1907 ई को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कलम से एक व्यापक और ज़खीम किताब "हकीकतुल वह्य " लिखी गई जिसके साथ परिष्कृत अरबी पत्रिका अल्इस्तफतआ भी शामिल किया गया जिस में फ़ुक़्हा मिल्लत ख़ैरुल अनाम को को आसमानी समर्थन के साथ ध्यान दिलाया गया जो कि हर पल आप के साथ रहीं।

**वक्फे ज़िन्दगी की पहली तहरीक**

अब जमाअत अहमदिया का प्रचार क्षेत्र प्रतिदिन व्यापक हो रहा था इसलिए हुज़ूर अनवर ने सितंबर 1907 ई में वक्फे ज़िन्दगी की पहली आम तहरीक फ़रमाई जिस में कई अहमदी युवाओं ने कमाल शौक से लब्बैक कहा।

**आपके जीवन का अंतिम जलसा सालाना**

26-27-28 दिसंबर, 1907 ई को आप के ज़िन्दगी का अन्तिम जलसा सालाना आयोजित किया जाता है। जिस में आप ने दो तकरीरें फरमाई। जिसमें बहुमूल्य कीमती निर्देश शामिल थे। जलसा के पहले दिन हुज़ूर सैर के लिए बाहर आए तो लोगों की भीड़ पतंगों की तरह उमड़ आई जिसे देखकर हज़रत मुफ्ती मुहम्मद सादिक साहिब ने सहज रूप से कहा कि "लोग बेचारे सच्चे हैं क्या करें। तेरह सौ साल बाद एक नबी का चेहरा नज़र आया है।

**अन्तिम यात्रा लाहौर**

चश्मा मअरफत के लिखने का बाद और कुछ दूसरे लगातार ज्ञान वर्धक कामों के कारण आपका स्वास्थ्य चिंताजनक रूप में गिर चुका था आप अलैहिस्सलाम 27 अप्रैल 1908 ई को लाहौर पधारे और लाहौर में स्थापित अहमदिया बिल्डिंग में नसीहतों का काम आरम्भ किया। यह हुज़ूर की अंतिम यात्रा थी जिस में राजकुमार सुल्तान इब्राहिम साहिब, श्री अली साहिब जाफरी, प्रोफेसर कलेमट रेग, श्री फज़ल हुसैन और कई अन्य प्रख्यात हस्तियां आपकी सेवा में हाज़िर हुईं और आपकी मुबारक ज़ुबान से बातें सुनने का सौभाग्य प्राप्त किया। 17 मई को, आपने सार्वजनिक सभा में लाहौर के अमीरों को तब्लीग़ की, जिसने लोगों को प्रभावित किया। 25 मई को हुज़ूर ने एक प्रतापी तक़रीर फ़रमाई जिसके अंतिम शब्द ये थे: " ईसा को मरने दो कि इस में इस्लाम का जीवन है। ऐसा ही ईसा मूसवी की बजाय ईसा मुहम्मद को आने दो कि इस में इस्लाम की महानता है।"

**पैग़ाम सुलह**

लाहौर में निवास के दौरान हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने एक पत्रिका "पैग़ाम सुलह" तस्नीफ की जिस में आप ने मुसलमानों और हिंदुओं को एकता और सहमति से रहने की नसीहत फ़रमाई। आप ने इस में यह भी लेखा कि "मैं सच सच कहता हूं कि हम शोरह भूमि के सांपों और जंगलों के भेड़ियों से सुलह कर सकते हैं लेकिन उन से हम सुलह नहीं कर सकते जो हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जो हमें अपनी जान और माता-पिता से भी प्यारे हैं नापाक हमले करते हैं। "

**मुबारक इन्तकाल**

हुज़ूर की साहिबज़ादी हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा ने इस अंतिम यात्रा लाहौर से पहले कादियानी में सपना देखा कि "मैं नीचे अपने सेहन में हूँ और गोल कमरे की तरफ जाती हूं वहां बहुत सारे लोग हैं जैसे विशेष बैठक हो। मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोट साहिब दरवाज़े के पास आए और कहा कि बीबी जाओ अब्बा से कहो कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सहाबा तशरीफ लाए हैं। आपको बुलाते हैं। मैं ऊपर गई और देखा कि पलंग पर बैठे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बहुत तेज़ी के साथ लिख रहे हैं और एक विशेष स्थिति वाले चेहरे पर, प्रकाश और जोश है, मैंने कहा अब्बा अब्दुल करीम साहिब कहते रसूल करीम सहाबा के साथ आए हैं और आप को बुला रहे हैं, आप ने लिखते लिखते एक नज़र डाली और मुझे यह कहा कि जाओ कह दो कि यह लेख खत्म हुआ और मैं आया। "

इस आसमानी ख़बर के अनुसार ठीक 25 मई शाम को पैग़ामे सुलह लेख समाप्त हो गया और अगले दिन सुबह नौ बजे आप की स्वर्गवास हो गया और अपने आक़ा तथा मौला हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़दमों में हाज़िर हुए। इन्ना लिल्लाहे वा इन्ना इलैहे राजऊन। मृत्यु के समय हुज़ूर की उम्र 73 के करीब थी। दिन मंगलवार था और सौर तारीख़ 26 मई 1908 ई थी कि एक आधुनिक अनुसंधान के अनुसार 26 मई आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के स्वर्गवास का दिन भी था।

☆ ☆ ☆

☆ ☆

# सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम

# इश्के इलाही, इश्के कुरआन, और इश्के रसूल के आइना में

## (सय्यद सईदुद्दीन अहमद, मुरब्बी सिलसिला, अख़बार बदर कादियान)

इतिहास इस बात का गवाह है कि जब-जब दुनिया में गुमराही और अंधेरे का ज़ोर होता है अल्लाह तआला मानव जाति के सुधार और मार्गदर्शन के लिए अपना उत्तराधिकारी भेजता है जो लोगों का सुधार करता है और अपने व्यावहारिक नमूने से लोगों को फिर से सही तरीका की तरफ ले जाता है, उसी अल्लाह तआला की आदत के अनुसार अल्लाह तआला ने हमारे रब्ब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भेजा और फिर आख़री दौर में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद महदी मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा।

जब हम मुस्लेह आख़री ज़माना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की सीरत का अध्ययन करते हैं तो हमें आप के असंख्य उच्च आचरण दिखते हैं, लेकिन उनमें से सबसे प्रमुख वे तीन आचरण हैं जो सही अर्थों में मानव जाति के सुधार और उस के जन्म के उद्देश्य को पाने का माध्यम है। **पहला** सच्चे निर्माता अर्थात अल्लाह तआला से मुहब्बत अर्थात इश्के इलाही ,**दूसरा** अल्लाह तआला की किताब से मुहब्बत अर्थात इश्के कुरआन, और **तीसरा** अल्लाह तआला के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत अर्थात इश्के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। आपकी सीरत यह तीन महान आचरण ऐसे महत्त्वपूर्ण हैं कि आप की हर तक़रीर तथा तहरीर हर कथनी और करनी हर गतिविधि और आराम इसी इश्क़ के नतीजे में पाए जाते हैं और यह इश्क़ इस स्तर तक पंहुचा हुआ था कि तारीख़े आलम में कोई उदाहरण नहीं मिल सकता ।

कुरआन में, अल्लाह तआला ने अपनी इबादत का उद्देश्य इबादत को वर्णन किया है। इसलिए जब मनुष्य अपने जन्म के उद्देश्य को पाने के लिए सच्चे दिल से अल्लाह तआला की इबादत करता है तो उसे इस इबादत में एक रमणीयता और आन्नद आता है तथा धीरे-धीरे इस इबादत के परिणाम में निर्माता और सृष्टि के बीच आपसी संबंध मज़बूत हो जाता है इस स्थिति को दूसरे शब्दों में, इश्के इलाही भी कहा जाता है।

सभी पिछले नबियों की तरह जब हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की सीरत पर नज़र डालते हैं, तो मालूम होता है कि आप अलैहिस्सालम में इश्के इलाही का गुण बहुत अधिक था। क्या बचपन क्या जवानी और क्या बुढ़ापा। अत: जीवन के हर दौर में यह महान आचरण आप में स्पष्ट नज़र आता है, आपका उठना, बैठना, सोना, जागना अत: हर कथन तथा कर्म अल्लाह तआला की ख़ुशी और उसके प्यार को पाने के लिए ही था।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम एक जगह फरमाते हैं:

"वास्तविक जीवन विसाले इलाही से प्राप्त होता है और वास्तविक जीवन वास्तविक मुक्ति है और वह इश्के इलाही और अल्लाह तआला के विसाल के अतिरिक्त कहीं प्राप्त नहीं होता।"

(चश्मा मसीही, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 20 , पी 366)

यही कारण है कि देखने वाले वर्णन करते हैं कि आप के इश्के इलाही की एक अजीब अवस्था थी। आप अक्सर ज़िक्रे इलाही और कुरआन करीम के पढ़ने और नफलों के अदा करने में व्यस्त रहते। अल्लाह तआला से सम्बन्ध की यह अवस्था थी कि जवानी की अवस्था में जबकि मनुष्य के दिल में दुनियावी काम और भौतिक विश्राम की इच्छा पूरी तरह से होती है, अपनी नौकरी को ठुकरा दिया। अत: एक बार की घटना है कि आपके पिताजी ने एक सिख ज़मींदार के द्वारा आपको कहला भेजा कि आजकल ऐसा बड़ा अधिकारी सत्ता में है जिसके साथ मेरे विशेष संबंध हैं इसलिए अगर आप को नौकरी की इच्छा हो तो इस अधिकारी को कह कर तुम्हें अच्छी मुझे नौकरी मिल सकती है इस पर वह सिख हुज़ूर की सेवा में पहुंचा और इस संदेश को आप के पिता की ओर से पहुंचाया कि यह एक महान अवसर है, इसे जाने नहीं देना चाहिए। इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने फरमाया कि पिता जी से कह दो कि मैं इन के प्यार तथा मुहब्बत को सम्मान की नज़र से देखता हूं परन्तु "मेरी नौकरी के बारे में चिन्ता न करें मैंने जहां नौकर होना था हो गया हूं।

(सीरतुल महदी, जिल्द 1, भाग-, पृष्ठ 43)

यह सिख ज़मींदार वापस आपके पिता जी की सेवा में हैरान तथा परेशान हाज़िर हुआ और सारा मामला बयान किया। इस पर आपके पिता जी जिनकी तबियत बहुत मामला को जानने वाली थी कुछ देर चुप रहकर फरमाने लगे अच्छा ग़ुलाम अहमद ने यह कहा है कि मैं नौकर हूं? तो ख़ैर अल्लाह तआला उसे बर्बाद नहीं करेगा। और उसके बाद आप अलैहिस्सलाम के पिता जी कभी-कभी बड़ी हसरत के साथ कहा करते थे कि "सच्चा रास्ता तो यही है जो ग़ुलाम अहमद ने धारण किया है, हम तो दुनियादारी मैं उलझ कर अपनी उम्र बर्बाद कर रहे हैं।"

(सीरते तय्यबा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम,ए, पृष्ठ 3 , 4)

इसी तरह की एक और घटना है कि एक बार एक वरिष्ठ अधिकारी ने आप के पिता जी से पूछा कि सुनता हूं कि आप का एक छोटा लड़का भी है, लेकिन मैंने उसे कभी नहीं देखा है। इस पर पिता जी ने मुस्कुराते हुए कहा कि एक छोटा लड़का तो है लेकिन वह नई विवाहित दुल्हन की तरह कम ही नज़र आता है अगर उसे देखना हो तो मस्जिद के किसी कोने में जाकर देख लें वह तो मसीतड़ है और अक्सर मस्जिद में ही रहता है और दुनिया के कामों में उसे कोई दिलचस्पी नहीं।

(सीरतुल महदी, खंड 1, भाग 2, पृष्ठ 367)

आपके पिता जी बाप की मुहब्बत और दुनिया की ज़ाहरी परिस्थितियों के अधीन आप के बारे में चिन्ता करते थे कि मेरे बाद इस की क्या बनेगा? लेकिन इस्लाम का ख़ुदा एक महान और बहुत अधिक सम्मान देने वाला है। इसलिए इससे पहले कि आपके पिताजी की मृत्यु हो अल्लाह तआला ने अपने इस सेवक को जिसने अपनी जवानी में उस का दामन पकड़ा था इस भव्य इल्हाम के माध्यम से तसल्ली दी कि

اَلَیْسَ اللّٰہُ بِکَافٍ عَبْدَہٗ

अर्थात हे मेरे बन्दे तू किस चिन्ता में है? क्या ख़ुदा अपने बंदा के लिए पर्याप्त नहीं है।?

(तज़करा, पृष्ठ 20)

इस इलहाम संबंधित हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अक्सर फरमाया करते थे कि यह इल्हाम इस शान और महिमा के साथ उतरा कि मेरे दिल की गहराई में एक फौलादी कील की तरह घुस कर गया और उसके बाद अल्लाह तआला ने इस रंग में मेरी पुष्टि फरमाई कि एक पिता या रिश्तेदार या एक दोस्त क्या कर सकता है? और फरमाते थे कि उसके बाद मुझे ख़ुदा के लगातार एहसान हुए कि असंभव है कि मैं इन

की गिनती कर सकूं।

(किताबुल बरिय्या, पृष्ठ 3)

आप अलैहिस्सलाम उन हार्दिक भवानाओं को इन शब्दों में व्यक्त करते हुए इस एक शेर में फरमाया ।

इब्दा से तेरे ही साया है मेरे दिन कटे
गोद में तेरी रही में मिस्ल तिफ्ले शीर ख़वार

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला से इतना प्रेम था कि सोते हुए भी आप के लबों पर सुबहानल्लाह के शब्द होते थे।

(सीरतुल मेहदी, जिल्द 1 पृष्ठ 287)

जब आप की मृत्यु का समय करीब आ गया तब भी आप की ज़ुबान मुबारक से जो शब्द निकले वह "अल्लाह मेरे प्यारे अल्लाह" के ही शब्द थे।

(सिलसिला अहमदिया, खंड 2, पृष्ठ 177)

और आप एक ऐसे सन्तोष की अवस्था में थे जैसे कोई लंबी यात्रा के बाद अपने गंतव्य को देख लेता था। लेकिन इससे भी अधिक अगर किसी बात से आपकी अल्लाह तआला से इश्क का अंदाज़ा लगाया जा सकता है तो वह तंहाई में लिखे हुए नोटबुक के एक पृष्ठ पर आपके वे शब्द हैं जो आपकी मृत्यु के बाद हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो को प्राप्त हुए। इस नोट में प्रत्येक शब्द उस प्रेम को वर्णन कर रहा है जो आपके दिल में ख़ुदा के लिए था। इस तंहाई के इन क्षणों में लिखे हुए शब्द हैं जब एक बंदा अपने रब्ब के साथ अकेले में बातें करता है, जब उसे पता चलता है कि इस समय उस के और उसके रब्ब के साथ और तीसरा कोई नहीं तो वह अपने शब्दों में उस शक्ति को तलाश करता है कि इन में इस प्यार को उसके दिल की गहराई में वर्णित किया जा सकता है। वह जानता है कि मेरे दिल की अवस्था को इस से अधिक कौन जान सकता है। लेकिन फिर भी वह कोशिश करता है कि इस मुहब्बत को शब्दों की शक्ल दे सके कि ख़ुद भी अपनी इस अवस्था को समझने की कोशिश करे। इसी समय लिखे गए आप के शब्द पुकार कर बयान करते हैं कि आप को अल्लाह से किस कदर इश्क था। अत: आप अलैहिस्सालम ने इस नोट में लिखा है

"हे मेरे मौला! मेरे ख़ुदा ! मेरी प्यारे मेरे प्रिय ख़ुदा! दुनिया कहती है तू काफिर है। लेकिन क्या तुझ से प्यारा मुझे कोई मिल सकता है? यदि हो तो उस के लिए तुझे छोड़ दूं। लेकिन मैं देखता हूं कि जब लोग दुनिया से अज्ञान हो जाते हैं। जब मेरे दोस्त और दुश्मन नहीं जानते कि मैं कहां हूं, उस समय तू मुझे जगाता है और मुहब्बत से प्यार से फरमाता है कि ग़म न खा। मैं तेरे साथ हूं। तो फिर हे मेरे मौला यह किस प्रकार संभव है इस उपकार के होते हुए फिर मैं तुझे छोड़ दूं? हरगिज़ नहीं कभी नहीं।"

(अनवारुल उलूम, जिल्द 1, पृष्ठ 375 से 376)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिल में ख़ुदा का प्रेम इतना रचा हुआ था इस का इतना प्रभाव था कि उसके मुकाबला पर दूसरी प्रत्येक वस्तु तुच्छ थी और आप अलैहिस्सालम आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस आदेश का पूर्ण नमूना थे कि

اَلْحُبُّ فِی اللّٰہِ وَالْبُغْضُ فِی اللّٰہِ

अर्थात सच्चे मोमिन की हर मुहब्बत और हर नाराज़गी ख़ुदा की मुहब्बत के अधीन होती है और उसी के लिए होती है।

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी एक फारसी नज़्म में सच्ची मुहब्बत का पैमाना इन शब्दों में वर्णन करते हैं कि

हर चे ग़ैरत ख़ुदा बख़ातिर तस्त
आन बुत तसे ए बा ईमान सत
बर खज़र बाश ज़ीं बुतां निहां
दामन दिल ज़दशत शां बुर्हां

अर्थात जो चीज़ भी ख़ुदा को छोड़कर तेरे दिल में है। वह (हे सुस्त ईमान वाले आदमी) तेरे दिल का एक बुत है। तुझे चाहिए कि इन छुपे हुए बुतों की तरह होशियार रह और अपने दिल के दामन को इन बुतों से बचा कर रख।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अपने सच्चे ख़ालिक की मुहब्बत एवं ग़ैरत पर गर्व था। अत: एक बार की घटना है कि सन 1904 में जब आपको मौलवी करम दीन वाले मुकदमा में यह सूचना मिली कि हिंदू मजिस्ट्रेट की नीयत ठीक नहीं है और वह आपको जेल में डालना चाहता है तो उस समय आप अपनी तबीयत ो ख़राब होने के कारण लेटे हुए थे। ये शब्द सुनते ही जोश से उठ बैठे और बहुत शान से कहा, कि वह ख़ुदा के शेर पर हाथ डाल कर तो देखे।

(सीरतुल महदी, जिल्द 1, भाग-, पृष्ठ 86)

अत: आप अलैहिस्सलाम अपने एक शेर में फरमाते हैं

जो ख़ुदा का है उसे ललकारना अच्छा नहीं
हाथ शेरों पर न डाल ए रोब: ज़ारो नज़ार
सर से मेरे पाँव तक वह यार मुझ में है निहां
ऐ मेरे बदख़वाह करना होश कर के मुझ वे वार

विरोधियों ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को परेशान करने और आप के मिश्न में रोक डालने के लिए विभिन्न प्रकार की तकलीफें दीं, जिन में फौजदारी और कत्ल के मुकदमें आदि भी थे। लेकिन आप देखें कि आप को कितना अपने प्रिय ख़ुदा से प्यार होने के कारण विश्वास था कि वह आपको सभी परेशानियों और मुश्किलों से बाहर निकाल लाएगा।

1897 ई की घटना है कि आप पर विरोधियों ने मार्टिन क्लार्क की कत्ल की योजना बनाने का आरोप लगाया है। लेकिन हमेशा की तरह इस बार अल्लाह तआला ने दुनिया के विरोधियों को सफल होने नहीं दिया, और अल्लाह तआला ने आप को मुकदमा से पहले ही बरी होने की ख़बर दे दी। अत: आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"अल्लाह तआला ने हमें पहले ही ख़बर दे दी थी और हम तो उसकी सहायता और नुसरत का इंतजार ही कर रहे थे इसलिए अल्लाह तआला की भविष्यवाणी की शुरुआत में हम ख़ुश हैं और इस के अन्त अच्छा होने पर हम विश्वास रखते हैं। हमारे दोस्तों को घबराने की ज़रूरत नहीं।

(किताबुल बरिया, पृष्ठ 237)

इस मुकदमा के संबंध में, आप अलैहिस्सलाम एक दूसरे स्थान पर फरमाते हैं

"ख़ुदा हमारे साथ है, जो उन के साथ नहीं है अल्लाह तआला ने अपने फैसला से हम को परिचित कर दिया और हम इस पर विश्वास रखते हैं कि वही होगा अगर सारी दुनिया भी इस मुकदमा में हमारे ख़िलाफ हो तो मुझे एक कण मात्रा भी परवाह नहीं। अल्लाह तआला के बिशारत के बाद इस का वहम करना भी गुनाह समझता हूं।

(हयात अहमद, भाग 4, पृष्ठ 597,598)

अत: ख़ुदा तआला के साथ आप अलैहिस्सलाम का एक पूर्ण और मज़बूत सम्बन्ध था यही कारण है कि जीवन के सारे मामलों में अल्लाह तआला का समर्थन आप का साथ रहा।

ख़ुदा के पाक लोगों को ख़ुदा से नुस्रत आती है
जब आती है तो फिर आलम को इक आलम दिखाती है
वह बनती है हवा और हर ख़से राह को उड़ाती है
वह हो जाती है आग और हर मुखालिफ़ को जलाती
कभी वह खाक हो कर दुश्मनों के सर पे पड़ती है
कभी हो कर वो पानी उन पे इक तूफान लाती है

ग़र्ज़ रुकते नहीं हरगिज़ ख़ुदा के काम बन्दों से
भला ख़ालिक़ के आगे ख़ल्क की कुछ पेश जाती है

आप अलैहिस्सलाम को अपने वास्तविक ख़ालिक से जितनी मुहब्बत थी इतना ख़ुदा तआला ने भी आप को नवाज़ा और इस मुहब्बत को सम्मान प्रदान किया। प्राय: अल्लाह तआला आप अलैहिस्सलाम से बातें करता। और आप अलैहिस्सलाम पर बारिश की तरह इल्हाम नाज़िल फरमाता। इन में बहुत सी इस तरह की भविष्यवाणियों का रंग रखता हैं जो अपने समय में बड़ी शान से पूरी हो रही हैं।

आप को इस बात पर भी पूर्ण विश्वास था कि अल्लाह तआला ने आप को मसीह मौऊद तथा महदी मौऊद अलैहिस्सलाम बना कर भेजा है। आप को ख़ुदा तआला के समस्त वादों पर पूर्ण विश्वास था और आप यह विश्वास रखते थे कि चाहे कुछ भी हो जाए ख़ुदा तआला की बात नहीं टल सकती। अत: हिन्दुस्तान के एक अख़बार "पायनियर" ने आपकी मृत्यु के समय लिखा था: "मिर्ज़ा साहिब ने कभी भी अपने दावे पर संदेह नहीं किया है। और वह पूर्ण ईमानदारी और श्रद्धा से विश्वास करते थे कि उन पर अल्लाह का कलमा नाज़िल होता है और यह कि उन्हें एक आदत से हट कर शक्ति प्रदान की गई है।"

(सीरतुल मेहदी, पृष्ठ 255)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सीना में अल्लाह तआला से जा बे पनाह इश्क तथा मुहब्बत थी। आप चाहते थे कि यह इश्क तथा मुहब्बत केवल अपने तक सीमित न रहे बल्कि यह इश्क कि चिंगारी दूसरों के दिलों में भी पैदा हो जाए। अत: आप अपनी एक पुस्तक कश्ती नूह में फरमाते हैं

"कितना दुर्भाग्यशाली है वह मनुष्य जिसे अब तक यह ज्ञात नहीं कि उसका ख़ुदा है जो समस्त शक्तियों से परिपूर्ण है। हमारा स्वर्ग हमारा एक ख़ुदा है। हमारा परमानन्द हमारा ख़ुदा है क्योंकि हमने उसका अनुभव किया है। हर प्रकार का सौन्दर्य उसमें विद्यमान है। यह दौलत लेने योग्य है यद्यपि कि जीवन देकर प्राप्त हो, यह रत्न ख़रीदने योग्य है यद्यपि समस्त अस्तित्व खोकर प्राप्त हो। हे वंचित रहने वालो ! इस झरने की ओर दौड़ो कि यह तुम्हें सींचेगा। यह जीवनदायी झरना है जो तुम्हें सुरक्षित रखेगा। मैं क्या करूँ और किस प्रकार इस शुभ सन्देश को हृदयों तक पहुँचाऊँ, किस ढपली से मैं बाज़ारों में मुनादी करूँ कि तुम्हारा ख़ुदा यह है ताकि लोग सुन लें, किस औषधि से मैं उपचार करूँ ताकि सुनने के लिए लोगों के कान खुलें। यदि तुम ख़ुदा के हो जाओ तो नि:स्सन्देह ख़ुदा तुम्हारा ही है।"

(कश्ती नूह, रूहानी ख़ज़ायन, 19, पृष्ठ 21-22)

आपके दिल में ख़ुदा तआला से मुहब्बत की आग इतनी अधिक थी कि इसके मुकाबला पर सारी दूसरी मुहब्बतें तुच्छ थीं। और फिर यह भी एक अजीब नज़ारा है कि जैसे जैसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दुनिया से मुंह मोड़ा ख़ुदा तआला ने दोनों संसारों नेअमतें आप की झूली में डाल दीं। परन्तु आप की नज़र में ख़ुदा तआला की मुहब्बत और उस की निकटता के मुकाबला पर दूसरी सारी चीज़ें व्यर्थ थीं।

फिर अल्लाह तआला की प्यारी किताब कुरआन मजीद जिस को कलामुल्लाह का स्थान प्राप्त है। और जो मानव जाति के सुधार के लिए अन्तिम शरीयत के रूप में नाज़िल किया था इस से भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को बहुत अधिक मुहब्बत थी। कुरआन करीम के साथ इश्क तथा मुहब्बत और मान सम्मान के अनूखे तरीके आप अलैहिस्सालम ने अपनाए और मानव जाति को सिखलाए। कुरआन मजीद से मुहब्बत का जो तरीका आप अलैहिस्सलाम ने अपनाया उस का उदाहरण नहीं मिलती। आप ने कुरआन को अपने दिल में उतारा और अपने मानने वालों के सीनों में प्रतिष्ठित किया। उस की महानता तथा प्रताप को दूसरों के दिल में इस तरह स्थापित किया कि वे भयभीत हो गए और इस किताब की सच्चाई तथा महानता को साबित कर दिखाया और इस के लिए विरोधियों को मुकाबला के लिए बुलाया कुरआन मजीद से इश्क तथा मुहब्बत का यह अंदाज़ा अन्य कहीं भी नज़र नहीं आता। अत: आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

दिल में यही है हर दम तेरा सहीफा चूमूं
कुर्आं के गिर्द घूमूं काबा मेरा यही है

अर्थात कुरआन के गुण तो स्पष्ट तथा प्रकाशित हैं परन्तु इस केसाथ मेरी मुहब्बत का मूल कारण इस बात से है कि हे मेरे आसमानी आक़ा! वह तेरी तरफ से आया हुआ पवित्र सहीफा है जिसे बार बार चूमने और इस के गिर्द घूमने के लिए मेरा दिल बेचैन रहता है।

इसी तरह एक अन्य स्थान पर आप अलैहिस्सलाम कुरआन मजीद के हुस्न का वर्णन करते हुए अपने एक शेअर में वर्णन फरमाते हैं कि

जमालो हुस्ने कुर्आं नूरे जाने हर मुसल्मां है
क़मर है चांद औरों को हमारा चांद कुरआं है

इसी तरह एक अन्य स्थान पर अपनी प्रसिद्ध पुस्तक बराहीन अहमदिया में आप फरमाते हैं

"कुरआन शरीफ वह पुस्तक है जिसने आपकी महानता, अपनी हिक्मतों, अपनी सच्चाइयों, अपनी बलाग़तों, अपनी सूक्ष्म बातों, अपने आंतरिक रूहानियत का आप दावा किया है, और अपना अनुपमेय होना आप प्रकट किया है यह बात हरगिज़ नहीं कि केवल मुलमानों ने अपने विचार में उस के गुणों को करार दे दिया, बल्कि वह तो स्वयं अपने गुणों तथा अपने कमालों को वर्णन करने वाले है और अपना अनुपमेय तथा नज़ीर होना सारी सृष्टि के सामने पेश करता है और ऊंची आवाज़ से ढोल बजा रहा है और हकीकतें उस की केवल दो तीन नहीं हैं जिस में कोई आज्ञानी शक करे बल्कि उस की हकायक तो बड़े समुद्र की तरह जोश मार रहे हैं और आसमान के सितारों की तरह जहां नज़र डालो चमकते आते हैं।

(बराहीने अहमदिया, भाग चतुर्थ, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 1, पृष्ठ 662, 663 हाशिया 11)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुरआन से प्रेम के नज़ारे हमें आप की दर्जनों पुस्तकों के अलावा मंज़ूम कलाम में भी दिखते हैं। यह सुन्दर झलकियां हम आप की बातों में भी देख सकते हैं और आप के चरित्र में भी देख सकते हैं। अत: आप अलैहिस्सलाम की सीरत कुरआन से प्रेम और कुरआन के सम्मान से भरी हुई नज़र आती है। जैसा कि आप अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फरमाते हैं:

" मैं जवान था और अब बूढ़ा हो गया हूँ और अगर लोग चाहें तो गवाही दे सकते हैं कि मैं दुनियादारी के कामों में नहीं पड़ा और धार्मिक काम हमेशा मेरी रुचि रही। मैंने इस कलाम को जिस का नाम कुरआन है बहुत अधिक शुद्ध और आध्यात्मिक ज्ञान से भरा पाया। "

(सनातन धर्म, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 19, पृष्ठ 474)

कुरआन पर तफक्कुर तदब्बुर आप की तबीयत की आदत था मानो आप अलैहिस्सलाम की दूसरी फितरत थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस स्थिति का उल्लेख करते हुए हज़रत शेख याकूब अली इरफान साहिब बताते हैं:

"आप के जीवन के काम, इबादत अल्लाह के ज़िक्र और कुरआन मजीद की तिलावत के इलावा कुछ न थे। आप की यह आदत थी कि प्राय: टहलते रहते और तिलावत करते रहते। अन्य लोग जो वास्तविकता से अनजान थे अक्सर आपके इस काम पर हंसते थे। कुरआन की तिलावत शिक्षण और समझने की बहुत आदत थी। ख़ान बहादुर मिर्ज़ा सुल्तान अहमद साहिब का वर्णन है कि आपके पास एक कुरआन था। आप

इसे पढ़ते और चिह्नित करते रहते थे। वह कहते हैं, मैं अतिश्योक्ति के बिना कह सकता हूं, शायद दस हज़ार बार से अधिक तिलावत की होगी। इतना कुरआन मजीद की तिलावत का शौक प्रकट करता है कि आप को अल्लाह तआला की इस मजीद पुस्तक से कितना प्रेम और संबंध था और आप के कलामे इलाही से कैसी प्रासंगिकता और रुचि थी। इसी तिलावत और विचार ने आप के अंदर कुरआन की प्रामाणिकता और महानता को व्यक्त करने के लिए एक जोश पैदा कर दिया था और अल्लाह तआला ने कुरआन के ज्ञान का एक न पार होने वाला समुन्दर आप के सीना में पैदा कर दिया था

(हयाते अहमद जिल्द 1, भाग द्वितीय, पृष्ठ 172 से 173)

एक बार की घटना है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पालकी में बैठकर कादियानी से बटाला जा रहे थे और यह यात्रा पालकी द्वारा लगभग पांच घंटे की थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कादियानी से निकलते ही अपनी कुरआन शरीफ खोल ली और सूर: फातिहा पढ़ना शुरू किया ओर बराबर पांच घंटे तक इसी सूर: को ध्यान के साथ पढ़ते रहे कि मानो वह एक व्यापक समुद्र है जिस की गहराइयों में अपने सनातन प्रिय महबूब के रहमत के मोतियों को तलाश कर रहे हैं।

(सीरत-ए-तैयबा पृष्ठ नंबर 11 और 12, बहवाला सीरतुल महदी, जिल्द 1, भाग द्वितीय, पृष्ठ 395)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कुरआन के मुहासिन का ज़िक्र करते हुए अपनी एक नज़म में फरमाते हैं

नूरे फुरकाँ है जो सब नूरों से अजला निकला
पाक वह जिस से यह अनवार का दरिया निकला
हक की तौहीद का मुदा ही चला था पौधा
नागिहां ग़ैब से यह चश्मा अस्फहा निकला
या इलाही तेरा फुरकाँ है कि इक आलम है
जो ज़रूरी था वह सब में इस में मुहय्या निकला
सब जहां छान चुके सारी दुकानें देखीं
मय इरफ़ां का यही एक ही शीशा निकला

आप अलैहिस्सलाम को कुरआन से इतना प्रेम व मुहब्बत थी कि तिलावत कुरआन सुनने से ही आप को सिर दर्द से आराम मिल जाता था। इसलिए सीरतुल महदी में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब बयान फ़रमाते हैं:

डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब ने मुझ से वर्णन किया कि जिस रात को इशा के समय हुसैन कामी नामक राजदूत रूम से कादियान आया उस दिन नमाज़ मग़रिब के बाद हज़रत साहिब मस्जिद मुबारक में शाह नशीन में मित्रों के साथ बेटे थे कि इस दौरान सिर का दौरा शुरू हुआ और आप शाह नशीन से नीचे उतर कर फर्श पर लेट गए कुछ अधिक लोग आप को दबाने लग गए लेकिन हुज़ूर ने सबको हटा दिया है। जब अक्सर दोस्त वहाँ से विदा हो गए तो आप ने मौलवी अब्दुल करीम साहिब मरहूम से कहा कि कुछ कुरआन शरीफ पढ़कर सुनाएं। मौलवी साहिब मरहूम बहुत खुश अलहानी से कुरआन शरीफ सुनाते रहे यहाँ तक कि आप की तबीयत ठीक हो गई।

(सीरतुल महदी, जिल्द पृष्ठ, पृष्ठ नंबर 439)

आप अलैहिस्सलाम जब भी अच्छी आवाज़ से तिलावत कुरआन सुनते तो आंखों से आंसू जारी हो जाते थे। अत: आप के मुरीद हज़रत मुफ्ती मुहम्मद सादिक साहिब पूर्व संपादक बद्र और मुजाहिद अमेरिका हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुरआन के प्रेम की आंखों देखी घटना बताते हुए कहते हैं कि

'' एक बार आप ख़ुद्दाम के साथ सैर के लिए जा रहे थे और इन दिनों में हाजी हबीबुर्रहमान साहिब हाजी पुरा वालों के दामाद कादियान आए हुए थे एक व्यक्ति ने हज़रत साहिब से कहा कि यह कुरआन शरीफ बहुत अच्छा पढ़ते हैं। हज़रत साहिब वहीं सड़क के एक तरफ बैठे और कहा कि कुछ कुरआन पढ़ कर सुनाएं। अत: उन्होंने कुरआन शरीफ सुनाया तब मैंने देखा कि आपकी आँखों में आँसू भर आए थे और हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब की मृत्यु पर मैंने बहुत ध्यान से देखा लेकिन मैं ने आप को रोते नहीं पाया। भले ही आपको मौलवी साहिब की मौत का गंभीर आघात हो। विनम्र निवेदन करता है कि यह सही है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बहुत कम रोते थे और आप को अपने आप पर बहुत जब्त था और जब कभी आप रोते थे तो केवल इस हद तक रोते थे कि अपनी आँखें डबडबा जाती थीं। इस से अधिक आप को रोते नहीं देखा गया।

(सीरतुल महदी, जिल्द 1, पृष्ठ 393 से 394)

फिर कुरआन मजीद से सिर्फ मुहब्बत ही नहीं बल्कि उसकी सेवा की भावना और जोश आप में भरा हुआ था। एक तरफ जहां आप अलैहिस्सलाम ने उम्र भर कुरआन के इश्क को अपने आचरण से प्रकट करके दिखाया वहीं दूसरी और आपने कुरआन की सेवा पर हमेशा कमर कसी। यही कारण है कि आप अलैहिस्सलाम बार-बार अपने मानने वालों को कुरआन मजीद की सेवा की नसीहत फरमाते हैं। और उन लोगों में यह भावना पैदा करने की आपके अंदर एक तड़प थी जैसा कि आपने अपने एक फारसी कलाम में फरमाया है

ऐ बेख़बर बख़िदमते कुरआं बबनद
ज़ां पेशतर बबानग बरायद फलां नुमां

अर्थात हे बेख़बर कुरआन की सेवा के लिए कमर बांध ले इससे पहले कि कोई यह पुकारे कि अमुक व्यक्ति अब दुनिया में नहीं रहा।

अत: आप अलैहिस्सलाम की हार्दिक इच्छा थी कि आप के मानने वाले कुरआन मजीद की सेवा पर तत्पर हो जाएं और कुरआन मजीद के साथ वह मुहब्बत और प्यार करें। जो किसी अन्य ने न किया हो और इश्क और मुहब्बत के तरीके अपनाएं जिन का नमूना आप ने दिखाया।

वैसे तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से पहले बहुत सारे कुरआन करीम से मुहब्बत करने वाले और कुरआन की तफसीर लिखने वाले पैदा होते रहे परन्तु हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम जैसा आशिक और कोई नहीं हो सकता क्योंकि कुरआन के हुस्न के जलवे अल्लाह तआला ने ख़ुद अपनी रहमत के अधीन आप पर प्रकट किए और छुपे हुए भेदों से आप को सूचना दी गई।

आप अलैहिस्सलाम ने कई बार अपनी पुस्तकों में और तक़रीरों में ख़ुदा तआला की ओर से कुरआन मजीद के प्रदान किए गए ज्ञान को उल्माए इस्लाम के सामने प्रस्तुत करके अपनी सच्चाई के रूप में पेश फरमाया। अत: एक जगह हुज़ूर अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला की तरफ से प्रदान की गई चार निशानियों का वर्णन करते हुए फरमाते हैं

(1) मैं कुरआन शरीफ के चमत्कारों के ज़िल पर अरबी भाषा की फसाहत और बलाग़त का निशान दिया गया हूं।(2) कोई नहीं कि जो उसका मुकाबला कर सके। (3) मैं कुरआन शरीफ के हकीकत तथा मआरिफ वर्णन करने का निशान दिया गया हूं कोई नहीं जो इसका मुकाबला कर सके।

( ज़रूरतुल इमाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 13 पृष्ठ 496)

सूरत फातिहा की जो तफसीर आप ने वर्णन फरमाई उस के उछूते हकायक और मआरिफ आप ने प्रकट फरमाए। इस बारे में इस चैलन्ज का वर्णन करना आवश्यक मामूल होता है जो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने जुलाई 1900 में मेहर अली शाह साहिब गोलड़विया को दिया था, लाहौर में एक जलसा करके और कुरअ: अंदाज़ी के द्वारा कुरआन की 40

आयतें लेकर उसकी हकीकत में और मआरिफ फसाहत और बलाग़त अरबी भाषा में 7 घंटे के अंदर लिखने के लिए तैयार हो जाए। महोदय ने इस दावत मुकाबला को स्वीकार नहीं किया अलबत्ता बिना सूचना दिए लाहौर पहुंच कर मुबाहला की शर्त रख दी और वापस जाकर शोर मचा दिया कि ख़ुद दावत देने वाला ही नहीं पहुंचा। भाग गए इत्यादि।

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इन धोखा देने वाले मैदान मुकाबला में फरार को स्पष्ट करने के साथ-साथ घर बैठे तफसीर लिखने का मुकाबला करने की दावत दी कि 15 दिसम्बर 1900 ई से ले कर 70 दिन तक फसाहत तथा बलाग़त के साथ अरबी भाषा में सूरत फातिहा की तफसीर लिखें। बेशक अरब तथा अजम के उलमा से मदद ले लें।

आप ने आमने सामने बैठकर तफसीर लिखने के बाद अरब के 3 नामी साहित्यकार उनकी तफसीर को फसाहत तथा बलाग़त वाली करार दें और मआरिफ से भरी हुई विचार करें तो मैं 500 नगद उनको इनाम दूंगा और अपनी सारी पुस्तकों को जला दूंगा और उनके हाथ पर बैअत कर लूंगा और अगर इसके विपरीत मामला निकला इस सीमा तक अर्थात 70 दिन तक वह कुछ भी ना लिख सके तो मुझे ऐसे लोगों की बैअत लेने की भी ज़रूरत नहीं और न रुपए की इच्छा। केवल यही दिखलाऊंगा कि उन्होंने आकर शर्म योग्य झूठ बोला।

फिर इस एलान के अनुसार अल्लाह तआला के फज़ल और विशेष समर्थन से निश्चित समय सीमा के अंदर 23 फरवरी 1901 ई को एजाज़ुल मसीह के नाम से सूरत फातिहा की तफसीर प्रकाशित फरमा दी। जबकि पीर मेहर अली शाह को घर बैठकर आमने सामने तफसीर लिखने की तौफीक़ न मिली और अपनी खामोशी से हार को स्वीकार करते हुए अपनी अज्ञानता तथा झूठ पर मोहर लगा दी।

इसी प्रकार आप अलैहिस्सलाम ने अपने ख़ुदा तआला द्वारा दिए कुरआन के ज्ञान को बार-बार उलमा के सामने अपनी सच्चाई के रूप में प्रस्तुत किया है। इसकी एक नज़ीर आपकी किताब अंजाम आथम में मिलती है। आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

" मेरे विरोधी कुरआन की किसी सूरत की आमने सामने बैठ कर तफसरी बनाएं अर्थात आमने सामने बैठ कर फाल के रूप में कुरआन शरीफ खोला जाए और पहली सात आयतें जो निकलें उन की तफसीर मैं भी अरबी भाषा में लिखूं और मेरा विरोधी भी लिखे फिर अगर मैं हकायक तथा मआरिफ वर्णन करने में स्पष्ट रूप से विजयी न हूं। तो फिर भी मैं झूठा हूं।

(ज़मीमा अन्जामे आथम रूहानी ख़ज़ायन भाग 11 पृष्ठ 304)

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद के हकायक तथा मआरिफ का एक ख़ज़ाना खोल दिया था। यही कारण है कि आप अलैहिस्सलाम ने कुरआन की हकीकत को जिस रूप में दुनिया के सामने प्रस्तुत किया और जो कुछ आप अलैहिस्सलाम उसकी ऊंची शान को प्रकट करने में कोशिश की वह सम्मान के काबिल है। अपनों के अलावा दूसरों ने भी कई बार आपकी इस सेवा को स्पष्ट रूप से वर्णन किया। वास्तविकता तो यह है कि जैसे हदीस में मसीह मौऊद के बारे में आया कि वह कुरआन (ईमान) को सुरय्या सितारे से लाएगा इस का एक शानदार नज़ारा दुनिया ने आप के वजूद में देखा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मानव जाति को उसकी शिक्षाओं पर अमल करने के लिए उससे प्यार करने की बार-बार नसीहत कि जैसे कि आप अपनी पुस्तक कश्ती नूह में एक स्थान पर फरमाते हैं

"अत: तुम सावधान रहो। ख़ुदा की शिक्षा और क़ुर्आन के पथ-प्रदर्शन के विपरीत एक पग भी न उठाओ। मैं तुम्हें सच-सच कहता हूं कि जो मनुष्य क़ुर्आन के सात सौ आदेशों में से एक छोटे से आदेश को भी टालता है वह मुक्ति द्वार को स्वयं अपने लिए बंद करता है। वास्तविक और पूर्ण मुक्ति के मार्ग क़ुर्आन ने प्रदर्शित किए, शेष सभी उसकी तुलना में छाया मात्र थे। अत: तुम क़ुर्आन का पूरी सतर्कता से अध्ययन करो और उससे अत्यधिक प्रेम करो, ऐसा प्रेम जो तुम ने किसी से न किया हो। क्योंकि जैसा ख़ुदा ने मुझे संबोधित करते हुए फ़रमाया- اَلْخَيْرُ كُلُّهٗ فِي الْقُرْاٰنِ "अलख़ैरो कुल्लुहू फ़िलक़ुर्आन" कि समस्त प्रकार की भलाइयां क़ुर्आन में हैं। यही बात सत्य है। खेद है उन लोगों पर जो किसी अन्य वस्तु को उस पर प्राथमिकता देते हैं। तुम्हारी सम्पूर्ण सफलता और मुक्ति का स्रोत क़ुर्आन में निहित है। तुम्हारी कोई भी धार्मिक आवश्यकता ऐसी नहीं जिसका समाधान क़ुर्आन में न हो। क़यामत के दिन तुम्हारे ईमान के सच्चे या झूठे होने की कसौटी क़ुर्आन है। आकाश के नीचे क़ुर्आन के अतिरिक्त और कोई पुस्तक नहीं जो किसी अन्य पर निर्भर हुए बिना तुम्हारा पथ-प्रदर्शन कर सके। ख़ुदा ने तुम पर आपार कृपा की है जो क़ुर्आन जैसी पुस्तक तुम्हें प्रदान की। मैं तुम्हें सच-सच कहता हूं कि वह पुस्तक जो तुम्हारे सम्मुख पढ़ी गई यदि ईसाइयों के सम्मुख पढ़ी जाती तो वे तबाह न होते। यह उपकार और पथ-प्रदर्शन जो तुम्हें उपलब्ध किया गया यदि (तौरात) को छोड़ कर यहूदियों को उपलब्ध कराया जाता तो उनके कुछ समूह प्रलय का इन्कार न करते। अत: इस उपकार के महत्त्व को समझो जो तुम्हारे साथ किया गया। यह अति उत्तम उपकार है यह अपार संपत्ति है। यदि क़ुर्आन न आता तो समस्त संसार एक अपवित्र और तुच्छ लोथड़े की भांति था। क़ुर्आन वह पुस्तक है जिसके समक्ष सभी पथ-प्रदर्शन तुच्छ हैं।

(कश्ती नूह रूहानी खज़ायन भाग 19 पृष्ठ 26 से 27)

इसके अतिरिक्त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सीरत का एक और अनुपमेय आचरण रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इश्क भी है। इश्के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप अलैहिस्सलाम की रूह की ख़ुराक थी, इसी से आप की ज़ात का ख़मीर उठाया गया, और इसी में प्रत्येक क्षण फना होते हुए आपकी ज़िंदगी का प्रत्येक क्षण व्यतीत हुआ। इश्के रसूल के मैदान में भी आपका बहुत उच्च स्थान है जैसा कि आप अपने शेअर में फरमाते हैं

बअद अज़ ख़ुदा ब इशके मुहम्मद मुख़म्मरम
गर कुफ्र ईं बवद बख़ुदा सख्त काफरम

अर्थात में ख़ुदा के बाद मुहम्मद रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इश्क में डूबा हुआ हूं अगर मेरा यह इश्क किसी की नज़र में कुफर है तो ख़ुदा की कसम मैं एक सख्त काफिर इंसान हूं।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से आप अलैहिस्सलाम की मुहब्बत का उदाहरण इस तरह है कि दुनिया के किसी इंसान ने किसी दूसरे इंसान से ऐसी मुहब्बत नहीं की जैसे इस आशिक़े रसूल ने की और इसकी एक वजह थी और वह यह कि आप दिल से यह विश्वास रखते थे और आप को दिखाया गया था कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत के बिना सच्चे महबूब अर्थात अल्लाह तआला से मिलने का विचार, तुच्छ विचार है और आप व्यक्तिगत दर्शन से जानते थे कि मुहम्मद रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला के गुणों के सब से अधिक प्रकट करने वाले और इन्सानों के गुणों के सार हैं। और हुस्नो इहसान में और ख़ूबी तथा महबूबी तथा दिलबरी में सृष्टि में से कोई इस ख़ुदा के महबूब का बराबर और शरीक नहीं है। आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

अज़ बनी आदम फज़ूं तरद्दुद र जमाल
दज़लाली ख़ूब तर गोहर हरे

आप हुस्न तथा जमाल में सारे मानव जाति में सब से बढ़ कर हैं।

चमक तथा दमक में प्रत्येक मोती से बढ़ कर हैं। आप अलैहिस्सलाम यह विश्वसनीय रूप से जानते थे कि जितना उपकार मानव जाति पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का है किसी दूसरे नबी का नहीं है।

सच्चे आशिक़ की एक निशानी यह है कि आशिक़ हमेशा अपने महबूब के वर्णन में डूबा रहता है। आप अलैहिस्सलाम को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान तथा महानता का जो इर्फान प्राप्त था उस ने आप के पवित्र दिल को कुछ इस तरह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का निवास स्थल बना दिया था कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की याद में आप के दिन रात व्यतीत होते थे। और इसी महबूब पर दरूद तथा सलाम पढ़ना आपका दिन रात का वज़ीफा था। एक बार किसी ने पूछा कि दरूद शरीफ कितना पढ़ना चाहिए? देखें क्या ही ख़ूब उत्तर दिया। आप फरमाते हैं तब तक पढ़ना चाहिए के ज़बान भीग जाए।

(सीरतुल महदी भाग 4 पृष्ठ 156)

इसी प्रकार दरूद शरीफ के बारे में अपने एक अनुभव का वर्णन इन शब्दों में करते हैं। फरमाया

"एक रात इस विनीत ने इतनी अधिक मात्रा में दरूद शरीफ पड़ा कि दिल तथा जान इस से डूब गया। उसी रात ख़्वाब में देखा कि फरिश्ते पवित्र पानी की शक्ल पर नूर की मुश्कें इस विनीत के मकान पर उठाए हुए आ रहे हैं और एक ने उन में से कहा कि यह वही बरकतें हैं जो तूने मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) की तरफ भेजी थीं।

( बराहीन अहमदिया रूहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 598)

एक बार की घटना है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम अपने मकान के साथ वाले मकान की छोटी सी मस्जिद में जो मस्जिद मुबारक कहलाती है अकेले टहल रहे थे और धीरे-धीरे कुछ गुनगुनाते जाते थे और इसके साथ ही आप की आंखों से आंसुओं की धारा बहती चली जा रही थी उस समय एक श्रद्धालु ने बाहर से आकर सुना तो आप आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबी हज़रत हस्सान बिन साबित का एक शेर पढ़ रहे थे जो उन्होंने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु के समय पर कहा था और वह शेर यह है:

كُنتَ السَّوَادَ لِنَاظِرِيْ فَعَمِيَ عَلَيْكَ النَّاظِرُ
مَنْ شَاءَ بَعْدَكَ فَلْيَمُتْ فَعَلَيْكَ كُنْتُ أُحَاذِرُ

अर्थात हे ख़ुदा के प्यारे रसूल ! तू मेरी आंख की पुतली थी जो आज तेरी वफात की वजह से अंधी हो गई अब तेरे बाद जो चाहे मरे मुझे तो केवल तेरी मौत का डर था जो घटित हो गई।

रिवायत करने वाले वर्णन करते हैं कि जब मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को इस तरह रोते हुए देखा और उस समय आप मस्जिद में बिल्कुल अकेले टहल रहे थे तो मैंने घबरा कर निवेदन किया कि हज़रत यह क्या मामला है? हुज़ूर को कौन सा दुख पहुंचा है? इस पर हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फरमाया हस्सान बिन साबित का यह शेर पढ़ रहा था और मेरे दिल में यह इच्छा पैदा हुई कि काश यह शेर मेरी ज़ुबान से निकलता।

दुनिया जानती है कि आप अलैहिस्सालम पर सख्त से सख्त ज़माने आए हर किस्म की तंगी देखी, तरह तरह के दु:ख सहन किए, आपदाओं की आंधियां सिर से गुज़रीं, विरोधियों की तरफ से बहुत कठोर कष्ट पहुंचाए गए। यहां तक के क़त्ल की साज़िश मुकदमों में से गुज़रना पड़ा और दोस्तों और अपने भाइयों की मौत के नज़ारे भी देखे मगर कभी आपकी आंखों ने आप के दिल की भावना को प्रकट नहीं किया, परन्तु एकान्त में आपने आक़ा की वफात के बारे में यह मुहब्बत के शेर याद करते हुए आपकी आंखें सैलाब की तरह बह निकलीं। आपके दिल की हसरत छलक कर बाहर आ गई काश यह शेर मेरी ज़ुबान से निकलता।

(सीरते तय्यब: पृष्ठ 22 तथा 23)

इस घटना से हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम का अपने आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सच्चा इश्क तथा मुहब्बत का अच्छी तरह ज्ञान होता है। यह बात एक वास्तविकता है जो बिना किसी भय तथा डर के कही जा सकती है कि मुहब्बत इश्क में जो ऊंचा स्थान रसूलुल्लाह के सच्चे आशिक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को प्राप्त हुआ था वह बे-नज़ीर है। आप अलैहिस्सालम की तहरीरों से भी इशके मुहम्मदी की खुशबू आती है। आप की हर अदा में हुस्ने मुहम्मदी की छाया दिखाई देती है। मुहब्बत, वफा के इस तरह के दिल को लुभावने वाले नज़ारे नज़र आते हैं कि इन्सान हैरत में गुम हो जाता है। आप अलैहिस्सालम आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत में गुम होकर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में फरमाते हैं

جسمی یطیر الیك من شوقٍ علا
یالیت کانت قوة الطیران

अर्थात हे मेरे महबूब मेरी रूह तो कब की तेरी हो चुकी। अब तो मेरा जिस्म भी तेरी तरफ उड़ने के लिए बेताब तमन्ना रखती है। हे काश मुझे उड़ने की ताकत होती।

इश्क का अनिवार्य नतीजा कुरबानी और फिदा होना और ग़ैरत के रूप में प्रकट होता है। और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम में यह भावना सीमा से बढ़ कर थी। एक स्थान पर ईसाई पादरियों के इन झूठे और अपवित्र आरोपों का वर्णन करते हुए जो वे आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र हस्ती पर करते हैं, फरमाते हैं कि

"ईसाई मिशनरियों ने हमारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विरुद्ध असंख्य झूठ घड़े हैं और अपने इस झूठ के माध्यम से बहुत सारे लोगों को गुमराह कर के रख दिया है। मेरे दिल को किसी चीज़ ने इतना दु:ख नहीं पंहुचाया है जितना इन लोगों के हंसी ठठ्ठा ने पहुंचाया है जो हमारे रसूल पाक की शान में करते हैं। ख़ुदा की कसम अगर मेरी सारी औलाद और औलाद की औलाद और मेरे सारे दोस्त और मेरे सारे मददगार मेरी आंखों के सामने कत्ल कर दिए जाएं और ख़ुद मेरे अपने हाथ और पांव काट दिए जाएं और मेरी आंख की पुतली निकाल कर फैंकी जाए और मैं अपनी तमाम इच्छाओं से वंचित कर दिया जाऊं और अपनी सारी खुशियों और तमाम सुविधाओं को खो बैठों तो इन सारी बातों के मुकाबल पर भी मेरे लिए यह सदमा ज्यादा भारी है कि रसूले अक़रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर ऐसे अपवित्र हमले किए जाएं। अत: हे मेरे आसमानी आक़ा! तू हम पर अपनी रहमत और सहायता की नज़र फरमा और हमें इस महान परीक्षा से मुक्ति दे।"

(सीरते तय्यब: पृष्ठ 35,36)

इसी तरह एक स्थान पर आप अलैहिस्सालम अपने आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत की भावना को प्रकट करते हुए एक शेर में वर्णन फरमाते हैं

वह पेशवा हमारा जिससे है नूर सारा
नाम उसका है मुहम्मद दिलबर मेरा यही है
उस नूर पर फिदा हूं उसका ही मैं हुआ हूं
वह है मैं चीज़ क्या हूं बस फैसला यही है

इंसान की तहरीरें उसके हार्दिक भावनाओं की बेहतरीन प्रतिबिंब होती हैं। आप अलैहिस्सालम की ईमान वर्धक तहरीरों में से कुछ नमूने पेश हैं। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सालम अपने आक़ा के बारे में फरमाते हैं।

''वह सर्वश्रेष्ठ प्रकाश जो मानव को दिया गया- अर्थात् पूर्ण मानव (हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को , वह फरिश्तों में नहीं था, सितारों में नहीं था, चन्द्रमा में नहीं था, सूर्य में भी नहीं था, वह पृथ्वी पर फैले हुए समुद्रों और नदियों में भी नहीं था; वह मरकत-मणि, नीलम -मणि, रत्न अथवा किसी माणिक मोती में भी नहीं था अर्थात् पृथ्वी और आकाश की किसी वस्तु में नहीं था। केवल मानव में था। हां, उस पूर्ण मानव में जिसका अन्तिम और सम्पूर्ण और सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोच्च रूप समस्त मानव-समाज के स्वामी तथा समस्त पैग़म्बरों के सरदार हमारे हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं।"

(आइना कमालाते इस्लाम रूहानी ख़ज़ायन भाग 5 पृष्ठ 160)

इसी तरह आप अलैहिस्सलाम एक अन्य स्थान पर फरमाते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चे दिल से अनुकरण करना इन्सान को ख़ुदा तआला का प्यारा बना देता है।

"अल्लाह तआला ने अपना किसी के साथ प्यार करना इस बात से सम्बद्ध किया है कि ऐसा व्यक्ति आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अनुसरण करे। अत: मेरा यह व्यक्तिगत अनुभव है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सच्चे हृदय से अनुसरण करना तथा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम रखना अन्तत: मनुष्य को ख़ुदा का प्रिय बना देता है, इस प्रकार से स्वयं उसके हृदय में ख़ुदा के प्रेम की एक जलन पैदा कर देता है। तब ऐसा व्यक्ति प्रत्येक वस्तु से उचाट होकर ख़ुदा की ओर झुक जाता है तथा उसका प्रेम एवं रुचि केवल ख़ुदा तआला से शेष रह जाती है। तब ख़ुदा के प्रेम की एक विशेष झलक उस पर पड़ती है तथा उसको प्रेम और अनुराग का एक पूर्ण रंग देकर दृढ़ भावना के साथ अपनी ओर खींच लेती है तब कामभावनाओं पर वह विजयी हो जाता है और उसके समर्थन एवं सहायता में प्रत्येक पहलू से ख़ुदा तआला के विलक्षण कार्य निशानों के रूप में प्रकट होते हैं।"

(हकीकतुल वह्य, रूहानी ख़ज़ायन भाग 5 पृष्ठ 160)

सच्चा इश्क तो मुश्क की तरह होता है जो छुपाए से भी छुप नहीं सकता प्रत्येक व्यक्ति उसको देखता और अनुभव करता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अपने आक़ा तथा मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जो सच्चा इश्क था उसकी एक दुनिया गवाह है। आसमान के फरिश्तों ने भी इसकी गवाही दी। अपने भी इसके गवाह हैं और ग़ैरों ने भी इसको स्वीकार किया जैसा के फरमाते हैं कि

"एक बार इलहाम हुआ जिसके अर्थ यह थे कि आसमान के फरिश्ते झगड़ा कर रहे हैं अर्थात इरादा इलाही धर्म को पुनर्जीवित करने के लिए जोश में है परन्तु अभी आसमान के ऊपर ज़िंदा करने वाले के बारे में निर्दिष्ट नहीं हुई इसलिए वह ज़िंदा करने वाले के बारे में मतभेद कर रहे हैं इसी मध्य में सपने में देखा के लोग एक ज़िंदा करने वाले को तलाश करते हैं और एक व्यक्ति इस विनीत के सामने आया इशारा से उसने कहा هٰذَا رَجُلٌ يُّحِبُّ رَسُوْلَ اللّٰهِ अर्थात यह वह आदमी है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत रखता है और इस कथन से अभिप्राय यह था कि इस ओहदे की सबसे बड़ी शर्त है कि अल्लाह के रसूल की मुहब्बत है। अत: वह इस व्यक्ति में प्रमाणित है।"

( बराहीन अहमदिया हिस्सा 4 रूहानी खज़ायन भाग 1 पृष्ठ 598)

दूसरों की गवाही के बारे में बाबू मुहम्मद उस्मान साहब लखनवी का वर्णन है कि वह 1918 ई में कादियान गए और एक हिंदू लाला बुड्ढामल या शायद लाला मलावामल से जिनका वर्णन आप अलैहिस्सलाम की पुस्तकों में बहुत आता है मुलाकात की और उनसे पूछा कि आपने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को आरंभिक जीवन में देखा है आपने उन्हें कैसा पाया? उनका जवाब था "मैंने आज तक मुसलमानों में अपने नबी से ऐसी मुहब्बत रखने वाला कोई व्यक्ति नहीं देखा।"

(सीरतुल महदी हिस्सा 3 पृष्ठ 19)

इसी तरह मशहूर और प्रसिद्ध लेखक अल्लामा नियाज़ अहमद खान फतेहपुरी ने आप अलैहिस्सलाम के इश्के रसूल के बारे में यह स्वीकार किया कि "वह सही अर्थों में आशिके रसूल थे।"

(निगार जुलाई 1960 बहाला तारीख़ अहमदियत भाग 3 पृष्ठ 580)

उपमहाद्वीप भारत के प्रसिद्ध लेखक मिर्ज़ा फरहतुल्लाह बैग साहिब की गवाही भी वर्णन योग्य है वह लिखते हैं कि उनके चाचा मिर्ज़ा इनायतुल्लाह बेग ने उन्हें एक बार यह नसीहत कि जब हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद से मिलने जाऊं तो उनकी आंखों को ध्यान से देख कर आऊं। वह लिखते हैं कि मैं कादियान गया। आंखों को ध्यान से देखा तो हरे रंग का पानी चक्कर खाता नज़र आया। मैंने वापस आकर अपने चाचा से इस का वर्णन किया तो वह कहने लगे "फरहत देखो इस आदमी को कभी बुरा न कहना। फकीर है यह हज़रत रसले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आशिक है।" वह लिखते हैं कि मैंने चाचा से पूछा कि आपने यह कैसे जाना? तो उन्होंने फरमाया कि जो आशिके रसूल अपने महबूब के विचार में हर वक्त डूबा रहता है तो उसकी आंखों में हरा रंग आ जाता है और हरे रंग की एक लहर दौड़ती है

(तारीख़े अहमदियत भाग 3 पृष्ठ 579 से 580)

विनीत अपने इस लेख को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस उद्धरण के साथ समाप्त करेगा जिस में आप अलैहिस्सलाम ने मानव जाति को ख़ुदा तआला की तरफ बुलाया है उन्हें वास्तविक धर्म की पहचान कराई है और उन्हें मुक्ति का रास्ता बताया है। आप फरमाते हैं

"हे समस्त लोगो जो धरती पर रहते हो! और हे वे समस्त इन्सानी रूहू! जो पूर्व एवं पश्चिम में आबाद हो मैं पूरे ज़ोर के साथ आपको इस तरफ दावत करता हूं कि अब धरती पर सच्चा धर्म केवल इस्लाम है और सच्चा ख़ुदा भी वही ख़ुदा है जो कुरआन ने वर्णन किया है और हमेशा की आध्यात्मिक ज़िंदगी वाला नबी और प्रताप और पवित्रता के तख्त पर बैठने वाला हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम है जिसकी रूहानी ज़िन्दगी और पवित्र जलाल का हमें यह सबूत मिला है कि इसके अनुकरण और मुहब्बत से हम रूहुल कुदुस और खुदा के वार्तालाप और आसमानी निशानों के इनाम पाते हैं।"

(तर्याकुल कुलूब रूहानी ख़ज़ायन भाग 15 पृष्ठ 141)

ख़ुदा तआला के इस हकीकी आशिक़ की सीरत के बेशुमार पहलुओं में से तीन प्रमुख पक्षों पर विचार करें और इस मुहब्बत की गहराई का अंदाज़ा लगाने की कोशिश करें जो आपके अंदर छुपी हुई है। हम नि:सन्देह इस बात का अंदाज़ा नहीं कर सकते परन्तु जितना भी अंदाज़ा हम अपने सामर्थ्य के अनुसार करेंगे उसके नतीजे में अनिवार्य रूप से हमारी रूहानियत में यथा सामर्थ्य उन्नति एवं तरक्की होगी। और हम अपने जन्म के उद्देश्य को प्राप्त करने की तौफीक़ पाने वाले होंगे अल्लाह तआला हमें इस पर अनुकरण करने की तौफीक़ प्रदान करे। हम और हमारी नस्लें हमेशा आप अलैहिस्सलाम के वजूद की हरी शाखाएं बन कर रहें। आमीन।

☆ ☆ ☆

# हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरोधियों का इबरत वाला अन्जाम

(हिदायतुल्लाह मंडाशी, मुरब्बी सिलसिला कादियान)

इलाही सिलसिलों के बारे में आरम्भ से यह अल्लाह तआला की आदत चल रही है कि जब भी कोई इलाही सुधारक प्रकट होता है दुनिया इस के विरोध में खड़ी हो जाती है। फिर अल्लाह तआला जहां आप की विजय तथा सहायता के सामान पैदा फरमाता है वहां विरोधियों को नसीहत वाला अन्जाम बना कर अपनी हस्ती तथा क़ुदरत एवं प्रताप का सुबूत देता है।

अत: अल्लाह तआला कुआन मजीद में फरमाता है

وَ لَقَدِ اسۡتُهۡزِئَ بِرُسُلٍ مِّنۡ قَبۡلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيۡنَ سَخِرُوۡا مِنۡهُمۡ مَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ۝ قُلۡ سِيۡرُوۡا فِى الۡاَرۡضِ ثُمَّ انۡظُرُوۡا كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الۡمُكَذِّبِيۡنَ

अर्थात और तुझ से पहले जो रसूल गुज़रे हैं उन के साथ भी हंसी तथा अपहास किया गया परन्तु अन्त यह हुआ कि वे लोग जो उन से विशेष रूप से उपहास करने वाले थे उन को उन चीज़ों ने ही घेर लिया जिन से वे हंसी करते थे तू कह दे कि जाओ धरती पर ख़ूब फिरो और देखो कि ख़ुदा कि नबियों को झठलाने वालों का क्या अन्जाम हुआ।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला के नबियों के सिलसिला की एक कड़ी थे। आप अपने से पहले लोगों की तरह दो तरह के गुण रखते थे प्रथम यह कि अल्लाह तआला से गहरा सम्बन्ध दूसरा मानव जाति से अत्यधिक स्नेह तथा मुहब्बत की भावना रखते थे।

मानव जाति से आप को इतनी मुहब्बत तथा सहानुभूति थी इस बारे में आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"मैं सविनय आदरणीय मुसलमान उलेमा, ईसाई उलेमा, हिन्दू पंडितों तथा आर्यों की सेवा में यह विज्ञापन भेजता हू और सूचित करता हूँ कि मैं नैतिक, आस्थागत तथा ईमानी दोषों और गलतियों के सुधार के लिए संसार में भेजा गया हूँ और मेरा आचरण हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आचरण के समान है। इन्हीं अर्थों में मैं मसीह मौऊद कहलाता हूँ क्योंकि मुझे आदेश दिया गया है कि केवल अदभुत निशानों तथा पवित्र शिक्षा के माध्यम से सच्चाई को संसार में प्रसारित करूँ। मैं इस बात का विरोधी हूँ कि धर्म के लिए तलवार उठाई जाए तथा धर्म के लिए ख़ुदा की प्रजा का रक्तपात किया जाए और मैं आदिष्ट हूँ कि मैं यथा संभव मुसलमानों से उन समस्त दोषों को दूर कर दूँ और पवित्र आचरण, संयम, शालीनता, न्याय और सच्चाई के मार्गों की ओर उन्हें बुलाऊँ। मैं समस्त मुसलमानों, ईसाइयों, हिन्दुओं और आर्यों पर यह बात स्पष्ट करता हूँ कि संसार में कोई मेरा शत्रु नहीं है। मैं मानवजाति से ऐसा प्रेम करता हूँ कि जैसे दयालु मां अपने बच्चों से अपितु उस से भी बढ़कर। मैं केवल उन मिथ्या आस्थाओं का शत्रु हूँ जिस से सच्चाई का ख़ून होता है। मानव के साथ सहानुभूति करना मेरा कर्त्तव्य है तथा झूठ, अनेकेश्वरवाद, अन्याय और प्रत्येक दुष्कर्म, और दुराचार से विमुखता मेरा सिद्धान्त।

(अरबईन नम्बर 1 रूहानी ख़ज़ायन भाग 17 पृष्ठ 343)

फिर नज़ीर के रूप में आप ने स्पष्ट शब्दों में वर्णन किया कि

"मुझ पर ऐसी कोई रात कम गुज़रती है जिस में मुझे यह तसल्ली नहीं दी जाती कि मैं तेरे साथ हूं और मेरी आकाशीय सेनाएं तेरे साथ हैं। यद्दपि जो लोग हृदय के पवित्र हैं मरने के पश्चात् ख़ुदा को देखेंगे। परन्तु मुझे उसी के मुख की क़सम है कि मैं अब भी उसको देख रहा हूं। दुनिया मुझे नहीं पहचानती किन्तु वह मुझे जानता है जिसने मुझे भेजा है। यह उन लोगों की ग़लती है और सर्वथा दुर्भाग्य है कि मेरा विनाश चाहते हैं। मैं वह वृक्ष हूं जिसे सच्चे मालिक ने अपने हाथ से लगाया है। जो व्यक्ति मुझे काटना चाहता है उसका परिणाम इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कि वह क़ारून और यहूदा इस्क्रयूती तथा अबू जहल के भाग्य से कुछ हिस्सा लेना चाहता है।

(ज़मीमा तोहफा गोलड़विया 1 रूहानी ख़ज़ायन भाग 17 पृष्ठ 343)

यह बात याद रखनी चाहिए कि जितने भी मामूर तथा मुर्सल आए उन सब का इंकार और उपहास करने वालों का अन्त भयानक होता रहा है। अत: किसी भी धर्म के इतिहास का अध्ययन कर लें आपको इसके उदाहरण मिल जाएंगे। रामायण को देखें हज़रत राम के मुकाबला पर रावण उठा बावजूद हुकूमत तथा ताकत होते हुए उसे तबाही और अपमान के अतिरिक्त कुछ ना मिला और वह नसीहत वाले अन्त को पहुंचा। हज़रत मूसा के मुकाबला फिरऔन और उसकी फौज उठी मगर ख़ुदा की तकदीर ने उन्हें हलाक कर दिया।

जब हम इस अल्लाह तआला की सुन्नत के अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी पर नज़र डालते हैं तो हमें आपको प्राप्त होने वाली विजयों के साथ-साथ आपके विरोधियों का नसीहत प्राप्त करने वाले बेशुमार निशान नज़र आते हैं आपका पहला विरोधी अर्थात मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी जो अहले हदीस संप्रदाय के नेता थे और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बचपन के परिचित थे और जिन्होंने आपकी पुस्तक बराहीन अहमदिया के प्रकाशन पर एक ज़बरदस्त रिवयूयू लिखा था और उसमें आपकी सेवाओं को अतुलनीय करार दिया था, जब आपने मसीह मौऊद होने का दावा किया उसने आपके सिलसिला को मिटाने और उसका नाश करने के लिए सर धड़ की बाज़ी लगा दी। और लिखा मैंने ही इस को उठाया था और मैं ही गिराऊंगा। अत: उसने आपके विरुद्ध कुफ्र का फत्वा तैय्यार किया फिर हिंदुस्तान के एक विख्यात आलिम मौलवी नज़ीर हुसैन देहलवी से सत्यापन दस्तख़त कराए तथा सारे देश में फिर कर दो सौ से ऊपर उल्मा की गवाहियां प्राप्त कीं। और उसे अख़बार में प्रकाशित किया इसका परिणाम यह निकला कि सारे मुल्क में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरोध की आग भड़क उठी यह कोई साधारण बात ना था बल्कि इससे आप की मुख़ालफत में बहुत ही अधिक वृद्धि हुई। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"उस अत्याचारी ने वह उपद्रव पैदा किया जिसकी इस्लामी इतिहास में पिछले उल्मा की ज़िन्दगी में कोई तुलना मिलना कठिन है। हवास ख़राब नज़ीर हुसैन की कुफ्र नामा पर मुहर लगाई। हज़ारों मुसलमानों को काफिर तथा जहन्नमी करार दिया और बड़े ज़ोर से गवाहियां लिखवाईं कि ये लोग ईसाइयों से भी अधिक काफिर हैं, बुरे हैं, सारे रिश्ते नाते टूट गए भाइयों ने भाइयों को, बापों ने बेटों को और बेटों ने बापों को छोड़ दिया

ऐसा तूफान का फित्ला उठा के मानो एक भूकम्प आया जिससे आज तक हज़ारों खुदा के नेक बंदे और इस्लाम धर्म के आलिम और फाज़िल तथा मुत्तकी काफिर तथा हमेशा के जहन्नमी समझे जाते हैं।

(इस्तफता उर्दू रूहानी ख़ज़ायन भाग 12 पृष्ठ 128)

मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी के विरोध की अवस्था यह थी कि कोई दिन ऐसा ना जाता था जब वह अपने रसाला इशाअतुस्सुन्नः में हुज़ूर को कज़्ज़ाब , मुफ्तरी और दज्जाल ना लिखता हो और इसी पर उसने भरोसा ना किया बल्कि आप को हानि पहुंचाने का कोई तरीका ना छोड़ा। अतः कुछ समय बाद जब एक इसाई पादरी डॉक्टर हेनरी मार्टिन कलार्क ने झूठा मुकदमा दायर किया तो आप के ख़िलाफ गवाही देने के लिए पहुंच गया और ऐसा बयान दिया जिससे ईसाइयों के झूठे दावे की तस्दीक होती थी परंतु अदालत ने उनकी गवाही को हज़रत बानिया सिलसिला के साथ उनकी व्यक्तिगत शत्रुता पर आधारित समझा और विश्वास को योग्य न समझा और रद्दी की टोकरी में फेंक दिया।

इसी तरह पुलिस के इंस्पेक्टर मुहम्मद बख्श की तरफ से आप पर बनाए गए एक मुकदमे के समय भी जल्ती पर तेल डालने की नीयत से पहुंच गया और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की अपने विरोधियों के बारे में लिखी कुछ तहरीरों को दिखा कर अदालत को यह प्रभाव देने की कोशिश की है जिस व्यक्ति की ऐसी तहरीरें हों वह शांति के लिए खतरा है ख़ुदा की क़ुदरत वह यहां भी असफल रहा। बल्कि इस से पहले कि अदालत इस के आरोपों पर ध्यान देती वह ख़ुद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के विरुद्ध अपनी सभ्यता से गिरी हुई तहरीरों के कारण जिन्हें वह अपने अख़बार इशाअतुस्सुन्नह में प्रकाशित करता था पकड़ा गया। अतः अदालत ने जब कि वह केवल तमाशा देखने के लिए पहुंचा हुआ था उन्हें बुला कर उन के दस्तख़त करवा लिए कि वह भविष्य में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के बारे में कोई सभ्यता से गिरी हुई बात नहीं करेगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने इस अल्लाह तआला के काम के बारे में इन शब्दों में वर्णन किया

" जिस आदमी ने अकारण जोश में आकर मुझे काफिर क़रार दिया और मेरे लिए फत्वा तैय्यार किया यह आदमी काफिर, दज्जाल कज़्ज़ाब है उस ने ख़ुदा तआला के आदेश से तो कुछ न किया कि वह कल्मा कहने वालों को काफिर क्यों कहता है और हज़ारों अल्लाह तआला के बन्दों को जो अल्लाह की किताब के अनुकरण करने वाले और इस्लाम को प्रकट करने वाले हैं क्यों इस्लाम के दायरा से बाहर निकालता है। परन्तु ज़िला के मजिस्ट्रेट की एक धमकी से हमेशा के लिए यह स्वीकार कर लिया कि मैं भविष्य में इन को काफिर दज्जाल और कज़्ज़ाब नहीं कहूंगा और आप ही फत्वा तैय्यार किया और आप ही हुक्काम के भय से रद्द कर दिया।"

इस अल्लाह तआला की सहायता के नतीजे में मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी को पहुंचने वाले अपमान को एक इबरत का निशान कहते हुए तथा वर्णन करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं कि

" एक अक्ल वाले के लिए यह अपमान कुछ थोड़ा नहीं कि इस के विरुद्ध अदब और निर्लज्जता और गिरी हुई हरकत के कागज़ अदालत में पेश किए जाएं और पढ़े जाएं तथा साधारण इजलास में सब के सामने ये बात खुल जाए और हज़ारों लोगों में प्रसिद्ध पा जाए कि मौलवी कहला कर इन लोगों का यह शिष्टाचार तथा अदब है। अब ख़ुद सोच लो कि क्या इस सीमा तक किसी आदमी कि गन्दी आदतें, गन्दे आचरण हुक्कात तथा लोगों पर प्रकट होना क्या यह सम्मान है या अपमान? और क्या इस प्रकार के नफरत योग्य तथा अपवित्र काम करने वाले पर अदालत की तरफ से पकड़ होनी यह सब कुछ सम्मान का कारण है या मौलवियत की शान को इस से अपमान का धब्बा लगता है?

(मजमूआ इशतेहारत भाग 3 पृष्ठ 202 से205)

मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी बटाला में हर ट्रेन के आने के समय रेलवे स्टेशन पर पहुंच जाते और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दर्शन या आपके दावे के अनुसंधान के लिए कादियान आने वालों को यह कहकर भड़काने की कोशिश करते कि वह वहां ना जाएं वहां बेदीनी झूठ और दुकानदारी के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलेगा। (नऊज़ बिल्लाह) परन्तु इसके बावजूद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम का स्थापित किया हुआ यह सिलसिला निरंतर तरक्की करता रहा और आपके बैअत में आने वालों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती चली गई इसके अतिरिक्त मौलवी मुहम्मद हुसैन बटलवी का क्या अंजाम हुआ इस बारे में हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी फरमाते हैं

"इस फ़त्वे को प्रकाशित हुए अभी बहुत समय नहीं हुआ था कि उन मौलवी साहिब का सम्मान लोगों के हृदयों से अल्लाह तआला ने मिटाना आरंभ किया। इस फत्वे के प्रकाशित होने से पूर्व उन को यह सम्मान प्राप्त था कि पंजाब की राजधानी लाहौर जैसे शहर में जो स्वतंत्र स्वभाव लोगों का शहर है जब वह बाज़ारों से गुज़रते थे तो जहां तक दृष्टि जाती थी लोग उनके आदर और सम्मान के कारण खड़े हो जाते और हिन्दू इत्यादि अन्य धर्मों के लोग भी मुसलमानों के सम्मान को देख कर उनका सम्मान करते थे और जहां जाते लोग उन्हें आँखों पर उठाते और उच्च शासक जैसे गर्वनर तथा गर्वनर जनरल उन से सम्मानपूर्वक मिलते थे, परन्तु इस फत्वे के प्रकाशित करने के पश्चात बिना किसी प्रत्यक्ष सामान के उत्पन्न होने के उनका सम्मान घटना आरंभ हुआ और नौबत अन्ततः यहां तक पहुँची कि स्वयं उस सम्प्रदाय के लोगों ने भी उनको छोड़ दिया जिसके वह नेता कहलाते थे और मैंने उनको अपनी आँखों से देखा है कि स्टेशन पर अकेले अपना सामान जो थोड़ा न था अपनी बगल और पीठ पर उठाए हुए तथा अपने हाथों में पकड़े हुए चले जा रहे हैं, और चारों ओर से धक्के मिल रहे हैं, कोई पूछता नहीं, लोगों में अविश्वसनीयता इतनी बढ़ गई कि बाज़ार वालों ने सौदा देना तक बन्द कर दिया। दूसरे लोगों के माध्यम से सौदा मंगवाते, घर वालों ने सम्बन्ध विच्छेद कर लिया, कुछ लड़कों और पत्नियों ने मिलना-जुलना छोड़ दिया, एक लड़का इस्लाम से मुरतद (धर्म को त्यागने वाला) हो गया। अतः समस्त प्रकार के सम्मानों से हाथ धोकर तथा इबरत (नसीहत) का नमूना दिखा कर इस संसार से कूच कर गए तथा अपने जीवन के अन्तिम दिनों के एक-एक क्षण से इस आयत की सच्चाई का प्रमाण देते चले गए कि قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ **(क़ुल सीरू फ़िल अर्ज़े सुम्मन्ज़ुरू कैफ़ा काना आक़िबतुलमुकज़्ज़िबीन)**।

(दावतुल अमीर पृष्ठ 233,234 प्रकाशन जनवरी 2017 कादियान)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इसी प्रकार के बदकिस्मत मौलवियों के लिए नीचे लिखे फ़ारसी शेयर फरमाया है

ए पये तक्फीर मा वस्तः कमर
ख़ानः अत वीरां तू दर फिक्रे दिगर

अर्थात हे बदकिस्मत इंसान जो मेरे इंकार करने पर कमर बांधे खड़ा है तेरा अपना घर वीरान हो गया है और तुझे दूसरों को काफिर करने की पड़ी हुई है।

दूसरा उदाहरण पंडित लेखराम की इबरत वाली मौत है। पंडित लेखराम एक गंदी ज़बान बोलने वाला अज्ञान और ज्ञान की दृष्टि से कम पढ़ा लिखा व्यक्ति था। इस्लाम का उपहास तथा ठट्ठा में सीमा से बढ़ गया था मानो सच्चे दिल से विश्वास करता था कि इस्लाम नऊज़ बिल्लाह एक झूठा धर्म है और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियां देता और क़ुरआन करीम का मज़ाक़ उड़ाया करता था। यह आदमी कादियान भी आया और कादियान में अपने मानने वाले आर्य लोगों के पास ठहरा जितना समय कादियान में रहा बहुत गंदी मानसिकता को प्रकट करता रहा। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के बारे में उपहास करता और बुरी भाषा का प्रयोग करता, कभी कहता आओ मेरे साथ बहस कर लो, कभी कहता मुझे कोई निशान क्यों नहीं दिखाते। जितना समय कादियान में रहा प्रत्येक दिन इस की यही आदत थी

कादियान से वापस जाने के बाद लेखराम शौख़ी और बेबारी में सीमा से अधिक बढ़ गया उसने अपनी किताबों में कई स्थानों पर इस्लाम और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो वसल्लम की ज़ात पर हमले किए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की भविष्यवाणियों का भी मज़ाक़ उड़ाया उस की पुस्तकें "ख़ब्ते अहमदिया" और " तकज़ीब बराहीन अहमदिया" इसका मुंह बोलता प्रमाण हैं। इन किताबों में बहुत अधिक गुस्ताख़ी के साथ इस ने लिखा और अपने आप को अल्लाह ताला के ग़ज़ब का निशाना बना लिया। जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 1887 ई में अपनी किताब "सुर्मा चश्मा आर्या" प्रकाशित फरमाई और उस के अन्दर वेद और कुरआन की हैसियत का मुकाबला करने के लिए मुबाहला: का परामर्श दिया तो लेखराम झट सामने आ गया और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से मुबाहला कर के आसमानी पकड़ के नीचे आ गया।

इस ने लिखा " हे परमेश्वर दोनों फिर्कों में सच्चा फैसला कर क्योंकि झूठा सच्चे की तरह तेरे समक्ष सम्मान नहीं पा सकता।"

(ख़ब्ते अहमदिया पृष्ठ 344 से 347 बहवाला हकीकतुल वह्य पृष्ठ 322)

लेखराम ने निशान को मांगते हुए बहुत शौख़ी से लिखा कि" अच्छा आसमानी निशान तो दिखा दें। अगर बहस नहीं करना चाहते तो मेरे बारे में रब्बुल अर्श ख़ैरुल माकरीन से कोई आसमानी निशान तो मागें ताकि फैसला हो। लेखराम।

(इस्तिफता पृष्ठ 7)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने 20 फरवरी 1896 ई वाले इश्तेहार में लेखराम से पूछा क्या अगर इसके बारे में इश्तेहार में कोई ऐसी बात हो जिसके प्रकट करने से इसे दुख पहुंचे तो उसे प्रकट किया जाए या ना किया जाए? इसके जवाब में लेखराम ने बड़ी दिलेरी और शौख़ी से लिखा कि मैं आप की भविष्यवाणियों को वाहियात समझता हूं मेरे बारे में जो चाहो प्रकाशित करो मेरी ओर से आज्ञा है और मैं कुछ भय नहीं करता।

लेखराम का बार-बार कहना था कि समय सीमा की कैद के साथ भविष्यवाणी बताई जाए। अत: 20 फरवरी को बहुत ध्यान और दुआ और वेदना के बाद पता चला कि आज कि तारीख़ से अर्थात 20 फरवरी 1893 ई के अंदर लेखराम पर अज़ाब जिसका नतीजा मौत है नाज़िल किया जाएगा इसके साथ ही अरबी भाषा में इल्हाम हुआ

عِجْلٌ جَسَدٌ لَهٗ خُوَارٌ لَهٗ نَصَبٌ وَّعَذَابٌ

अर्थात यह गौशाला बेजान है जिसमें धीमी आवाज़ आ रही है इसके लिए दु:ख की मार और अज़ाब है अत: आप ने इसी तारीख 20 फरवरी 1893 ई को एक इश्तेहार से लेखराम के बारे में यह पेशगोई प्रकाशित करा दी इस के 2 और 3 पृष्ठ में यह पंक्तियां ध्यान देने योग्य हैं। आप ने लिखा कि

" अब मैं इस भविष्यवाणी को प्रकाशित कर के समस्त मुसलमानों आर्यों और ईसाइयों और अन्य फिर्कों वालों पर प्रकट करता हूं कि अगर इस व्यक्ति पर 6 वर्ष के समय में आज की तारीख़ से कोई ऐसा अज़ाब नाज़िल हुआ जो साधारण कष्टों से निराला और आदत से हटकर और अपने अंदर अल्लाह ताला का भय रखता हो तो समझो मैं ख़ुदा की तरफ से नहीं और न इस की रूह से मेरा संबंध है।"

आप ने यह भी लिखा कि "अब आर्यों को चाहिए कि सब मिलकर दुआ करें कि आज यह अज़ाब उन के वकील के ऊपर से टल जाए।

(बहवाला मज्मूआ इश्तेहार जिल्द 1 पृष्ठ 372-373)

और जब कुछ आर्य अख़बार लिखने वालों ने अपनी गंदी आदत के अनुसार इस भविष्यवाणी के सम्मान को कमज़ोर करने की इस पर हाशिया लिखने शुरू कर दिए तो आप ने बड़े जलाल से फरमाया

"मैं भलिभाँति समझता हूँ कि यह समय से पूर्व है। और मैं इस बात को स्वयं ही मानता हूँ और अब फिर स्वीकार करता हूँ कि यदि जैसा कि विरोधियों ने विचार प्रकट किया है भविष्यवाणी का परिणाम अन्तत: यही निकला कि कोई साधारण बुखार आया, या थोड़ा बहुत कष्ट हुआ या हैज़ा हुआ और फिर असली हालत स्वास्थ्य की कायम हो गई तो वह भविष्यवाणी सिद्ध न होगी और नि:संदेह वह धोखा और छल होगा क्योंकि ऐसी बीमारियों से तो कोई भी खाली नहीं, हम सब कभी न कभी बीमार हो जाते हैं । अत: ऐसी अवस्था में मैं नि:संदेह उस सज़ा के योग्य ठहरूँगा जिसका मैंने वर्णन किया है, परन्तु यदि भविष्यवाणी इस प्रकार प्रकट हुई कि जिस में ख़ुदा के प्रकोप के निशान साफ़-साफ़ और खुले-खुले दिखाई दें तो फिर समझो कि ख़ुदा तआला की ओर से है।

(बरकातुद्दुआ रूहानी ख़ज़ायन भाग 6 पृष्ठ 2)

अब दुनिया इंतज़ार करने लगे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी कब और किस प्रकार पूरी होती है? इधर पण्डित लेखराम अपने अन्त से लापरवाह हो कर बद-तमीज़ी में निरंतर बढ़ता चला गया ख़ुदा के फरिश्तें बहुत तेज़ी के साथ इस रसूल का अपमान करने वाले को उस की बद ज़ुबानियां और गुस्ताख़ियों के कारण सज़ा देने के लिए चले आ रहे थे अत: अभी भविष्यवाणी का 5 वां साल का पहला महीना अर्थात मार्च 1897 ई आरम्भ दुआ ही था कि अल्लाह तआला की तेज़ तलवार ने उस का काम तमाम कर दिया।

इसका विस्तार यह है कि लेखराम अन दिनों लाहौर के मोहल्ला वच्छू वाली में किसी आर्य महाशय के मकान पर एक गली में रहा करता था। 6 मार्च 1897 ई शनिवार के दिन ऐसा वर्णन किया जाता है कि पंडित लेखराम ऊपर की मंजिल पर आधा नंगा होकर बैठा कुछ लिखने में व्यस्त था। लिखने से फारिग़ होकर उसने अंगड़ाई ली जिस से उसका पेट आगे को आगया एक नौजवान ने जो कुछ समय पहले उसके पास शुद्ध होने यानी हिंदू बनने के लिए आया था और शाम से कंबल ओढ़े उसके पास ही बैठा था उसने पूरा हाथ खंजर का लेखराम के पेट पर चलाया। कि आंतड़ियां बाहर आ गईं। लेखराम के मुंह से बैल की तरह बहुत ज़ोर की आवाज़ निकली। जिसको सुनकर उसकी बीवी और माता उस कमरे में आ गई परंतु कातिल जा चुका था। लेखराम को पुलिस ने मयू हस्पताल लाहौर में पहुंचाया जहां एक अंग्रेज़ सर्जन डॉक्टर पीरी ने उसकी जान बचाने की बहुत कोशिश की मगर यह रसूल का अपमान करने वाला सारी रात और अगले दिन का कुछ हिस्सा तड़प तड़प कर गुज़ारने के बाद मृत्यु

को प्राप्त हो गया और इस तरह ख़ुदा की नबी की पेशगोई इस्लाम और उसके पवित्र रसूल की सदाकत पर हज़ार सूरज रोशन करती हुई बड़ी शान और प्रताप के साथ पूरी होकर आप की सच्चाई और आपके अल्लाह तआला के होने की ओर से एक जबरदस्त निशान बन गई।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने लेखराम की मौत पर जहां इन्सानी सहानुभूति की दृष्टि से अफसोस को प्रकट किया वहां दूसरे पहलू से उस पर ख़ुदा तआला का शुक्रिया भी अदा किया।

अत: आप अलैहिस्सालम फरमाते हैं कि

"यद्यपि इंसान की सहानुभूति के रूप से हमें अफसोस है उसकी मृत्यु एक कठोर मुसीबत आफत अचानक हादसे के तौर पर जवानी की अवस्था में हुई परंतु दूसरे पहलुओं के रूप से हम अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हैं जो उसके मुंह की बातें आज पूरी हो गईं। हमें कसम है उस खुदा की जो हमारे दिल को जानता है कि यदि वह या कोई और किसी मौत के खतरा में पीड़ित होता और हमारी हमदर्दी से बच सकता तो हम कभी फर्क न करते..... यह खुदा तआला की तरफ से एक महान निशान है क्योंकि उसने चाहा कि उसके बंदा का उपहास करने वाले सचेत हो जाऐं।

तीसरा उदाहरण मजिस्ट्रेट लाला चंदूलाल का अंजाम है। मौलवी करम दीन साहिब ने पहले मुकदमा में नाकामी के बाद 26 जनवरी 1903 ई को एक दूसरा फौजदारी मुकदमा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम और हकीम फज़ल दीन साहिब के ख़िलाफ संसार चंद साहिब डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट जेहलम की अदालत में दायर किया। मौलवी साहिब के इस मुकदमे की बुनियाद यह थी कि मिर्ज़ा साहिब ने अपनी पुस्तक "मवाबेहुर्रहमान" (1903 ई) में कज़्ज़ाब तथा मुहैमन के शब्द इस्तेमाल करके उनका अपमान किया है। क्योंकि उनके वर्णन के अनुसार यही अल्फाज़ एक ख़ास काफिर वलीद बिन मुग़ैरा के बारे में प्रयोग किए गए हैं। इसलिए उन्हें काफिर से उपमा दी है। मौलवी साहिब का दायर किया गया मुकदमा लगभग 2 साल तक विभिन्न अदालतों में चलता रहा जिस में कई प्रमुख व्यक्तियों ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की इज्ज़त पर हाथ डालने की चेष्टा की परन्तु दर्दनाक अंजाम से दो-चार हुए और मौलवी करम दीन साहिब न केवल आख़िरकार अदालत से कज़्ज़ाब और लईम का ख़िताब ले निकाले गए बल्कि उनका अंजाम भी बड़ा दर्दनाक मौत पर हुआ? यह मुकदमा 29 जून 1903 ई को गुरदासपुर में एक आर्य मजिस्ट्रेट लाला चन्दू मल बी ए ई की अदालत में आ गया ज़िला गुरदासपुर के इस मजिस्ट्रेट लाला चंदूलाल का व्यवहार आरंभ से ही बहुत ज्यादा शतुत्रापूर्ण और द्वेषपूर्ण था गुरदासपुर के आर्यों चंदूलाल से मिलकर एक घिनौना मंसूबा तैयार किया। उन्होंने कहा कि यह व्यक्ति हमारा बहुत बड़ा शत्रु है और हमारे लीडर लेखराम का क़ातिल है अब आपके हाथ में शिकार है सारी कौम की नज़र आपकी तरफ है अगर आप ने शिकार को जाने दिया तो आप कौम के दुश्मन होंगे। मजिस्ट्रेट ने उनको जवाब दिया मैं वादा करता हूं चाहे कुछ हो इस पहली पेशी में ही अदालती कार्रवाई अमल में लाऊंगा। अदालती कार्रवाई का अर्थ यह है कि हर मजिस्ट्रेट को अधिकार होता है कि शुरू या दौरान मुकदमा में जब चाहे मुलज़िम को बिना ज़मानत स्वीकार किए गिरफतार कर हवालात दे दे।

इस नापाक मंसूबे की ख़बर हज़रत मौलवी सय्यद सरवर शाह साहिब तक पहुंच गई जो 14 मार्च की पेशी की तैयारी के सिलसिले में गुरदासपुर पहुंचे हुए थे। अत: जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम इस तारीख से एक दिन पहले गुरदासपुर पधारे तो उन्होंने इसका वर्णन करना ज़रूरी समझा। आप यह सारी बातें खामोशी से सुनते रहे लेकिन जैसे ही सय्यद सरवर शाह साहिब शिकार के शब्द पर पहुंचे तो अचानक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम उठ कर बैठ गए आप की आंखें चमक उठीं और चेहरा लाल हो गया और आपने फरमाया मैं उसका शिकार नहीं हूं मैं शेर हूं और शेर भी ख़ुदा का शेर। वह भला ख़ुदा के शेर पर हाथ डाल सकता है? ऐसा कर के तो देखें आपकी आंखें जो हमेशा झुकी हुई और आधी खुली हुई रहती थीं वास्तव में शेर की आंखों की तरह चमक कर शोले की तरह चमकती थीं चेहरा इतना अधिक लाल था कि देखा नहीं जाता था

आपकी यह अवस्था जब चली गई तो आपने फरमाया मैं क्या करूं मैंने तो ख़ुदा के सामने पेश किया है कि मैं तेरे धर्म के लिए अपने हाथ और पांव में लोहा पहनने को तैयार हूं मगर वह कहता है कि नहीं मैं तुझे अपमान से बचाऊंगा

उधर दुश्मन साजिशें और षडयन्त्र बना रहे थे। उधर अल्लाह तआला ने अपने भेजे हुए को संभावित अपमान से बचाने की यह रास्ता अपनाया कि जैसे ही आप इस मज्लिस से उठे आपको अचानक ख़ून की उल्टी आई शीघ्र ही एक स्थानीय हस्पताल में सिवल सर्जन था को बुलाया गया उस ने परीक्षण करने का बाद कहा कि इस समय आराम ज़रूरी है और एक महीने का सर्टिफिकेट लिख दिया कि इस समय में इनको कचहरी में पेश होने के योग्य नहीं समझता। इसके बाद हुज़ूर पेशी से पहले ही कादियान रवाना हो गए।

जब अगले दिन पेशी का दिन आया और मजिस्ट्रेट के सामने वह डॉक्टर का सर्टिफिकेट दिया गया था। वह बहुत तिल मिलाया डॉक्टर को गवाही के लिए बुलवाया मगर उस अंग्रेज़ डॉक्टर ने कहा मेरा सर्टिफिकेट बिल्कुल ठीक है और मेरे सर्टिफिकेट को उच्च अदालतों तक में स्वीकार किया जाता है। मजिस्ट्रेट बड़बड़ाता रहा मगर कुछ पेश न गई और अदालत की कार्रवाई लेट करने पर विवश हो गया।

फिर अगली पेशी से पहले ही सिविल सर्जन हुज़ूर को देखने के लिए कादियान आया और आप का निरीक्षण करने के बाद उन्होंने आपको 6 हफ्ते और आराम करने की हिदायत की और इतना समय सफर के अयोग्य होने का सर्टिफिकेट दे दिया।

उधर ख़ुदा तआला जो अपने मामूर तथा मुरसल को अपमान से बचाने की ख़ुशख़बरी दे चुका था उसने भी अपना जलाली हाथ दिखाना शुरू कर दिया। अत: ऊपर वर्णित आसमानी ख़ुश ख़बरी के साथ जो अल्लाह तआला ने हुज़ूर अलैहिस्सलाम को पहले से वर्णन कर दी थी। ख़ुद चंदू लाल के भी ख़ुदाई क्रोध के नीचे आने के कारण पैदा हो गए थे। इस सारे आसमानी मंसूबे की ख़बर अल्लाह तआला ने हुज़ूर अलैहिस्सलाम को पहले से दे दी थी। रिवायत में आता है कि मुकदमा के दौरान जब कुछ ग़ैर जमाअत के सम्माननीय लोग आपकी सेवा में पहुंचे और हमदर्दी के इरादा से कहा कि चंदू लाल का इरादा आप को कैद करने का मालूम होता है तो आप जो उस समय दरी पर लेटे हुए थे उठकर बैठ गए और फरमाया मैं चंदूलाल को अदालत की कुर्सी पर नहीं देखता

( बहाला अख़बार अल्हकम दिनांक 14 जुलाई 1904 ई)

इस का आयोजन इस प्रकार हुआ के गुरदासपुर जेल में एक मुजरिम को फांसी लगनी थी। इसके लिए चंदूलाल की ड्यूटी लगाई गई। उन्होंने डिप्टी कमिश्नर को लिखा मैं बहुत कमज़ोर दिल का हूं किसी मुजरिम को फांसी लगते नहीं देख सकता इसलिए मुझे माफ रखा जाए। डिप्टी कमिशनर ने किसी दूसरे मजिस्ट्रेट की ड्यूटी लगा दी परंतु साथ ही गवर्नमेंट में रिपोर्ट कर दी कि यह व्यक्ति अर्थात चंदूलाल इस योग्य नहीं कि इसको फौजदारी अधिकार दिए जाएं अत: इस की इस रिपोर्ट पर राय चंदूलाल एक्स्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नर से अवनति होकर साधारण जज से

बना दिए गए इसके साथ ही इन्हें ज़िला गुरदासपुर से तब्दील कर के मुल्तान भिजवा दिया गया। इस तरह वह मंसूबा जो सच्चाई के शत्रु ख़ुदा के मामूर को अपमानित व कष्ट पहुंचाने के लिए बना रहे थे धरा का धरा रह गया। बाद में पता चला कि वह इस सदमा को बर्दाशत न कर के वह पागल हो गया और अंत में इसी अवस्था में वफात पा गया.

चौथा उदाहरण अमेरिका के डॉक्टर जॉन एलेकज़नडर डोई की इबरतनाक अन्जाम की है। यह स्कॉटलैंड का रहने वाला था। बचपन में अपने माता पिता के साथ ऑस्ट्रेलिया चला गया जहाँ सन् 1872 ई के करीब वह एक सफल तकरीर करने वाले और पादरी के रूप में सार्वजनिक रूप में सामने आया। कुछ समय बाद ने उस ने यह घोषणा की कि यीशु मसीह के प्रायश्चित पर ईमान लाने से बीमारों को शिफ़ा देने की शक्ति पैदा हो जाती है। और इस ज़माने में यह शक्ति उसे भी दी गई है। 1888 ई में वह अमेरिका की नई दुनिया में अपने विचार फैलाने के लिए सान फ्रानसस्को आ गया। सान फ्रांसिस्को के निकट और दूसरे पश्चिमी राज्यों में सफल जलसे करने के बाद उस ने 1893 में शिकागो में अपनी विशेष गतिविधियां शुरू कर एक मकान किराए पर लिया जिस का नाम '' ज़ाइन रूम '' रखा। एक और बिल्डिंग में '' ज़ाइन मुद्रण प्रकाशन हाऊस''खोला और एक अख़बार''न्यूज़ आफ हीलंग ''के नाम से जारी किया। थोड़े ही समय में सारे अमरीका में उसे बड़ी ख्याति प्राप्त हुई और इसके मानने वालों में तेज़ी से वृद्धि होनी लगी। डोई ने यह सफलता देखते हुए, 22 फरवरी 1896 ई को एक नया संप्रदाय स्थापित किया। और इस का नाम "क्रिश्चियन कैथोलिक चर्च" रखा। 18 99 या 1900 ई में, उस ने पैग़बर होने का दावा किया और इस संप्रदाय को 'कि क्रिश्चियन कैथोलिक आबसटिक चर्च 'नाम दिया।

अपनी तरक्की की रफतार तेज़ करने के लिए इस ने एक सैहून नामक शहर की स्थापना की और प्रकट किया कि मसीह इस शहर में नाज़िल होगा। इस ढंग से उस के अनुयायियों की संख्या भी बहुत बढ़ गई और वित्तीय आमद में यहां तक बढ़ी कि साल की शुरुआत में यह दस लाख डॉलर ( यानी तीस लाख से भी अधिक रुपया अपने मुरीदों से नए साल के तोहफा के रूप में मिलने लगा। वह देश में शहज़ादों की तरह जीवन व्यतीत करने लगा, अपनी तरक्की को देख उस ने अपने अख़बार''न्यूज़ आफ हींलिंग 'में लिखा''अगर यह विकास इसी तरह जारी रहे तो तो हम अगले बीस वर्षों में दुनिया को जीत लेंगे।

डोई आरम्भ से ही इस्लाम और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का बहुत बड़ा दुश्मन था। वह आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को (मुआज़ अल्लाह) कज़्ज़ाब और मुफ़्तरी विचार करता था। और अपनी तकरीरों में गंदी गालियां और अश्लील शब्द से हुज़ूर को याद करता था। उसके आंतरिक द्वेष और हसद का अंदाज़ा करने के लिए केवल यह बात ही काफी है कि उसने अपने अख़बार " न्यूज़आफ हीलिंग" 25 अगस्त 1900 ई में साफ और खुले शब्दों में यह भविष्यवाणी की''मैं अमेरिका और यूरोप के ईसाई क़ौमों को खबरदार करता हूं कि इस्लाम मुर्दा नहीं है। इस्लाम शक्ति से भरा हुआ है यद्यपि इस्लाम का ज़रूर नाश होना चाहिए लेकिन इस्लाम की बर्बादी न तो कमज़ोर लैटिन ईसाइयत के द्वारा होगी न ही असहाय ग्रीक ईसाईयों के द्वारा होगी।

जब डोई अपनी शोख़ियों और गुस्ताख़ियों में यहाँ तक पहुँच गया तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सितम्बर 1902 ई को एक विस्तृत विज्ञापन लिखा जिस में हुज़ूर ने तसलीस पर आलोचना करते हुए और अपने दावा मसीहियत का उल्लेख करने के बाद लिखा।

हाल के दिनों में, यीशु मसीह का एक रसूल अमेरिका में पैदा हुआ था, जिसका नाम डोई है। उसका दावा है कि यीशु ने बहैसियत ख़ुदा दुनिया में उसे भेजा है ताकि सबको इस बात की ओर खींचे कि सिवाय मसीह के और कोई ख़ुदा नहीं। .... और बार बार अपने अख़बार में लिखता है कि उसे ख़ुद यसू मसीह ने बताया कि सभी मुसलमान तबाह और हलाक हो जाएंगे और दुनिया में कोई जीवित नहीं रहेगा केवल उन लोगों की बजाय जो मरयम के बेटे को समझ लें और डोई को इस कृत्रिम ख़ुदा का रसूल समझ लें।

अत: हम डोई साहिब की सेवा में अदब के साथ अर्ज़ करते हैं कि इस मामले में करोड़ों मुसलमानों को मारने की क्या आवश्यकता है एक आसान तरीका है जिससे इस बात का फैसला हो जाएगा क्या डोई का ख़ुदा सच्चा है या हमारा ख़ुदा सच्चा है। वह बात यह है कि डोई साहिब सभी मुसलमानों को बार बार मौत की भविष्यवाणी न सुना दें बल्कि उनमें से केवल मुझे अपने ध्यान में रख कर यह दुआ कर दें कि हम दोनों में से जो झूठा है वह पहले मरे क्योंकि डोई यीशु मसीह को ख़ुदा मानता है मगर मैं उस को एक कमज़ोर बंदा मगर नबी मानता हूं। अब निर्णय यह है कि हम में से कौन सच्चा है? चाहिए कि इस दुआ को छाप दे और कम से कम एक हज़ार लोगों की इस पर गवाही लिखे और जब वह अख़बार प्रकाशित होकर मेरे पास पहुंचेगी तब मैं भी इस के जवाब में यही दुआ करूंगा और इन्शा अल्लाह हज़ार आदमी की गवाही लिख दूंगा तथा मैं विश्वास रखता हूं कि डोई के इस मुकाबला से सभी ईसाइयों के लिए हक को पहचानने के लिए राह निकल आएगी '' मैंने इस प्रकार की दुआ के लिए प्राथमिकता नहीं की बल्कि डोई ने की है। इस प्राथमिकता को देख कर ग़ैरत वाले ख़ुदा ने मेरे अंदर एक जोश पैदा कर दिया है और याद रहे कि मैं इस देश में मामूली इंसान नहीं हूं। मैं वही मसीह मौऊद हूँ जिस का डोई इंतज़ार कर रहा है। केवल यह अंतर है कि डोई कहता है कि मसीह मौऊद 25 सालों के अन्दर पैदा जाएगा मैं ख़ुश ख़बरी देता हूं कि वह मसीह पैदा हो गया और वह मैं ही हूं। सैंकड़ों निशान धरती से और आसमान से मेरे लिए प्रकट हो चुके। एक लाख के लगभग मेरे साथ जमाअत है, जो तेज़ी से बढ़ रही है।

इस के साथ बहुत विशवास के साथ आप ने फरमाया कि: डोई अपने दावा रसूल और तसलीस के विश्वास में झूठा है अगर वह मुझ से मुबाहला करे तो मेरे जीवन में ही बहुत हसरत और दुख के साथ मरेगा और अगर मुबाहला न भी करे तब भी वह ख़ुदा की सज़ा से बच नहीं सकता।

अब अमेरिका के लोग और अख़बार यह इंतजार करने लगे कि डोई इस चुनौती का क्या जवाब देता है मगर जब इस बात पर कुछ समय गुज़र गया और डोई के अंदर न समाचार पत्रों की टिप्पणियों से कोई हरकत पैदा हुई और न इस ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की चिट्ठियों का कोई जवाब दिया तो आप ने अपना वही लेख मुबाहला कुछ महत्त्वपूर्ण इज़ाफों के साथ अमेरिका और यूरोप के अख़बारों में फिर भेज दिया जिस में आप ने एक तो यह लिखा कि अब तक डोई ने मेरे मुबाहला के आवेदन का कुछ जवाब नहीं दिया। इस लिए आज की तारीख़ से जो 23 अगस्त 1903 ई है, इसे पूरे सात महीने और मोहलत देता हूँ अगर वह इस मोहलत में मेरे मुकाबला में आया तो ..... जल्द दुनिया देख लेगी कि मुकाबला का क्या अंजाम होगा। मैं उम्र में सत्तर वर्ष के करीब हूं और वह जैसा कि वर्णन करता है पचास साल का जवान है ..... लेकिन मैंने अपनी बड़ी उम्र की कुछ परवाह नहीं की क्योंकि मुबाहाला का फैसला उम्रों की हुकूमत से नहीं होगा' बल्कि ख़ुदा जो ज़मीन-आसमान का मालिक और

अहकमुल हाकेमीन है, वह इसका फैसला करेगा।

(विज्ञापन अंग्रेज़ी, दिनांक 23 अगस्त 1903 ई)

आप के इस विज्ञापन का भी अमेरिकी और यूरोपीय अख़बारों में ख़ूब ख़ूब चर्चा हुई। जैसे "ग्लासगो हेराल्ड" ने 27 अक्टूबर 1903 ई के प्रकाशन में लिखा''मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब अपनी भविष्यवाणी दिनांक 23 अगस्त 1903 ई में लिखते हैं कि वह अपनी दावत मुकाबला के जवाब का सात महीने तक प्रतीक्षा करेंगे। अगर इस समय में डाक्टर डोई ने इस मुकाबला को स्वीकार कर लिया और उस की शर्तों को पूरा कर लिया तो तमाम दुनिया इस मुकाबला का अन्त देख लेगी। हालांकि डॉक्टर डोई इस मुकाबला से इनकार करेगा तो अमरीका के पैग़म्बर के दावे झूठ और इफ़्तरा साबित हो जाएंगे।

हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम के विज्ञापन के जवाब में डोई मैदान मुकाबला में आ गया और 26 दिसम्बर 1903 ई को अपने समाचार पत्र में लिखा, लोग मुझे कई बार कहते हैं तुम अमुक अमुक बात का जवाब क्यों नहीं देते? क्या तुम विचार करते हो कि मैं कीड़ों का जवाब दूंगा। अगर में अपना पैर उन पर रखूं एक क्षण में उनको कुचल सकता हूं। मगर में उन्हें मौका देता हूं कि मेरे सामने से दूर चले जाएँ और कुछ दिन जिन्दा रह लें।

12 दिसंबर 1903 ई में लिखा " यदि मैं ख़ुदा की धरती पर ख़ुदा का पैगम्बर नहीं, तो फिर कोई भी नहीं।"

उसके शीघ्र बाद इस ने 27 दिसंबर 1903 ई अख़बार में बहुत बद तमीज़ी से हुज़ूर के लिए लिखा कि "मूर्ख मुहम्मदी मसीह" के शब्द प्रयोग किए : भारत में एक मूर्ख व्यक्ति है जो मुहम्मदी मसीह होने का दावा करता है। वह मुझे बार बार लिखता है कि यीशु कश्मीर में दफन हैं जहाँ उनका मकबरा देखा जा सकता है वह यह नहीं कहता कि उस ने ख़ुद वह (मकबरा) देखा मगर बेचारा पागल और अनभिज्ञ व्यक्ति है फिर भी यह आरोप लगाता है कि हज़रत मसीह भारत में वफात पा गए। घटना यह है कि ख़ुदावंद मसीह बैयत इतया के स्थान पर आकाश में उठाया गया जहाँ वह अपने आकाशयी शरीर में मौजूद है।

फिर 23 जनवरी 1904 ई को मुसलमानों की तबाही की भविष्यवाणी दोहराते हुए लिखा "सैकड़ों लाख मुसलमान जो इस समय एक झूठे नबी के कब्ज़ा में हैं उन्हें या तो ख़ुदा की आवाज सुननी पड़ेगी या वे हलाक हो जाएंगे।"

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी के अनुसार डोई ख़ुदा तआला के कहर की चपेट में आने की प्रथम स्थिति ख़ुद उस के हाथों से पैदा हुई कि उसका जन्म अवैध निकला और वह हराम का बेटा साबित हुआ। यह तथ्य अख़बार "न्यूयार्क वर्लड" के द्वारा प्रकट होई। जिस ने डोई के वे ख़त प्रकाशित किए जो उस ने अपने बाप ''जान मरे डोई '' को अपने अवैध पितृत्व के बारे में लिखे थे। जब देश में इस बात की चर्चा होने लगी तो ख़ुद "डॉ जॉन एलेगज़ेनडर डोई" ने 25 सितम्बर 1904 ई को घोषणा किया कि वह चूंकि डोई का बेटा नहीं इस लिए डोई शब्द का उसके नाम के साथ कभी उपयोग हरिगज़ न किया जाए।

इस नैतिक मौत के एक साल बाद 1 अक्टूबर 1905 ई को इस पर स्ट्रोक का तेज़ हमला हो गया। अभी उस के प्रभाव चल रहे थे कि 19 दिसंबर 1905 ई को उस पर फिर से स्ट्रोक का हमला हुआ और वह उस तंग बीमारी से लाचार होकर सैहून से एक द्वीप की तरफ चला गया। जैसे ही डोई ने सैहून से बाहर कदम रखा उस के मुरीदों को जांच से पता चला कि वह एक बहुत नापाक और गन्दी फितरत की इंसान है वह मुरीदों को शराब पिलाया करता था। अत: उसके निजी कक्ष से शराब निकली। यह भी पता चला कि उसके संबंध कुछ कुंवारी लड़िकयों से थे। लगभग 85 लाख रुपए की ख़यानत भी साबित हुई। क्योंकि यह रुपया सैहून के हिसाब से कम था। यह भी साबित हुआ कि एक लाख से अधिक रुपया इस ने सिर्फ उपहार के रूप में सैहून की सुन्दर महिलाओं को दे दिया था। इन आरोपों से डोई अपनी बरीयत साबित न कर सका। 1906 ई को डोई की कैबिनेट के प्रतिनिधियों द्वारा डोई को तार दिया गया कि हम तुम्हारी बजाय वाल्वा को नेतृत्व स्वीकार करते हैं और तुम्हारा पाखंड, झूठ, ग़लत बातें, फज़ूल खर्ची, अतिशयोक्ति, और ज़ुल्म और अत्याचार के ख़िलाफ ज़बरदस्त विरोध करते हैं। इस तार में उसे चेतावनी दी गई कि अगर उसने नए प्रबंधन में कोई हस्तक्षेप किया तो उस के सभी आंतरिक रहस्यों का पर्दा चाक कर दिया जाएगा और उसके ख़िलाफ मुकदमेबाज़ी की जाएगी।

डोई ने यह कोशिश की कि अदालतों द्वारा सैहून और रुपए पर कब्ज़ा प्राप्त कर ले मगर इसमें भी इसे विफलता हुई। वह सैहून शहर में जहां हज़ारों आदमी उस के इशारे पर चलते थे। वापस आया तो एक भी आदमी उस के स्वागत के लिए मौजूद नहीं था। उस ने चाहा कि अपने मुरीदों के सामने अपील कर के उन को फिर अपना अनुयायी बनाए परन्तु चारों तरफ उस के लिए मायूसी ही मायूसी थी। शारीरिक बीमारी के कारण उसकी हालत इतनी ख़राब हो गई वह उठकर एक कदम भी नहीं चला सकता था, यहां तक कि उसके कर्मचारी उसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते थे। उस स्थिति में वह एक दीवाना ही बन गया और अंतत: 9 मार्च 1907 ई की सुबह को दुनिया में दर्द और दु:ख के साथ वफात पा गया। और ख़ुदा के पवित्र मसीह के ये शब्द, "कि वे मेरे देखते देखते इस नश्वर दुनिया को छोड़ देगा।" इबरतनाक रंग में पूरे हुए।

जैसे ही डोई की मौत हुई, अमेरिका और यूरोप के अख़बार जो पहले से ही अपनी सम्पादकीय लिखे तैयार बैठे थे, उठ खड़े हुए किसी ने उस पर सम्पादकीय लिखा तो किसी ने विस्तृत ख़बर लिखी और खुले शब्दों में इस बात को स्वीकार किया कि डोई की मौत (हज़रत) मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी (अलैहिस्सलाम) की भविष्यवाणी के ठीक अनुसार हुई है और यह कि उसकी मौत मुहम्मदी मसीह की जीत और डोई की हार है। कुछ ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की तस्वीर को साथ प्रकाशित कर के डोई की मौत इस्लाम की महान जीत के साथ आपको श्रद्धांजलि दी।

फिर हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी पुस्तक "अन्जाम आथम " मैं ऐसे सभी विद्वानो, गद्दी नशीनों और पीरों को जो आप का अपमान, और निन्दा करते थे मुबाहला के लिए आमंत्रित किया। मुबाहला के निमंत्रण में आपने फरमाया कि दोनों पक्ष एक दूसरे के पक्ष में बददुआ करें कि दोनों पक्षों में से जो झूठा है हे परमेश्वर, तू उसे एक वर्ष के अन्दर तक बहुत बड़े दुख की मार में पीड़ित कर के किसी को अंधा कर, और किसी को कोढ़ी और किसी को पक्षघात वाला और किसी को मजनून और किसी को मसरूअ और किसी को सांप या पागल कुत्ते का शिकार बना और किसी के माल पर आफात नाज़िल फरमा और किसी की जान पर और किसी के सम्मान पर।

और इसके बाद लिखा: "गवाह रह हे पृथ्वी और हे आकाश! कि ख़ुदा की लानत(अभिशाप) उस व्यक्ति पर कि इस पत्रिका के आने के बाद न मुबाहला में हाज़िर हुआ और न अपमान करने तथा तिरस्कार करने

को छोड़ा और न ठट्ठा करने वालों की मज्लिसों से अलग हुआ। "

(अन्जाम आथम, पृष्ठ 66 से 67)

बहरहाल प्रताप वाले ख़ुदा ने सुन लिया और दुनिया ने यह अजीब क़ुदरत का करिश्मा देखा कि आप की मुबारक ज़बान से निकले हुए शब्द बेअसर साबित नहीं हुए बल्कि जो विरोधी उलेमा गद्दी नशीन आप के विरोध में बदस्तूर कायम रहे उन्हें इस अपराध की सज़ा में उन सज़ाओं में कसी न किसी सज़ा को ज़रूर भुगतना पड़ा। अत: मौलवी रशीद अहमद गंगोही अंधा हुआ, फिर सांप के काटने से मरा, मौलवी अब्दुल अज़ीज़ साहिब और मौलवी मुहम्मद साहिब लुधियानवी जो प्रसिद्ध इन्कार करने वाले थे केवल तेरह दिन के अंतराल से इस संसार से कूच कर गए और उनका पूरा परिवार उजड़ गया। मौलवी साअदुल्लाह साहिब नौ मुस्लिम और रसूल बाबा साहेब प्लेग का शिकार हुए, मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर कसूरी ने अपनी किताब फतेह रहमानी पृष्ठ 26 और 27 में आपके ख़िलाफ बददुआ की थी, वह पुस्तक प्रकाशन से पहले ही मृत्यु के हाथों पकड़े गए। अत: प्रतिकूल कार्यवाही जारी रखने वालों में से अक्सर आप के जीवन में तबाह व बर्बाद हुए। अत: वर्ष 1906 ई तक, उन विरोधियों में से अधिकांश समाप्त हो गए थे और जो जीवित थे वे भी किसी बला में गिरफ्तार थे। आप की मृत्यु के बाद मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी और सनाउल्लाह अमृतसरी सिलसिला अहमदिया की ऊंचाइयों को देखते हुए जीवित रहे और अंत में बहुत अधिक सदमों में पड़ कर स्ट्रोक से मर गए। "

(तारीख़ अहमदियत भाग 2, पृष्ठ 550 से 551)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी एक नज़्म में फरमाते हैं:

गढ़े में तू ने सब दुश्मन उतारे
हमारे कर दिए ऊंचे मिनारे
मुकाबिल पर मरे ये लोग हारे
कहाँ मरते थे पर तूने ही मारे
शरीरों पर पड़े उनके शरारे
न उन से रुक सके मकसद हमारे,
उन्हें मातम हमारे घर में शादी
फसुब्हानल्लज़ी अख़ज़ल अआदी

विनीत नीचे कुछ अन्य विरोधियों का वर्णन करता है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की विरोध का इबरतनाक निशान बनें।

* मौलवी रसूल बाबा अमृतसरी, जिस ने हुज़ूर के विरुद्ध एक गन्दी किताब लिखी, और बद ज़ुबानी से काम लिया प्लेग का शिकार हुआ।

* गांव भड़ी चठह तहसील हाफिज़ आबाद में एक व्यक्ति नूर अहमद रहता था जिसने कहा कि प्लेग हमें नहीं मिर्ज़ा साहिब को मारने आई है। इस पर एक सप्ताह व्यतीत हुआ था कि वह मर गया।

* मौलवी ज़ैनुल आबेदीन ने एक अहमदी से मुबाहला किया थोड़े दिनों के बाद वह ख़ुद और उसकी पत्नी और दामाद आदि घर के 70 लोग प्लेग के शिकार हो गए।

* हाफिज सुल्तान सियालकोटी अपने परिवार के 9-10 लोगों सहित प्लेग से विदा हुआ।

* हकीम मुहम्मद शफी सियालकोटी प्लेग का शिकार हुआ और उसकी पत्नी उसकी माँ और उसके भाई प्लेग से मर गए।

* मिर्ज़ा सरदार बैग सियालकोट जो अपनी गंदी भाषा और दुस्साहस में बढ़ गया था प्लेग से पीड़ित हुआ।

* चिराग़ दीन जम्मूनी अपनी गुस्ताख़ियों के इल्ज़ाम में मारा गया।

*मौलवी मुहम्मद अबुल हसन ने हज़रत अक़दस के ख़िलाफ एक किताब लिखी जिसमें कई स्थानों पर काज़िब की मौत के लिए बद दुआ की अंत जल्द ही प्लेग से मर गया।

*अबू हसन अब्दुल करीम नाम ने जब इस पुस्तक का दूसरा संस्करण प्रकाशित करना चाहा तो वह भी प्लेग का शिकार हो गया।

* इसी तरह एक व्यक्ति फकीर मिर्ज़ा दोलमियाल ज़िला झेलम का रहने वाला था उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ बहुत कुछ अपमानजनक लिखा तथा लिखित भविष्यवाणी कि की:

" मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब का सिलसिला 27 रमज़ान मुबारक 1321 हिजरी तक टूट फूट जाएगा और बहुत बड़ा अपमान होगा जिसे सारी दुनिया देख लेगी।"

यह पेशगोई 7 रमज़ान को लिखी जब रमज़ान अगले वर्ष आया, तो उस के मुहल्ला में ताऊन प्रकट हुई, उसकी पत्नी फिर ख़ुद फकीर मिर्ज़ा ताऊन में बीमार हो गया और अन्त में एक साल बाद, 7 रमज़ान 16 दिसंबर, 1904 ई को विफलता और अपमान का मुंह देखते हुए उठ गया। अत: जो कोई भी व्यक्ति हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ आया मारा गया जिस ने हुज़ूर के ख़िलाफ बद दुआ की उसी पर पड़ी ।

(तारीख़ अहमदियत, जिल्द 2, पृष्ठ 479 से 480, मुद्रित कादियान 2007 ई)

तूने ताऊं को भेजा मेरी नुसरत के लिए
ता वे पूरे हों निशां जो हैं सच्चाई का मदार

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"खेद कि मेरे विरोधियों को निरन्तर इतनी असफलताओं के बावजूद मेरे बारे में किसी समय आभास नहीं हुआ कि इस व्यक्ति के साथ गुप्त तौर पर एक हाथ है जो उसकी प्रत्येक आक्रमण से रक्षा करता है। यदि दुर्भाग्य न होता तो उनके लिए यह चमत्कार था कि उनके प्रत्येक आक्रमण के समय ख़ुदा ने मुझे उन की उद्दण्डता से बचाया और न केवल बचाया अपितु इस से पूर्व सूचना भी दे दी कि वह बचाएगा।"

(हकीकतुल वह्य, पृष्ठ 122)

फिर फ़रमाते हैं:

"यह विचित्र बात है। क्या कोई इस रहस्य को समझ सकता है कि उन लोगों के विचार में झूठा, झूठ गढ़ने वाला और दज्जाल तो मैं ठहरा परन्तु मुबाहले के समय में यही लोग मरते हैं। .....इस तह के नेक लोगों पर क्यों अल्लाह का कहर नाज़िल होता है जो मौत भी होती है फिर ज़िल्लत तथा अपमान भी।"

(हकीकतुल वह्य, पृष्ठ 227)

आप फरमाते हैं कि

" कोई भी उन में से यह नहीं सोचता कि ये अल्लाह तआला के समर्थन क्यों हो रहे हैं। क्या कज़्ज़ाबों और दज्जालों और फासिकों के यही निशान हैं कि उन के मुकाबला पर मुबाहला करने की अवस्था में ख़ुदा मोमिनों मुत्तकियों को हलाक करता जाए।"

(हकीकतुल वह्य ज़मीमा पृष्ठ 51)

यद्यपि कि मौलवियों की ओर से बाधाएं डाली गईं, और उन्होंने एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाया कि लोग न आएं, यहां तक कि मक्का तक से भी फ़त्वे मंगवाए गए और लगभग दो सौ मौलवियों ने मुझ पर कुफ्र के फ़त्वे दिए बल्कि वध योग्य होने के भी फ़त्वे प्रकाशित किए गए परन्तु वे अपने समस्त प्रयासों में असफल रहे ..... यदि यह कारोबार इन्सान का होता तो कुछ आवश्यकता नहीं थी कि तुम विरोध करते और मेरे मारने के लिए

इतना कष्ट उठाते। बल्कि मेरे मारने के लिए ख़ुदा ही पर्याप्त था। "

(हकीकतुल वह्य, पृष्ठ 250 से 251)

सन 1934 ई में मज्लिस अहरार उठी और संस्थापक अहरार सय्यद अताउल्लाह शाह साहिब बुखारी जिस ने अहमदियों को मसीह की भेड़ें कहते हुए बड़ी हिकारत से कहा था कि अहमदियत को मिटाने के लिए कई हाथ उठे लेकिन ख़ुदा को यही मंज़ूर था कि यह मेरे हाथ से नाश तथा नाबूद हो और फिर खुदाई तकदीर के अनुसार मज्लिस अहरार और संस्थापक अहरार का जो इबरत वाला अन्जाम हुआ दुनिया इस पर गवाह है। सन 1974 ई में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ज़ुल्फिकार अली भुट्टो जिस ने तथाकथित उल्मा को ख़ुश करने के लिए पाकिस्तान की नेशनल असैंबली में अहमदियों को ग़ैर मुस्लिम क़रार देकर यह समझ लिया था कि अब मेरी कुर्सी को कोई हिला न सकेगा लेकिन क्लबुल अला यमूत कलबिन को पूरा करते हुए इस व्यक्ति को दुनिया की कोई ताकत अज़ाब इलाही से बचा नहीं सकी।

फिर एक डिक्टेटर ज़ियाउल हक़ जो अहमदियत को कैंसर के नाम से परिचय कराता था उसने अहमदियों के जीवन रहने के संसाधनों को समाप्त करने के लिए एक बहुत ही घिनौना अध्यादेश जारी किया लेकिन अल्लाह तआला ने चमत्कारिक ढंग से हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे को बड़ी शान के साथ सुरक्षित लंदन चले जाने की तौफ़ीक़ दी और दूसरी तरफ फिर ज़माना के फिरऔन मुबाहला के परिणाम में अपने लशकर के साथ आश्चर्यजनक हवाई दुर्घटना का शिकार होकर आकाश में ऐसा बिखरा कि उसके अस्तित्व का कोई हिस्सा भी सलामत नहीं पाया गया। सच तो यही कि

अंजाम यही होता आया है फिरऔनों का हामानों का।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"यह उन लोगों की ग़लती है और सर्वथा दुर्भाग्य है कि मेरा विनाश चाहते हैं। मैं वह वृक्ष हूं जिसे सच्चे मालिक ने अपने हाथ से लगाया है। जो व्यक्ति मुझे काटना चाहता है उसका परिणाम इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कि वह क़ारून और यहूदा इस्क्रयूती तथा अबू जहल के भाग्य से कुछ हिस्सा लेना चाहता है। इस बात के लिए प्रतिदिन मेरी आंखों में आंसू रहते हैं कि कोई मैदान में निकले और नुबुव्वत के ढंग पर मुझ से फ़ैसला करना चाहे फिर देखे कि ख़ुदा किसके साथ है। किन्तु मैदान में निकलना किसी नपुंसक का काम नहीं। हां ग़ुलाम दस्तगीर हमारे देश पंजाब में कुफ्र की सेना का एक सिपाही था जो काम आया। अब इन लोगों में से उसके समान भी कोई निकलना दुष्कर और असंभव है। हे लोगो! तुम निश्चय समझ लो कि मेरे साथ वह हाथ है जो अन्तिम समय तक मुझ से वफ़ा करेगा। यदि तुम्हारे पुरुष, और तुम्हारी स्त्रियां, तुम्हारे जवान और तुम्हारे बूढ़े, तुम्हारे छोटे और तुम्हारे बड़े सब मिलकर मुझे मारने के लिए दुआएं करें, यहां तक सज्दे करते-करते नाकें गल जाएं और हाथ शिथिल हो जाएं तब भी ख़ुदा तुम्हारी दुआ कदापि नहीं सुनेगा और नहीं रुकेगा जब तक वह अपने काम को पूरा न कर ले

(रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 17, ज़मीमा तोहफा गोलड़विया, पृष्ठ 49)

हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:

"अत: अल्लाह तआला के आगे पूरी तरह झुक जाएं ताकि ज़ालिम का ज़ुल्म पूर्ण रूप से फना हो जाए ..... जब हम अपनी रातों के तीरों को ख़ालिस होकर चलाएंगे तो बेशक अल्लाह तआला आदत से हट कर निशानों को दिखाएगा। हमारा ख़ुदा सच्चे वादों वाला है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावा से लेकर अब तक विरोधों की आंधियां चलती रहीं यहां तक कि ख़िलाफत सानिया के समय अहरार ने कादियान की ईंट से ईंट उखाड़ने की बढ़ मारी। किसी ने सरकार के नशे में अहमदियों को कटोरा पकड़ाने की बात की परंतु नतीजा क्या निकला। आज अहमदियत 212 देशों में स्थापित हो चुकी है। यह सिलसिला ख़ुदा तआला द्वारा स्थापित सिलसिला है। हम हर क्षण ख़ुदा तआला की सहायता के नज़ारे देख रहे हैं। अत: चिंता इस बात की है कि हम अल्लाह तआला की तरफ झुक रहे हैं या नहीं हम अपने दिलों में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ क्रूर शब्दों को पढ़ कर बेचैनी महसूस करने वाले न हों। बल्कि रातों की दुआओं में ख़ुदा तआला के फज़्ल तथा रहम को खींचने वाले हों। हम आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ुदा को पुकारें जिस ने कमज़ोरों को हाकिम बना दिया अत: हे ख़ुदा हम तेरी रहमत का वास्ता देकर आज तुझ से मांगते हैं कि यह ज़मीन जो हमारे लिए तंग की जा रही हमारे लिए आराम देने वाली बना दे। हे रहम करने वाले ख़ुदा तू हम पर रहम करते हुए फज़्ल नाज़िल फरमा। आमीन।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 7 अक्तूबर 2011)

☆ ☆ ☆

☆ ☆


हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"इस्लाम वास्तविक मअरफत प्रदान करता है जिस से इन्सान के गुनाह के जीवन पर मृत्यु आ जाती है।"

(मल्फूज़ात भाग 3 पृष्ठ 181)

**जमाअत के सभी दोस्तों को जलसा सालाना क़ादियान 2018 ई मुबारक हो।**

दुआ का अभिलाषी

धानू शेरपा, सेक्रेट्ररी अमूरे आमा,

जमाअत अहमदिया देव दमतांग

ज़िला नामची,सिक्कम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"इस्लाम बड़ी नेअमत है इस का सम्मान करो और शुक्र करो।"

(मल्फूज़ात भाग 3 पृष्ठ 181)

**जमाअत के सभी दोस्तों को जलसा सालाना क़ादियान 2018 ई मुबारक हो।**

दुआ का अभिलाषी

नासिर अहमद शाह

एच,बी शाह लाल मार्केट रोड,

गेंगटोक,सिक्किम

# हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर सात मुक़दमे आप की सदाक़त के सात निशान

(नसीर अहमद आरिफ,मुरब्बी सिलसिला इस्लाह इर्शाद मर्कज़िया कादियान)

अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता है:

يٰحَسۡرَةً عَلَى الۡعِبَادِ ۚ مَا يَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ رَّسُوۡلٍ اِلَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ (यासीन: 31) हाय अफसोस बन्दों पर ! उन के पास कोई रसूल नहीं आता परन्तु वह उस से ठट्ठा करते हैं।

इस आयत में अल्लाह तआला ने अपने नबियों और रसूलों को उनके मिशन को पूरा करने में पेश आने वाली कठिनाइयों और पीड़ाओं का उल्लेख फ़रमा कर सचेत किया है और बताया है कि जिस उद्देश्य को पाने के लिए वे भेजे जा रहे हैं इस रास्ते में कांटेदार झाड़ियां हैं बल्कि खतरे के रास्ते हैं उपहास हैं, ठट्ठा तिरस्कार के पहाड़ हैं, लेकिन ये कठीनाइयां उनके ईमान को कमज़ोर नहीं होने देते।

यह कष्ट हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर भी आए और हज़रत अक़दस के जीवन में विरोधियों ने आप पर विभिन्न प्रकार के झूठे और निराधार मुकदमे बनाए और हर संभव प्रयास से आपको कानून के शिकंजे में फंसाने की कोशिश की लेकिन ख़ुदा के शेर की तरफ से यही आवाज़ ऊंची होती रही।

है सरे राह में वह खड़ा मौला करीम
अत: न बैठो मेरी राह में ए शरीराने दयार
अंबिया से बुग़ज़ भी ऐ ग़ाफिलों अच्छा नहीं
दूर तर हट जाओ इस से है यह शेरों की कछार

विरोधियों की तरफ से आपके ख़िलाफ सात मुक़दमे दायर किए गए हैं, और ये सातों मुकदमे आप की सच्चाई की स्पष्ट दलीले हैं। इन सात मुकदमों का विस्तृत विवरण नीचे प्रस्तुत है।

## मुक़दमा नम्बर (1) मुक़दमा डाकघर

1877 ई में आप अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ एक ईसाई रुलिया राम ने आप पर मुक़दमा दायर किया जो आप पर पहला मुक़दमा था। आप इस्लाम के प्रचार के लिए कलमी जिहाद कर रहे थे और इस्लाम धर्म पर लेख लिखकर किताब की शक्ल में प्रकाशित करवाते थे। आप ने इस्लाम के समर्थन में एक लेख लिखा और उसे अमृतसर के एक प्रेस में प्रकाशन के लिए पैकेट के रूप में भिजवाया और पैकेट में एक पत्र भी रखा जिस में लेख छापने की ताकीद थी। प्रेस का ईसाई मालिक रुलिया राम जो अमृतसर ईसाई मिशन की जान समझा जाता था, और इसे अपने दिल की भड़ास निकालने का मौका मिला। चूँकि पैकेट में अलग ख़त रखना कानून की दृष्टि से अपराध था और इस अपराध की सज़ा डाक घर के नियमों के अनुसार पाँच सौ रुपए जुर्माना या छह महीने तक की कैद थी लेकिन उसका हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को ज्ञान न था। रुलिया राम ने मुख़बिर बन कर डाक घर के अधिकारियों के साथ अदालत में मुक़दमा दायर कर दिया। इस से पहले कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम को इस मुक़दमा की रिपोर्ट होती। अल्लाह तआला ने रोया में आप को बता दिया कि रुलिया राम ने एक सांप आप को काटने के लिए भेजा है और आप ने मछली की तरह तल कर वापस कर दिया है।

बहरहाल इस मामला में हुज़ूर को गुरदासपुर बुलाय गया और जिन वकीलों से इस मुक़दमा के बारे में सलाह ली की गई सब ने यही सलाह दी कि झूठ के बिना और कोई रास्ता उद्धार का नहीं और यह सलाह दी कि आप साफ इन्कार कर दें कि पैकेट में ख़त मैंने नहीं रुलिया राम ने ख़ुद डाल दिया होगा और कुछ झूठे गवाह देकर बरी हो जाएंगे अन्यथा बचना मुश्किल है। आप ने सब वकीलों को उत्तर दिया कि मैंने कभी झूठ नहीं बोला। अत: आदरणीय शेख अली अहमद साहिब जो हज़रत मसीह मौऊद के इस मुक़दमा में वकील थे, कहते हैं कि मैंने भरपूर प्रयत्न किया कि मिर्ज़ा साहिब इन्कार कर दें कि मैंने इस ख़त को पैकेट में नहीं रखा था। मिर्ज़ा साहिब ने उसी तरह से इन्कार करने से मना कर दिया था जैसा मैंने कहा था। मैंने आप को डराया भी कि परिणाम अच्छा नहीं होगा और एक प्रतिष्ठित परिवार पर आपराधिक मुक़दमा में सज़ा का दाग़ लग जाएगा। आप मेरी बात न मानते थे। बहरहाल हज़रत मसीह मौऊद और डाकघर का अफसर अदालत में पेश हुए और जज ने हुज़ूर का ब्यान कलम बंद किया और सामने से सवाल किया कि क्या यह ख़त आप ने पैकेट में रखा था और क्या यह पैकेट आप का है? हुज़ूर ने तुरंत जवाब दिया यह ख़त मेरा है और यह पैकेट भी मेरा है लेकिन मैंने इस ख़त को लेख से अलग नहीं समझ नहीं और मेरा इरादा गवर्मेन्ट को नुक़सान पहुंचाने का नहीं था। यह बात सुनते ही अल्लाह तआला ने इस अंग्रेज़ जज के दिल को हुज़ूर की तरफ फेर दिया हुज़ूर के मुकाबला में डाकख़ाना के अधिकारी ने बहुत शोर मचाया लेकिन वह हाकिम नो-नो (No-No) करके उसकी बातों को अस्वीकार कर देता। जब डाकघर का अफसर अपने दिल की गर्मी को निकाल चुका, तो जज ने मुक़दमा को लिखा और मुक़दमा को खारिज कर दिया। हजरत अक़दस अदालत के कमरा से बाहर आए और उस मालिक हकीकी का शुक्रिया अदा किया जिसने सच्चाई के कारण बड़ी जीत दी थी। हुज़ूर अक़दस ने इस मुक़दमा से पहले यह ख़्वाब भी देखा था कि एक व्यक्ति ने हुज़ूर की टोपी उतारने के लिए हाथ मारा हुज़ूर ने फरमाया क्या करने लगा है? तब उसने टोपी हुज़ूर के ही सिर पर रहने दी और कहा ख़ैर है, ख़ैर है। हुज़ूर के वकील आदरणीय शेख अली अहमद साहिब जो सज़ा को सुनिश्चित जान कर अदालत के कमरे से ग़ायब हो गए थे, दंग रह गए और हुज़ूर के सच बोलने के सारा जीवन प्रशंसक रहे।

(तारीख़े अहमदियत, भाग 1, पृष्ठ 146)

## मुक़दमा नम्बर (2) मुक़दमा पादरी हेनरी मार्टिन क्लार्क

1897 की ई का वर्ष तारीख़ अहमदियत में हमेशा के लिए याद किया जाएगा। इस वर्ष पंडित लेखराम के कत्ल के कारण जो प्रतिकूल वातावरण पैदा हुआ था, वह अपने चरम पर पहुंच गया था और ईसाई पादरियों की निहायत ख़तरनाक साज़िशें हज़रत अक़दस को कत्ल के मुक़दमा में फंसाने के लिए जमा हो गई थीं। जंगे मुकद्दस के मुकाबला (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और अब्दुल्लाह आथम के बीच लिखित मुबाहला अमृतसर) में ईसाइयों को जो पराजय हुई थी उस ने उन्हें क्रोधित कर दिया था और ईसाई पादरी आप के ख़िलाफ बदले की कार्यवाही करने की ताक में थे। इसी दौरान एक आवारा स्वभाव वाला युवक अब्दुल हमीद उनके पास पहुंच गया। यह आदमी कभी ईसाई बनता कभी वह अपने को मुसलमान बताता। इसी चक्कर में वह कादियान भी आया। हज़रत अक़दस से बैअत का निवेदन किया। जिस को हुज़ूर ने रद्द कर दिया। इस पर वह नाराज़ हो कर कादियान से चला गया और अब्दुल हमीद ने फिर से ईसाईयों की ओर रुख़ किया और किसी तरह पादरियों से मिलता मिलाता पादरी हेनरी मार्टिन क्लार्क के पास पहुंच गया और उसे बताया कि मैं कादियान से आया हूँ। हिंदू से मुसलमान हुआ

था और अब ईसाई होना चाहता हूँ। अब्दुल हमीद की ज़ुबान से मौखिक मार्टिन क्लार्क ने क़ादियान से आने का ज़िक्र सुना तो बहुत सावधानी से यह योजना बना ली कि उसे माध्यम बनाकर हुज़ूर के ख़िलाफ कत्ल का मुक़दमा दायर किया। अत: पादरियों ने अब्दुल हमीद पर दबाओ डाला कि तुम यह बताओ कि मुझे मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद ने डॉक्टर क्लार्क को मारने के लिए भेजा है। अब्दुल हमीद ने पादरियों के दबाव में ख़ुद को असहाय पाया और मजबूर होकर उनकी मंशा के अनुसार बयान लिख दिया और आठ पादरियों ने उस पर गवाही के हस्ताक्षर कर दिए और उसे अच्छी तरह सिखा दिया कि तुम ने अदालत में बयान देना है कि मिर्ज़ा साहिब ने मुझे मार्टिन क्लार्क को मारने के लिए भेजा था, लेकिन मार्टिन क्लार्क को देखने के बाद, मेरा इरादा बदल गया।

पादरी मार्टिन क्लार्क इस को मुक़दमा के लिए अपने साथ अमृतसर लाया और ज़िला अधिकारी अमृतसर की अदालत में ले गया। जहां धारा 107 आपराधिक ए. आर.के अधीन मुक़दमा दर्ज करवा दिया और अब्दुल हमीद को जो-जो सिखाया था। अदालत में उसने वही बयान दे दिया। पादरी मार्टिन क्लार्क ने उसका लिखित बयान भी अदालत में प्रस्तुत कर दिया।

मुक़दमा बहुत गंभीर था और अपने धर्म के पादरी के द्वारा था इसलिए ज़िला अधिकारी अमृतसर ने बयान सुनते ही धारा 114 आपराधिक के अधीन हज़रत मसीह मौऊद के गिरफ्तारी वारंट जारी कर दिए। इस अदालती कार्यवाही के बाद दुश्मन ने अब्दुल हमीद को अगले बयान की तैयारी के लिए ज़ोर शोर से कोशिशें शुरू कर दीं और इस सिलसिले में मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी की सेवाओं को भी प्राप्त कर लिया और दुश्मनों को विश्वास हो गया कि वह मिर्ज़ा साहिब को क़त्ल की सज़ा दिलवाने में सफल हो जाएंगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को इस के बारे में कुछ पता नहीं था। ख़ुदाई कार्य कि वारंट के काग़ज़ कहीं खो गए और कुछ दिन बाद ज़िला अधिकारी को अपने आप विचार आया कि उसने वारंट के आदेश कानून के ख़िलाफ दिया है। वह गुरदासपुर के किसी आरोपी के नाम वारंट जारी नहीं कर सकता और फिर मुक़दमा अमृतसर से गुरदासपुर स्थानांतरित हुआ और गुरदासपुर से हज़रत अक़दस के नाम नोटिस जारी हुआ कि 10 अगस्त 1897 ई को उपायुक्त के स्थान बटाला में होगा आप वहीं पेश हों। आप उस दिन सुबह पहुंचे। इस दौरान यात्रा में मुक़दमा का थोड़ा सा वर्णन हुआ तो आपने फरमाया: "हमें अल्लाह तआला ने पहले ही ख़बर दे दी थी और हम तो समर्थन और नुसरत का इंतज़ार ही कर रहे थे इसलिए अल्लाह तआला की भविष्यवाणी के आरम्भ होने से हम ख़ुश हैं और सफल होने में विश्वास करते हैं, हमारे दोस्तों को इसके बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है।"

(पुस्तक किताबुल बरिया पृष्ठ, पृष्ठ 237)

ज़िक्र आया कि ईसाइयों के साथ आर्य भी मिल गए हैं और मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब भी उनके साथ हैं, हुज़ूर ने फरमाया: "हमारे साथ ख़ुदा है जो उनके साथ नहीं अल्लाह तआला ने अपने निर्णय से हमे परिचित कर दिया है और हम उस पर विश्वास रखते हैं कि वही होगा अगर सारी दुनिया भी इस मुक़दमा में हमारे ख़िलाफ हो तो मुझे एक कण बराबर परवाह नहीं और अल्लाह तआला की बिशारत के बाद उसका भ्रम करना भी गुनाह समझता हूँ।"

(हयाते अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 597,598)

हज़रत अक़दस अपने मुख़लेसीन के साथ बटाला डाक बंगला पहुंचे और अदालत में रौनक अफ़रोज़ हुए आपके लिए डिप्टी कमीश्नर विलियम मान्टीगो डगलस साहिब ने कुर्सी पहले से ही रखवा दी थी। कमरे के बाहर दर्शकों का बड़ा हुजूम था जिस में मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब भी बहुत ख़ुशी की अवस्था में हाज़िर थे और इंतज़ार में थे कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथों में हथकड़ी देखें दूसरे गवाहों के बात मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब की गवाही थी। वह अदालत में आए और देखा कि कोई कुर्सी खाली नहीं है उस पर जज से मुख़ातिब होते हुए बोले "हुज़ूर कुर्सी" डिप्टी कमीश्नर ने राजा ग़ुलाम हैदर खान मिस्ल ख़वां से पूछा। मौलवी साहिब को अधिकारियों के सामने कुर्सी मिलती है? जिस पर सूची की जांच की गई थी और आपका नाम नहीं था। डिप्टी कमिश्नर ने इस पर कहा, आप आधिकारिक तौर पर कुर्सी वाले नहीं हैं, सीधे खड़े हो जाओ और गवाही दें। ख़ैर गवाही शुरू हुई और मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब ने जिस कदर आरोप लगाए जा सकते थे मिर्ज़ा साहिब पर लगाए। मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब की गवाही के बाद अदालत से बाहर निकले तो दालान में एक आराम कुर्सी पड़ी थी उस पर बैठ गए कांस्टेबल ने वहां से उन्हें उठा दिया कि कप्तान साहिब पुलिस का आदेश नहीं है फिर मौलवी साहिब एक बिछे हुए कपड़े पर जा बैठे जिन का कपड़ा था उन्होंने यह कहकर कपड़ा खींच लिया कि मुसलमानों का सरग़ना कहला कर ऐसा स्पष्ट झूठ। बस हमारे कपड़े अशुद्ध मत करो। तब मौलवी नूरुद्दीन साहिब (ख़लीफतुल मसीह अव्वल) ने उठकर मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब का हाथ पकड़ लिया और कहा कि आप यहाँ हमारे पास बैठ जाएं और इसके बाद अब्दुल हमीद का ब्यान हुआ आदरणीय डग्लस ने भांप गया कि अब्दुल हमीद और मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब के बयान झूठ पर आधारित हैं।

बयान के बाद अदालत समाप्त हुई और अभी तक तय नहीं हुआ था कि डिप्टी साहिब की मिस्ल पढ़ने वाले राजा ग़ुलाम हैदर ख़ान ने कहा कि मैंने देखा कि श्री विलियम डग्लस सख़्त परेशान हैं। कारण पूछने पर आपने बताया कि जब से मैंने मिर्ज़ा साहिब की शक्ल देखी है कोई फरिश्ता मिर्ज़ा साहिब की तरफ हाथ करके मुझ से कह रहा है कि मिर्ज़ा साहिब गुनाहगार नहीं हैं। इन का कोई दोष नहीं। अब अदालत समाप्त करके आया हूँ तो मुझे मिर्ज़ा साहिब की शक्ल दिखाई देती है और वह कहते हैं यह काम मैंने नहीं किया। ये सब झूठ है इसलिए मेरी हालत पागलों जैसी हो गई है। उस पर ज़िला अधीक्षक पुलिस श्री लीमार चंड साहिब ने कहा है। यह आप की ग़लती है आप ने गवाह को पादरियों के हवाले किया गया है और वह उसे जो सिखाते हैं वह अदालत में आकर बयान कर देता है। उसी समय श्री डग्लस ने आदेश दिया कि अब्दुल हमीद को पुलिस के हवाले किया जाए। विरोधियों की तरफ से अब्दुल हमीद को मजबूर किया गया कि वह अपने बयान न बदले उस पर वह अपने बयान पर डटा रहा लेकिन श्री लीमार चंड साहिब ने उससे कहा बेवजह समय बर्बाद मत करो और असलियत बयान करो। यह कहना था कि अब्दुल हमीद उन के पैरों पर गिर गया और रोने लगा तथा रोते हुए कहना शुरू कर दिया और सारी साज़िश का खुलासा कर दिया। इस पर उस का बयान फिर कलम बंद किए गए जिस में उसने इस साज़िश का खुलासा कर दिया और स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि वह बयान जो वह अब तक दे रहा है केवल सिखाने पर देता रहा है।

20 अगस्त को फिर अदालत हुई और अब्दुल हमीद सरकारी गवाह के रूप में अदालत में अपना मूल बयान पढ़ा तो पादरियों और उनके साथियों के पैरों तले से ज़मीन निकल गई। पादरी मार्टिन क्लार्क ने भी अपने अंतिम बयान में अपनी मासूमियत व्यक्त करने के लिए इधर-उधर हाथ मारने की कोशिश की मगर राज़ खुल चुका था इसलिए 23 अगस्त 1897 को श्री विलियम मान्टीगो डग्लस ने हज़रत अक़दस को बरी कर दिया और फैसला में लिखा, जहां तक डॉ मार्टिन क्लार्क का मामला है, हम नहीं देखते कि ग़ुलाम अहमद से अमानत के बारे में गारंटी ली जाए। इसलिए वह बरी किए जाते हैं और फिर ठीक कचहरी में उन्होंने ने हंसते हुए हुज़ूर को बधाई पेश की और कहा कि क्या आप मार्टिन क्लार्क पर

मुक़दमा चलाना चाहते हैं आप का हक है आप ने ईमान अफ़रोज़ उत्तर दिया, फ़रमाया "मैं किसी पर मुक़दमा करना नहीं चाहता मेरा मुक़दमा आसमान पर है।" (हयाते अहमद, जिल्द 4, पृष्ठ 602)

इस तरह यह परीक्षा कुछ दिनों में समाप्त हुई और अल्लाह तआला की सहायता का निशान बन गया। इस मुक़दमा ने एक बार फिर स्पष्ट कर दिया कि आप को अल्लाह तआला पर कितना भरोसा तथा ईमान था जिसे मुसीबतों के तूफान और पीड़ाओं की आंधियां भी हिला नहीं सकीं।

(तारीख़े अहमदियत, जिल्द 1 पृष्ठ 620)

## मुक़दमा नंबर (3) मुक़दमा आयकर

अल्लाह तआला की वित्तीय मदद और सहायता हमेशा हज़रत मसीह मौऊद के साथ रही जिसे अक्सर देख कर हासिदों ने यह मुद्दा खड़ा कर दिया कि आपकी आय अधिक है और आप कानून के अनुसार आयकर अदा नहीं करते और सरकारी ख़ज़ाना को नुकसान पहुँचा रहे हैं। अत: कुछ लोगों की मुख़बरी पर 1898 ई में हुज़ूर अक़दस पर पंजाब सरकार ने 7200 रुपए पर 167. 50 रुपए टैक्स लगाए जाने का मुक़दमा दायर कर दिया। डॉ मार्टिन क्लार्क और उसके साथी बहुत ख़ुश हुए कि हमारा पहला निशाना विफल हो गया था अब इस मुक़दमा में क्षतिपूर्ति होगी लेकिन अल्लाह तआला अपने आशिक़ के सम्मान और इज़्ज़त की सुरक्षा के निशान के बाद आर्थिक रूप से भी सहायता का निशान दिखलाना चाहता था। यह मुक़दमा एक हिंदू तहसीलदार के पास था और आदरणीय शेख अली अहमद साहिब हज़रत अक़दस के वकील थे। 20 जून 1898 ई को रिपोर्ट दाख़िल की गई इस दौरान हुज़ूर मस्जिद मुबारक में कुछ मित्रों के साथ बैठे आय तथा खर्च की गणना कर रहे थे कि आप पर कशफ़ की अवस्था छा गई और दिखाया कि हिंदू तहसीलदार जिसके पास मुकदमा था बदल गया है और इस कशफ़ के साथ कुछ ऐसे मुकदमे भी प्रकट हुए जो जीत की बिशारत देते थे। (हयात अहमद, जिल्द पंचम, पृष्ठ 49)

इस दौरान अचानक हिन्दू तहसीलदार बदल गया और उसकी कुर्सी पर एक मुसलमान मुंशी ताज दीन साहिब बाग़बानपूरी बटाला आ गए। अगस्त 1898 में उन्होंने ने क़ादियाना आकर मुक़दमा की निष्पक्ष जांच की और श्री एफ. टी डिक्सन कलेक्टर ज़िला गुरदासपुर की सेवा में विस्तृत रिपोर्ट भिजवाई कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अपनी निजी आय के जो ज़मीन तथा बाग़ के अतिरिक्त कुछ हो जिस पर टैक्स अदा करने योग्य हो। मैंने मौका पर भी और चुपके से भी मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद की व्यक्तिगत आय के बारे में कुछ व्यक्तियों से पूछा है लेकिन कुछ लोगों से पता चला है कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद की व्यक्तिगत आय बहुत है। मुंशी ताज दीन साहिब ने अपनी रिपोर्ट के अन्त में यह भी लिखा कि इस तरफ भी ध्यान जाता है मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद एक प्रतिष्ठित परिवार से है उन के वंशज रईस रहे हैं। और मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद ख़ुद भी नौकर रहा है गुमान गुज़रता है कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद एक मालदार व्यक्ति है और टेक्स के योग्य है। इस रिपोर्ट के साथ सारी मिस्ल श्री एफ.टी डिक्सन साहिब के पास डलहौज़ी भिजवा दी उन्होंने कागज़ात देख कर हुज़ूर को टेक्स से मुक्त घोषित कर दिया और निर्णय में लिखा कि तहसीलदार साहिब के सामने मिर्ज़ा साहिब ने बयान दिया है कि उनकी ज़मीन की आय उत्पादन से और कृषि से आयकर से बरी हैं क्योंकि यह सब कमाई धार्मिक कामों में खर्च करते हैं। इस आदमी के नेक नियत में शक करने का मुझे कोई कारण नहीं मिलता। यही कारण है कि मैं आयकर से छुट देता हूं।

(तारीख़ अहमदियत, जिल्द 2, पृष्ठ 15)

## मुक़दमा नंबर (4) मुक़दमा हिफ्ज़े अमन

मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी को मुक़दमा मार्टिन क्लार्क में जो खुली हार और अपमान उठाना पड़ा इसकी भरपाई के लिए उसने अपना विरोध चरम चक पहुंचा दिया। जिस पर आप के सहाबी मौलवी अब्दुल क़ादिर साहिब लुधियानवी ने मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब से हज़रत अक़दस को बटाला में बिना शर्त मुबाहला का निवेदन किया। जिसे हज़रत अक़दस ने स्वीकार फरमा लिया और मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब को एक पत्र द्वारा बिना शर्त मुबाहला करने की आमंत्रित और पेशकश की। जमाअत के दोस्तों का उत्साह देखते हुए मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब के सफल होने की स्थिति में इस मुबाहाला की पुरस्कार राशि दो हज़ार पाँच सौ पच्चीस रुपए आठ आना तक पहुंच गई और आदरणीय शेख याकूब अली साहिब तुराब ने अक्टूबर 1898 ई में मुबाहला की दावत का इश्तेहार दे दिया कि "आओ और मर्दे मैदान बनकर मुबाहला करो और अपनी स्वीकृति की रिपोर्ट नवम्बर 1898 ई तक दे दी।" लेकिन मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब बजाय दावत का जवाब देने के सख़्त कलामी पर उतर आए और उन्होंने अबुल हसन तिब्बती और मुल्ला मुहम्मद बख्श ज़फर ज़टली की तरफ से गालियों भरा इश्तिहार प्रकाशित कर दिया। हुज़ूर को जब यह गालियों भरा इश्तिहार प्राप्त हुआ तो हुज़ूर ने इस पर निम्नलिखित इश्तिहार प्रकाशित किया।

"इस समय वह विज्ञापन मेरे सामने रखा है और मैं ने अल्लाह तआला से प्रार्थना की है कि वह मुझ में और मुहम्मद हुसैन में आप फैसला करे ....हे मेरे जलाल वाले परवर-दिगार अगर तेरी नज़र में ऐसा ही अपमानित ज़लील, झूठा और मफ़्तरी हूँ जैसा कि मुहम्मद हुसैन बटालवी ने अपने रिसाला इशाअतुस्सुन्न: में मुझ को कज़्ज़ाब और दज्जाल और मुफ़्तरी शब्दों से याद किया है ..... मेरे अपमानित करने का कोई प्रयास नहीं उठा रखा तो हे मेरे मौला मैं तेरी नज़र में ऐसा ही अपमानित हूं तो मुझे तेरह महीने के अंदर यानी 15 दिसंबर 1898 ई से 15 जनवरी 1900 ई तक अपमान नाज़िल कर और उन लोगों का सम्मान और वजाहत प्रदर्शित कर ..... और यदि तेरा मुझे सम्मान तथा इज़्ज़त प्राप्त है तो मेरे लिए ही निशान प्रकट फरमा इन तीनों को (मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब, अबुल हसन तिब्बती साहिब, मुल्ला मुहम्मद बख्श साहिब जाफर ज़टली) को अपमानित और बदनाम कर। आमीन सुम्मा आमीन।"

यह दुआ थी जो मैंने की। इस के जवाब में इल्हाम हुआ कि "मैं ज़ालिम को अपमानित तथा लज्जित करूंगा और वह अपने हाथ काटेगा।"

यह अल्लाह तआला का निर्णय है जिसका सार यह है कि हम दोनों पक्षों में जिनका उल्लेख इस विज्ञापन में है ..... ख़ुदा के हुक्म के नीचे हैं उनमें से जो कज़्ज़ाब है वह अपमानित किया जाएगा। "

इस विज्ञापन पर ज़ाफर ज़टली ने 30 नवम्बर 1898 ई को फिर गालियों भरे विज्ञापन दे दिया और हुज़ूर की तक़ज़ीब करते हुए ख़ूब दिल का बुख़ार निकाल चुके चूंकि दोनों पक्षों की सच्चाई और झूठ का फैसला अल्लाह तआला ने अपने हाथ में ले लिया था उस पर सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह 1898 ई में एक पत्रिका "राज़े हकीकत" लिखकर अपनी जमाअत को नसीहत फ़रमाई कि

"मैं अपनी जमाअत को कुछ शब्द नसीहत के तौर पर कहता हूँ कि वे तक्वा धारण करके व्यर्थ बातों के मुक़ाबले में व्यर्थ बातें न करें और गालियों के मुक़ाबले पर गालियाँ न दें। वे बहुत कुछ हँसी और ठट्ठा सुनेंगे जैसा कि वे सुन रहे हैं मगर चाहिए कि खामोश रहें, तक्वा और नेक नीयती के साथ ख़ुदा तआला के फैसले की ओर ध्यान दें। अगर वे चाहते हैं कि ख़ुदा तआला की दृष्टि में सहायता योग्य ठहरें तो नेकी, तक्वा और धैर्य को हाथ से न जाने दें। अब उस अदालत के सामने मुक़द्दमे की मिस्ल है जो किसी की रियायत नहीं करती और धृष्टता के तरीक़ों को पसन्द नहीं करती जब तक इन्सान अदालत के कमरे से बाहर है हालाँकि उसके दुष्कर्म की भी पकड़ है मगर उस इन्सान के अपराध की पकड़ बहुत सख्त है जो अदालत के सामने खड़े होकर धृष्टता पूर्वक अपराध करता है। इसलिए मैं तुम्हें कहता हूँ कि ख़ुदा तआला की अदालत की

तौहीन से डरो और विनम्रता एवं धैर्य और तक्वा धारण करो और ख़ुदा तआला से चाहो कि वह तुम में और तुम्हारी क़ौम में निर्णय करे। उचित है कि शेख मुहम्मद हुसैन और उसके साथियों से बिल्कुल मुलाक़ात न करो क्योंकि कभी-कभी बातचीत लड़ाई-झगड़े का कारण बन जाती है और उत्तम है कि इस अवधि में कुछ बहस-मुबाहसा भी न करो क्योंकि कभी-कभी बहस-मुबाहसा से स्वभावों में गर्मी पैदा होती हैं। आवश्यक है कि सत्कर्म, सच्चाई और तक़्वा में आगे क़दम बढ़ाओ क्योंकि ख़ुदा उनको जो तक्वा धारण करते हैं कभी नष्ट नहीं करता।(राज़े हकीकत प्रथम प्रकाशन पृष्ठ 2) इस दौरान मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी के अपमान के अनेक माध्यम प्रकट हुए। इनमें से एक घटना इस प्रकार हुई कि मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने अपने अंग्रेज़ी पत्रिका में सरकार से ज़मीन पाने के लिए इमाम महदी अन्तिम ज़माना की पेशगोईं का स्पष्ट रूप से इन्कार किया और लिखा कि मैं महदी के आने की सभी हदीसें मूज़अ (कमज़ोर) समझता हूँ और सरकार के प्रति अपनी वफादारी लिख कर अपने रसाला इशाअतुस्सुन: में प्रकाशित कर दी। हज़रत अक़दस ने जब मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी की केवल सांसारिक लाभ के लिए यह ग़ैर मोमिनाना कार्रवाई देखी तो दिसंबर 1898 ई में उलेमा हिंद से फत्वा लेने के लिए पूछा कि जो व्यक्ति इमाम महदी के बारे में जो हदीसों में आया है बिल्कुल इन्कार करता है और उसे अनजाना और बेहूदा समझता है क्या हम उसे अहले सुन्नत और सीधे रास्ते पर समझ सकते हैं इस पर सभी उल्मा में सहमति से यह लिखा कि "यह (अर्थात मुहम्मद हुसैन बटालवी) " काफ़िर मुबतदा, ज़ाल, मुज़ल, मुफ़्तरी और अहले सुन्नत वल जमाअत से ख़ारिज और कज़्ज़ाब और दज्जाल है।"

इस पर हुज़ूर अक़दस उल्मा के फतवों का विवरण लिखकर इशतिहार प्रकाशित किया जिस में आप ने लिखा कि

" मौलवी मुहम्मद हुसैन ने अपने अंग्रेज़ी रसाला में हुकूमत का बाग़ी होने का आरोप लगाया और मेरा नाम काफिर और दज्जाल और कज़्ज़ाब और नास्तिक रखा था और यही फतवा कुफ्र आदि का मेरे बारे में पंजाब और भारत के मौलवियों से लिखवाया अब यही फत्वा पंजाब और भारत के मौलवियों ने उनके बारे में दिया है।"

(अल-हकम 10 जनवरी 1899 ई, पृष्ठ 4)

मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने अपने अंग्रेज़ी पत्रिका में हज़रत अक़दस पर सरकार का बागी होने का आरोप लगाया और लिखा कि आप मानो किसी इल्हाम से यह लेख प्रकाशित किया है कि आठ साल बाद सरकार अंग्रेज़ी नष्ट हो जाएगी। उस पर हुज़ूर ने 1898 ई में एक किताब "कशफ़ुल ग़िता" प्रकाशित की और इसमें सरकार को खोलकर बताया कि मुझ पर लगा विद्रोह का आरोप केवल झूठ है और मांग की है कि सरकार मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब से जवाब तलब करे कि किस किताब या विज्ञापन में ऐसा इल्हाम प्रकाशित हुआ है। पहले तो सरकार की इस तरफ बिल्कुल ध्यान न थी लेकिन मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी की गुप्त अंग्रेज़ी पत्रिका के प्रकाशन पर उन्हें चार मुरब्बा ज़मीन से सम्मानित किया गया था। उनकी मुख़बरियों के कारण सरकार हज़रत अक़दस के ख़िलाफ गावर्मेन्ट हज़रत अक़दस के विरुद्ध हरकत में आ गई और एक अंग्रेज़ कप्तान पुलिस और इंस्पेक्टर पुलिस (राना जलालुद्दीन साहिब) सिपाहियों का एक दस्ता लेकर शाम के समय कादियान पहुँच गए और हज़रत अक़दस के मकान को घेर लिया। पुलिस और इंस्पेक्टर पुलिस ने मस्जिद पर चढ़ाई की। जब हुज़ूर को सूचित किया गया तो आप बाहर आए। कप्तान ने कहा कि हम आपके घर की तलाशी चाहते हैं। हमें ख़बर मिली है कि आप अमीर अब्दुल रहमान खान, अफग़ानिस्तान से चोरी छुपे सम्पर्क रखते हैं। हुज़ूर ने कहा यह बिल्कुल ग़लत है हम तो सरकार अंग्रेज़ी के न्याय इन्साफ़ और शांति और धार्मिक स्वतंत्रता के सच्चे दिल से स्वीकार करने वाले हैं। आप यह पता लगा सकते हैं, लेकिन इस समय, हम नमाज़ पढ़ना शुरू करते हैं, आप प्रतीक्षा करें। कप्तान पुलिस मान गया मौलवी अब्दुल करीम साहिब ने अज़ान दी और नमाज़ मग़रिब पढ़ाई आप की क़िरअत में बिजली भरी हुई थी कप्तान ख़ुदा का शौकत वाला कलाम सुन कर हैरत में पड़ गया और नमाज़ ख़त्म होते ही उठ खड़ा हुआ और हज़रत अक़दस से कहने लगा मुझे विश्वास हो गया है कि आप नेक और सच्चे व्यक्ति हैं और दुश्मनों ने आप के ख़िलाफ ग़लत आरोप लगाए हैं और तलाशी का विचार छोड़ दिया और सरकार को रिपोर्ट भिजवा दी कि मिर्ज़ा साहिब के ख़िलाफ यह सरासर ग़लत प्रोपेगन्डा है।

मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब मुबाहला के बारे में लाजवाब हो रहे थे। उन्होंने अपना अपमान देखकर हाथ पैर मारना शुरू कर दिया और जो 13 महीने का अपमान का समय निर्धारित किया था इस से बचने का बहाना तलाश करने लगे और एक नया रास्ता निकालते हुए एक धारदार चाकू लोगों को दिखाते हुए जनता को भड़काना शुरू कर दिया कि मिर्ज़ा ने मुझे लेखराम की तरह मारने का भी प्रबन्ध किया है। मुझे डर है कि अपनी सदाक़त और भविष्यवाणी को सच्चा साबित करने के लिए मुझे कत्ल करवाएं और बटाला के थाना में उपायुक्त से अनुरोध किया कि मुझे एक पिस्तौल और एक बंदूक जान की सुरक्षा के लिए लाइसेंस दिया जाए। बटाला के थाना में हज़रत अक़दस का कट्टर विरोधी उप निरीक्षक मुहम्मद बख्श नामक निर्धारित था। उसने उपायुक्त गुरदासपुर रिपोर्ट भिजवाई कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद पादरी हेनरी मार्टिन क्लार्क के मुकदमा में जब बरी हुआ था तो कप्तान डगलस ने यह निर्णय दिया था कि भविष्य कोई ऐसा विज्ञापन या पेशगोई न प्रकाशित की जाए जिस से शांति को खतरा हो लेकिन अब फिर मिर्ज़ा साहिब ने भविष्यवाणी करके उल्लंघन किया है जो शांति का भंग करना है। 5 जनवरी, 1899 ई को मौलवी मुहम्मद हुसैन बटवी के लाइसेंस प्रेसीडेंसी के लिए यह रिपोर्ट और आवेदन पर डिप्टी कमीश्नर ने पेशी रख दी। इस पर, मुहम्मद हुसैन बटालवी और उनके विचार वालों ने इस मुक़दमा को जीतने का प्रयास करना शुरू कर दिया। हज़रत अक़दस को इस बारे में सारी जानकारी मिल गई थी, लेकिन आप इस के बारे में चिंतित नहीं थे। हुज़ूर इस मुक़दमा के लिए गुरदासपुर पहुँचे और अपने ख़ुद्दाम सहित कचहरी में तशरीफ़ ले गए और 12 बजे तक अदालत में इंतज़ार फरमाते रहे। मुहम्मद हुसैन बटालवी के वकील के अनुरोध पर मुक़दमा लंबित हो गया और 11 जनवरी की तिथि निर्धारित हुई। 11 जनवरी को हुज़ूर फिर गुरदासपुर पधारे और अदालत में पेश हुए। उस दिन विरोधी पक्ष के बयान हुए और मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने बयान दिया कि पंडित लेखराम की कत्ल से भयभीत हूँ और अपनी सुरक्षा के लिए चाकू रखता हूँ और 1898 ई के विज्ञापन से मिर्ज़ा साहिब ने मुझे और भयभीत कर दिया है।

इस के बाद ही हज़रत अक़दस ने अपने बयान में फ़रमाया पंडित लेखराम के मुकाबला में जो भविष्यवाणी थी वह उसकी सहमति और उसके लिखित आवेदन पर थी। पंडित लेखराम पेशावर से कादियान आकर दो महीने रहा और बद-ज़ुबानी करता रहा और पंडित लेखराम ने भी अपनी ओर से एक विज्ञापन मेरे बारे में दिया था कि तुम तीन साल में हैज़ा रोग से मर जाओगे और भविष्यवाणी उसने पहले प्रकाशित की। बहरहाल पक्षों के बयान के बाद आदरणीय सय्यद शब्बीर हुसैन साहिब इंस्पेक्टर पुलिस ने गवाही दी कि ज़िला गुरदासपुर से पहले ज़िला लाहौर में भी इंस्पेक्टर पुलिस था और पंडित लेखराम के कत्ल के समय मौजूद था और यह आम मज़बूत शक था कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद का संबंध इस कत्ल में था। अत: प्रत्येक दोनों पक्षों के बयान के बारे में कोई संदेह नहीं है, कि शांति के भंग होना की कोई आशंका हो।

इस वक्तव्य के बाद मुकदमा 27 जनवरी तक स्थगित कर दिया गया

था और धारीवाल में सुनवाई तय की गई थी। इस दौरान हज़रत अक़दस ने आत्मरक्षा हेतु एक विस्तृत लिखित बयान लिखा और अंग्रेज़ी में प्रकाशित करवा कर अदालत में जमा करवाया जिस में आप ने अपनी पेशगोइयां मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब, अब्दुल्ला आथम और पंडित लेखराम के बारे में विस्तार से समझाया और इस बयान का इनकार कि मेरे विज्ञापन में कोई ऐसी भविष्यवाणी नहीं है जिस से उनकी जान माल और सम्मान को खतरा हो और बताया कि मैं एक शरीफ और सम्मानित परिवार से हूँ और अपने खानदान का महत्व अपनी जमाअत की स्थिति वर्णन की और अपने आप को शांति और सुरक्षा का दूत बताया।

(तब्लग़े रिसालत, जिल्द 8, पृष्ठ 24)

27 जनवरी को हुज़ूर 12 बजे अदालत में पधारे। हज़रत अक़दस की तरफ से पहले वकील ही पेश हुए लेकिन मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी महोदय द्वारा एक नए कानूनी मुशीर मिस्टर हर्बर्ट पैरवी के लिए आए और उन्होंने ने कहा कि नियम की दृष्टि से एक ही समय में सुनवाई नहीं हो सकती इसलिए मुक़दमा की तारीख 14 फरवरी तय हुई और डिप्टी आयुक्त ने इस दिन सबसे पहले हज़रत अक़दस का मुक़दमा सुनने का आदेश दिया और फिर नोटिस भेजने का आदेश दिया जैसा कि कहा गया है, कार्रवाई को खारिज कर दिया गया है। दिनांक 3 फ़रवरी 1899 ई को हुज़रत अक़दस को रोया के माध्यम से बिशारत दी गई कि आप बरी होंगे और दुश्मन विफल तथा नामुराद रहेंगे। (हकीकतुल महदी, पृष्ठ 10)

अंत 14 फरवरी का दिन आ गया और आप गुरदासपुर तशरीफ ले गए। मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी और उनके दोस्त ख़ुश थे कि आज हमारा प्रतिद्वंद्वी अदालत के कठघरे में दोषी प्रमाणित होगा और उन्हें महान जीत प्राप्त होगी लेकिन जज ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की विनम्र और सुलझी हुई लेखनी और उसके विरुद्ध मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब की गालियों के विज्ञापन देखे तो हैरान रह गया पुलीस की तरफ से बड़ी मेहनत से बनाया हुआ मुक़दमा खारिज कर दिया और एक लेख पर पक्षों से दस्तख़त कराए कि भविष्य में कोई भी पक्ष अपने किसी पक्ष के बारे में मौत तथा दिल दुखाने की भविष्यवाणी न करे। कोई किसी को काफ़िर दज्जाल , मुफ़्तरी और कज़ाब न कहे। कोई किसी को मुबाहला के लिए न बुलाए। ..... और एक दूसरे की तुलना में नरम शब्दों का प्रयोग करें बदगोई और गालियों से बचें।

हज़रत अक़दस को श्री जे एम डोई ने मुक़दमा खारिज करते हुए यह भी कहा कि वह गंदे शब्द जो मुहम्मद हुसैन और उसके दोस्तों ने आप के बारे में प्रकाशित किए हैं आप हक पर थे कि अदालत के माध्यम से आप न्याय चाहते और कानूनी कारवाई कराते और वह अधिकार अब तक कायम है ख़ुदा की क़ुदरत यह मुक़दमा जो आप पर खड़ा किया गया था। आप अपनी की भविष्यवाणी के अनुसार आप सम्मानजनक रूप से बरी हुए और उसके विपरीत मुहम्मद हुसैन बटालवी सख्त अपमानित हुआ।

(तारीख़ अहमदत, जिल्द 2, पृष्ठ 26)

## मुक़दमा नंबर (5) मुक़दमा गुड़गांव

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद ने जनवरी 1897 ई में ईसाइयों को एक हज़ार रुपए का एक पुरस्कार विज्ञापन दिया जिस में आप ने लिखा कि मेरा दावा है कि यीशु की पेशगोइयों की तुलना में मेरे निशान तथा पेशगोइयां अधिक हैं। अगर कोई पादरी मेरी पेशगोइयों की तुलना में यीशु के निशान सबूत के साथ अधिक दिखला दे तो एक हज़ार रुपए नकद दूंगा। मगर उस पर कोई ईसाई मैदान में न आया लेकिन एक मुसलमान विद्वान असग़र अली हुसैन साहिब ने गुड़गांव में लाला जोता प्रसाद साहिब मजिस्ट्रेट अदालत में हज़रत मसीह मौऊद के ख़िलाफ मुक़दमा कि इस चुनौती को स्वीकार करता हूँ क्योंकि मैं भी यीशु को मानता हूँ और इसलिए भी ईसाई हों अत: मुझे मिर्ज़ा साहिब के विज्ञापन के अनुसार हज़ार रुपए दिलाए जाएँ। अख़बार "आम" और "सत धर्म" आदि हिंदू अख़बारों को जब मालूम हुआ तो उन्होंने उस पर लंबे-चौड़े प्रतिकूल नोट लिखे। ख़ैर मुक़दमा का समन कादियान पहुंचा उस पर हज़रत मसीह मौऊद ने आदरणीय मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए आदरणीय मिर्ज़ा ख़ुदा बख़्श साहिब और आदरणीय मिर्ज़ा अफज़ल बेग साहिब को मुक़दमा की समाअत के लिए गुड़गांव भिजवाया। लाला जोता प्रसाद साहिब ने सरसरी कार्रवाई के बाद मुक़दमा खारिज कर दिया और मौखिक कहा कि यह मामला तो सुनने योग्य नहीं था लेकिन मैंने इस विचार से रख लिया था कि इसी बहाने हज़रत मिर्ज़ा साहिब के दर्शन हो जाएगें लेकिन वह पधारे नहीं तो इसे ख़त्म करता हूं।" (तारीख़ अहमदियत, जिल्द 2, पृष्ठ 62)

## मुक़दमा नंबर (6) मुक़दमा मौलवी करम दीन

### (पहला मुक़दमा मौलवी करम दीन साहिब की तरफ से)

मौलवी करम दीन साहिब ने हज़रत मसीह मौऊद और हकीम फज़लदीन साहिब के नाम पत्र लिखा कि पीर मेहर अली शाह साहिब गोलड़वी की किताब "सैफ चिशितयाई" वास्तव में मौलवी मुहम्मद हसन फ़ैज़ी साहिब की चोरी है और मौलवी करम दीन साहिब ने इसके सबूत के रुप में वह कार्ड भी हज़रत मसीह मौऊद को भिजवाया जो पीर साहिब ने उनके नाम गोलड़ा में भेजा था। आप इन दिनों किताब नुज़ुलुल मसीह लिख रहे थे। हुज़ूर ने इस पुस्तक में इन ख़तों को दर्ज किया। इसी तरह अख़बार अलहकम के संपादक साहिब ने समाचार पत्र में इन के आधार पर एक लेख भी प्रकाशित किया जिस में इन ख़तों की नक्ल भी शामिल कर दी। जब उनका प्रकाशन हो गया तो मौलवी करम दीन साहिब ने एक लेख लिखा जो सिराजुल अख़बार जेहलम ने प्रकाशित किया कि यह सब ख़त नकली हैं मैंने तो मिर्ज़ा साहिब की योग्यता जांचने के लिए धोखा दिया था और लिखा मिर्ज़ा साहिब का सभी कारोबार केवल धोखा तथा फरेब और अपने दावे में कज्ज़ाब और मुफ़्तरी हैं। मौलवी करम दीन के इस लेख पर हज़रत मसीह मौऊद का हक था कि उन पर अपनी सच्चाई साबित करने के लिए अदालत जाते लेकिन आप ने धैर्य से काम लिया और इंतज़ार में रहे कि मौलवी करम दीन साहिब ख़ुद इस लेख का इन्कार प्रकाशित दें लेकिन उन्होंने एक महीने तक इन्कार न किया जिस पर आदरणीय हकीम फज़लदीन साहिब मालिक ज़िया उल इस्लाम प्रैस कादियान ने (जिन के नाम मौलवी करम दीन साहिब ने प्रारंभिक पत्र लिखे थे।) करम दीन साहिब के ख़िलाफ गुरदासपुर में अभियोजन दायर कर दिया। इस मुक़दमा की गवाही हो रही थी कि मौलवी करम दीन साहिब ने छपने वाली किताब "नज़ुलूल मसीह" के पन्ने प्रस्तुत किए जिस पर हकीम फज़लदीन साहिब ने मौलवी करम दीन साहिब पर दूसरा अभियोजन दायर कर दिया कि यह किताब बहैसियत मालिक प्रेस मेरा स्वामित्व थी जो अब नियमित प्रकाशित नहीं हुई इसलिए यह माल चोरी का है। और मौलवी करम दीन साहिब का उसे अपने पास रखना अपराध है क्योंकि मौलवी करम दीन साहिब ने आदरणीय शेख याकूब अली साहिब तुराब संपादक अलहकम के ख़िलाफ भी कई बार ज़हर उगला था लिए शेख साहिब ने भी मौलवी करम दीन साहिब पर और मौलवी फकीर मुहम्मद साहिब मालिक सिराजुल अख़बार के ख़िलाफ दावा दायर कर दिया और इस तरह मौलवी करमदीन पर तीन अभियोजन पक्ष दायर किए गए थे। उनके अभियोजन के जवाब में मौलवी करमदीन साहिब ने भी राय संसार चन्द साहिब अदालत झेलम में हज़रत मसीह मौऊद और आदरणीय अब्दुल्लाह कश्मीरी साहिब व शेख याकूब अली तुराब साहिब के नाम अभियोजन दायर कर दिया इस मुक़दमा में हुज़ूर और सहाबा के नाम वारंट जारी हुए और 17 जनवरी, 1903 ई को निर्धारित तारीख़ तय की गई, समाचार पत्रों ने इस मुक़दमा पर बहुत ख़ुशी व्यक्त की गई।

सफर जेहलम की तैयारी से पहले किताब "मवाहेबुर्रहमान" का प्रकाशन हुआ जिस में यह भविष्यवाणी थी कि अल्लाह तआला इस मुक़दमा में सफलता प्रदान करेगा। यह किताब 15 जनवरी को छप कर तैयार हो गई। हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम जेहलम के लिए रवाना होकर निर्धारित तारीख़ को जेहलम पहुंचे और दोपहर तीन बजे अदालत के कमरा में आए और मुक़दमा की कार्यवाही शुरू हुई। हज़रत अक़दस के वकीलों की तरफ से यह सवाल उठाया गया कि कानूनी दृष्टि से मौलवी करमदीन साहिब को दावा दायर करने का अधिकार नहीं है क्योंकि यह मृतक के निकटवर्ती रिश्तेदार नहीं हैं अन्त में मजिस्ट्रेट ने 19 जनवरी को फैसला का दिन निर्धारित किया और कहा अब पक्षों को जेहलम में ठहरने की ज़रूरत नहीं है वकीलों की निगरानी में निर्णय सुना दिया जाएगा इस अवसर पर, लोग वापस कादियान आ गए। अदालत ने घोषणा के अनुसार 19 जनवरी 1903 ई को फैसला सुनाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बरी कर दिया और मौलवी करमदीन साहिब के अभियोजन को ख़ारिज कर दिया उस निर्णय पर लिखा कि मुहम्मद हसन फ़ैज़ी साहिब की विधवा और बच्चों की उपस्थिति में मौलवी फज़ल दीन साहिब को अभियोजन दायर करने का कानून की दृष्टि से कोई अधिकार नहीं है इस फैसले पर मौलवी करमदीन साहिब ने सत्र जज जेहलम की अदालत में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, हकीम फज़लदीन साहिब मौलवी अब्दुल्लाह साहिब और संपादक अख़बार अल-हकम के ख़िलाफ निगरानी दायर की थी, लेकिन उन्हें भी ख़ारिज कर दिया गया था और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम और आप के सहाबा इज़्ज़त के साथ बरी कर दिए गए ।

(तारीख़ अहमदियत, जिल्द 2, पृष्ठ 261)

## मुक़दमा नंबर (7) मुक़दमा मौलवी करम दीन

मौलवी करमदीन साहिब को अपने पहले मुक़दमा में नाकामी हुई तो उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद और हकीम फज़लदीन साहिब मालिक ज़िया उल इस्लाम प्रेस कादियान के ख़िलाफ जनवरी 1903 ई को दूसरा फौजदारी मुक़दमा राय संसार चन्द साहिब मजिस्ट्रेट जेहलम की अदालत में दायर कर दिया। यह मुक़दमा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताब "मवाहेबुर्ररहमान" पृष्ठ 129 के इन शब्दों के आधार पर था जिस में उनके लिए कज़्ज़ाब, लईम और बुहताने अज़ीम के शब्दों को प्रयोग किया था और उन्होंने अदालत में बयान दिया कि मिर्ज़ा साहिब की इस पुस्तक में जो ज़िया उल इस्लाम प्रेस में छपी है जिस के मालिक हकीम फज़लदीन साहिब हैं, ये शब्द मेरे बारे में दर्ज किए गए हैं और इन अपमानजनक शब्दों से मानो मुझे काफ़िर से उपमा दी गई है यह ख़बर सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तक पहुंची तो आपने फ़रमाया कि "यह अभियोजन हम पर नहीं अल्लाह तआला पर ज्ञात होता है .... मैं मानता हूँ कि ख़ुदा ज़ोरदार हमलों से सच्चाई को प्रकट कर देगा ताकि कत्ल के मुक़दमा की हसरतें रह न जाएं कि क्यों छूट गया।"

(अल-हकम 14 फरवरी 1903 ई)

मुक़दमा अभी प्रारंभिक चरणों में था कि आप को अल्लाह तआला ने इस के अन्जाम के बारे में ख़बर देना शुरू कर दिया। मुक़दमा जेहलम से स्थानांतरित होकर गुरदासपुर आ गया। इस अदालत का मजिस्ट्रेट एक कट्टर और पक्षपातपूर्ण आर्य लाला चन्दू लाल था। माह अगस्त 1903 ई को गुरदासपुर में इस मुक़दमा की सुनवाई हुई और हज़रत अक़दस द्वारा अनुरोध प्रस्तुत किया गया था कि अदालत मिर्ज़ा साहिब की उपस्थिति को माफ कर दे और अनुरोध ख़ारिज कर दिया गया था। अक्टूबर 1903 ई को सुनने के दौरान मौलवी करमदीन साहिब ने अदालत में बयान दिया कि मैं अवान क़ौम का प्रतिष्ठित व्यक्ति हूँ और हज़रत अली की औलाद में से हूं जो वाक्य मेरे बारे में इस पुस्तक में उपयोग किए गए हैं यह मेरा बहुत बड़ा अपमान है। नवम्बर 1903 ई को फिर इस मुक़दमा की सुनवाई हुई और मौलवी करमदीन साहिब ने कई बयान दिए और सरकार की नज़र में अपनी इज़्ज़त और सम्मान का उल्लेख किया और इस बात से इन्कार किया कि अख़बार "सिराजुल अख़बार" में जो लेख प्रकाशित हुआ है वह मेरा नहीं और मैंने हकीम फज़लदीन साहिब को कोई पत्र नहीं लिखा। इन्हीं दिनों में मौलवी सना-उल्लाह साहिब अमृतसरी भी बतौर गवाह पेश हुए। बयान दिया मैं मौलवी करम दीन साहिब को विद्वान, मौलवी और मुसलमानों का नेता समझता हूँ। लईम बहुत तुच्छ शब्द है। उनके बाद मौलवी मुहम्मद अली साहिब की गवाही हुई। आप ने विभिन्न शब्दकोशों और अनुवादों तथा कुरआन मजीद से कज़्ज़ाब और लईम के अर्थ स्पष्ट किए। दिसंबर 1903 ई में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मौलवी करमदीन साहिब की जिरह के जवाब में अपनी विशिष्ट मान्यताओं की एक सूची अदालत में दाखिल फ़रमाई जिस में हुज़ूर ने अपना रुख़ रखा और कहा कि "मैं मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद मसीह मौऊद महदी मअहूद और इमामुज़्ज़मां और समय का मुजद्दिद और ज़िल्ली रूप में रसूल और नबी अल्लाह हूँ।" (पत्रिका अल्फ़ुरकान जुलाई 1942)

14 जनवरी 1904 ई को गुरदासपुर में फिर सुनवाई थी लेकिन हुज़ूर अक़दस अपनी बीमारी की वजह से अदालत में हाज़िर न हुए और डॉक्टर के प्रमाणपत्र पर आप को अदालत में उपस्थिति से एक महीने की छुट्टी मिली। मुक़दमा ने बेहद नाज़ुक स्थिति ग्रहण कर ली थी क्योंकि मुक़दमा मजिस्ट्रेट लाला चन्दू लाल साहिब की अदालत में था और वह खुल्लम खुल्ला दुश्मनी पर उतर आया था। लाला चन्दू लाल यह योजना बना चुका था कि हज़रत मसीह मौऊद को चाहे एक दिन के लिए ही सही ज़रूर नज़र बंद किया जाए लेकिन मजिस्ट्रेट की यह नापाक साज़िश नाकाम हुई। इस संबंध में आर्यों की एक बैठक हुई जिस में मजिस्ट्रेट को ज़ोर दिया गया कि यह हमारे नेता पंडित लेखराम का क़ातिल है और अब वह आप के हाथ में शिकार है और सारी क़ौम की दृष्टि आपकी तरफ है अब आप शिकार को हाथ से जाने दिया तो आप सारी क़ौम के दुश्मन होंगे। जिस पर लाला चन्दू लाल ने कहा कि यदि मेरा बस चले तो मैं मिर्ज़ा साहिब और इन की सारी क़ौम को जहन्नम में पहुंचा दूं परन्तु मेरा बस नहीं चल रहा। परन्तु अब मैं पूरी कोशिश करूंगा कि इस अदालत में पेशी की करवाई अमल में लाऊं। (अर्थात बिना ज़मानत स्वीकार किए गिरफतार कर के जेल में भेजना।) मुंशी मुहम्मद हुसैन साहिब जो सिलसिला के विरोधी थे और गुरदासपुर अदालत में काम करते थे वह भी अपने एक आर्य दोस्त के साथ सभा में गए हुए थे। वह ख़ुद तो बैठक में शामिल नहीं थे लेकिन अपने आर्य दोस्त के एक तरफ होकर मज्लिस सुनते रहे और उन्होंने आकर डॉक्टर मीर मुहम्मद इस्माइल ख़ान को पूरी घटना सुनाई उन्होंने कहा कि वास्तव में सिलसिला का विरोधी हूं लेकिन किसी प्रतिष्ठित परिवार को हिंदुओं के हाथों अपमानित होता नहीं देख सकता। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस की सूचना मिली थी। हुज़ूर गुरदासपुर आए तो आप ने आदरणीय डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल ख़ान को अपने कमरे में बुलवाया और फरमाया कि मैंने आप को इसलिए बुलाया है कि वह घटना सुनूं जो आर्यों की मज्लिस में मेरे ख़िलाफ हुई उस पर आप ने घटना सुनाई। जब आप शिकार के शब्द पर पहुंचे तो अचानक हुज़ूर उठ कर बैठ गए आप की आँखें चमक उठीं और चेहरा लाल हो गया, आपने फ़रमाया में उसका शिकार हूँ ! मैं शिकार नहीं हूं, मैं शेर हूं और ख़ुदा का शेर हूं। वह भला ख़ुदा के शेर पर हाथ डाल सकता है? ऐसा कर के तो देखे। इन शब्दों को बोलते हुए, आपकी आवाज़ इतनी ऊंची हो गई कि कमरा के भी लोग चौंक उठे।

मजिस्ट्रेट साहिब हर मामला में प्रतिकूल व्यवहार प्रकट करते आ रहे थे इस कारण से हुज़ूर द्वारा मुक़दमा के इन्तक़ाल का अनुरोध किया गया

जो अस्वीकार हो गया था और मुक़दमा फिर लाला चन्दू लाल साहिब की अदालत में आ गया और मुक़दमा बेहद नाज़ुक़ स्थिति में था इस दौरान गुरदासपुर में हुज़ूर का स्वास्थ्य ख़राब हो गया और स्वास्थ्य संबंधी कारण से आप एक महीने मुक़दमा में हाज़िर न हो सके सुनवाई होती रही। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तरफ से आदरणीय ख्वाजा कमालुद्दीन दीन साहिब और आदरणीय मौलवी मुहम्मद अली साहिब वकालत कर रहे थे।

अत: लाला चन्दू लाल साहिब ने 10 अप्रैल 1904 ई की तारीख़ रखी ताकि हज़रत मसीह मौऊद अपनी बीमारी की छुट्टी के बाद फिर से अदालत में हाज़िर हों और वह अपनी योजना को पूर्ण कर सके और हज़रत अक़दस को नज़रबंद करने में सफल हो परन्तु समय पर जब कि ज़ुल्म का पैमाना अन्तिम छोर पर पहुंच चुका था और सिलसिला के दुश्मन एकजुट होकर अपने बुरे इरादों को व्यावहारिक रूप में देखने के लिए तैयार बैठे थे। ख़ुदा तआला की ग़ैरत अपने मामूर के लिए नुसरत लिए जोश में आई और लाला चन्दू लाल साहिब को पद से अपदस्थ कर के जज के रूप में मुल्तान भिजवा दिया गया और फिर कुछ समय बाद पेंशन पाकर लुधियाना आए यहाँ उनकी हालत बहुत ख़राब हो गई और दिमाग़ ख़राब हो गया और आख़िर इस दुनिया से कूच कर गए। लाला चन्दू लाल साहिब का पतन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रामाणिकता का चमकता हुआ निशान था। क्योंकि उसके संबंध में आप ने भविष्यवाणी फरमाई थी एक बार मुक़दमा के दौरान कुछ ग़ैर अहमदियों ने हुज़ूर से अर्ज़ किया कि हुज़ूर लाला चन्दू लाल साहिब का इरादा आप को कैद करने का है आप दरी पर लेटे हुए थे। आप उठ बैठे और फरमाया कि मैं चन्दूलाल को अदालत की कुर्सी पर नहीं देखता। (अल-हकम 14 जूलाई 1935) लाला चन्दू लाल साहिब की जगह जो मजिस्ट्रेट आया वह भी पक्षपाती हिंदू था जिसका नाम मेहता आत्मा राम था उसने पहले मजिस्ट्रेट से भी बढ़कर हसद का व्यवहार किया और हिन्दुओं और ईसाइयों के हाथ की कठपुतली बनकर खुल्लम खुल्ला भेदभाव किया और शीघ्र तारीख़ें डालना शुरू कर दीं जिस पर हुज़ूर को कई बार गुरदासपुर सफर करना पड़ा और केवल वैर और द्वेष के कारण मुक़दमा लंबा कर दिया और शब्द "मुकज़्ज़िब" पर जिरह होती रही। तारीखें जल्द जल्द पड़ने की वजह से हुज़ूर ने गुरदासपुर में ही रहने का फैसला कर लिया इस दौरान स्थिति देखकर कुछ नेक दिल लोगों ने दोनों पक्षों में सुलह करवाने की कोशिश की और एक प्रतिनिधिमंडल मौलवी करमदीन साहिब को राज़ी कर के हुज़ूर की सेवा में हाज़िर हुआ हुज़ूर ने कहा सुलह की स्थिति केवल एक ही है कि मौलवी करमदीन साहिब स्वीकार कर लें कि यह ख़त उनके हैं जिनका अदालत में उन्होंने इनकार किया था तब तक कोई सफाई नहीं। प्रतिनिधिमंडल ने कहा हुज़ूर अधिकारियों की नज़र अच्छी नहीं आप ने कहा अधिकारी क्या करेंगे मुझे सज़ा दे देंगे ओर क्या करेंगे यह सुनकर प्रतिनिधिमंडल वापस चला गया और सुलह की तमाम कोशिशें नाकाम हो गईं। (तब्लीग़े रिसालत, जिल्द 10, पृष्ठ 44)

मुक़दमा की कार्रवाई फिर से शुरू हो गई। अत: लम्बी चौड़ी अदालती कार्यवाही के बाद लाला मेहता आत्मा राम साहिब ने पहला निर्णय सुनाने की तारीख़ 1 सितम्बर 1904 ई रखी थी लेकिन बाद में इस तिथि के बजाय 8 अक्तूबर तय हुई जिस में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर 500 रुपए और आदरणीय हकीम फज़लदीन साहिब को दो सौ रुपए जुर्माना किया और न अदा करने की अवस्था में छ: छ: महीने कैद की सज़ा दी गई। निर्णय के समय पुलिस का पूरा प्रबंध था। 8 अक्तूबर चूंकि शनिवार का दिन था और मजिस्ट्रेट ने विशेष योजना के तहत इस दिन निर्धारित किया था कि अगले दिन छुट्टी थी और निर्णय भी अदालत के बर्खास्त होने से कुछ मिनट पहले सुनाया ताकि हज़रत अक़दस द्वारा जुर्माना शीघ्र अदा न हो पाए और आप शनिवार और रविवार जेल में रहें लेकिन अल्लाह तआला ने हुज़ूर के ख़ुद्दाम के दिल में तहरीक डाली कि इन्साफ के दिन रुपए साथ लेकर जाएं बल्कि आदरणीय नवाब मुहम्मद अली खान साहिब ने तो नौ सौ रुपए एहतियात के तौर पर निर्णय से एक दिन पहले ही गुरदासपुर भिजवा दिए थे। अत: जैसे ही फैसला सुनाया गया आदरणीय ख्वाजा कमालुद्दीन साहिब ने उस रकम से जुर्माना की राशि तभी निकाल कर अदा कर दी और इस तरह लाला मेहता आत्मा राम साहिब और उसके साथियों की योजना धरी की धरी रह गई।

लाला मेहता आत्मा राम साहिब भी लाला चन्दू लाल की तरह अल्लाह तआला के क्रोध से न बच सका। खुदा के मामूर से उसने जो क्रूर व्यवहार किया उसके इल्ज़ाम में मुकदमा के दौरान ही दो लड़के हज़रत अक़दस के भविष्यवाणी के अनुसार समय-समय से 20-25 दिन के अन्दर मर गए और उसके दु:ख में वह आधा पाग़ल हो गया और उसके घर मातम बिछ गया। हुज़ूर पर कश्फ़ के माध्यम से प्रदर्शित किया गया था कि आत्मा राम साहिब अपनी औलाद के शोक से पीड़ित होगा और आप ने इस कश्फ़ को पहले से अपनी जमाअत को सुना भी दिया था।

(हकीकतुल वह्य, पृष्ठ 121,122)

दिनांक 5 नवम्बर 1904 को श्री ई. हरि साहिब डिवीज़नल जज अमृतसर की अदालत में इस फैसले के ख़िलाफ मौलवी करम दीन साहिब की तरफ से अपील की गई और प्रतिद्वंद्वी की ओर से सरकारी वकील जिरह के लिए तय किया गया। अल्लाह तआला ने सुसमाचार के अनुसार 7 जनवरी 1905 ई को डिवीज़नल जज अमृतसर ने हज़रत अक़दस को प्रत्येक आरोप से बरी क़रार दे दिया और मौलवी करम दीन साहिब की जिरह को अस्वीकार कर दिया और निर्णय में लिखा खेद है कि मुक़दमा प्रारंभिक चरणों में ही समाप्त हो जाना चाहिए था बेवजह समय बर्बाद किया गया। अत: हर दो आरोपी अर्थात् मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद और हकीम फज़लदीन साहिब को बरी किया जाता है और उन्हें जुर्माना वापस दिया जाएगा। दिनांक 24 जनवरी सरकारी खज़ाने से जुर्माना की राशि वापस अदा कर दी गई। (तारीख़ अहमदियत, भाग 2, पृष्ठ 277)

अत: ये सात मुकदमे जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम पर विरोधियों की तरफ से किए गए थे उन में विरोधी बहुत अपमानित तथा लज्जित हुए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की प्रामाणिकता उज्ज्वल दिन की तरह प्रकट हुई। विरोधियों ने तो अपनी तरफ से कोई रास्ता आप को अपमानित करने के लिए नहीं छोड़ा था परन्तु ख़ुदा तआला हमेशा आपके साथ रहा है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो मसीह मौऊद को अस्सलामो अलैकुम पहुंचाया यह वास्तव में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक भविष्यवाणी है न जन साधारण की तरह एक मामूली सलाम और भविष्यवाणी यह है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे बिशारत देते हैं कि जिस कदर विरोधियों की तरफ से फ़ित्ने उठेंगे और काफिर और दज्जाल कहेंगे और सम्मान और जान का इरादा करेंगे और कत्ल के लिए फत्वे लिखेंगे ख़ुदा उन सब बातों में उन्हें नामुराद रखेगा और तुम्हारे साथ सुरक्षा रहेगी और हमेशा के लिए सम्मान और बुज़ुर्गी और स्वीकारिता और प्रत्येक असफलता से सुरक्षा सारी दुनिया में रहेगी जैसा कि अस्सलामो अलैकुम का अभिप्राय है।"

(तोहफा गोलड़विया, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 17, पृष्ठ 131 हाशिया)

अत: ये सातों मुकदमे हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरोधियों के मुकाबला में अल्लाह तआला की सहायता तथा मदद का मुंह बोलता सबूत हैं।

☆ ☆ ☆

**पृष्ठ 1 का शेष**

नहीं सकता। अत: क्या यह संभव है कि ख़ुदा तआला इतनी कृपा एवं उपकार एक व्यक्ति पर करे, हालांकि वह जानता है कि वह उस पर झूठ बांधता है जबकि मैं अपने विरोधियों की दृष्टि में तीस-बत्तीस वर्ष से ख़ुदा तआला पर झूठ बांध रहा हूं और प्रतिदिन रात्रि को अपनी ओर से एक कलाम बनाता हूं और प्रात: काल कहता हूं कि यह ख़ुदा का क़लाम है और फिर उसके बदले में ख़ुदा तआला का मुझ से यह व्यवहार है कि वे जो अपने विचार में मोमिन कहलाते हैं उन पर मुझे विजय देता है और मुबाहला के समय में उन्हें मेरे मुकाबले पर मृत्यु के घाट उतारता है या अपमान की मार से कुचल देता है तथा अपनी भविष्यवाणियों के अनुसार एक संसार को मेरी ओर खींच रहा है और हज़ारों निशान दिखाता है तथा प्रत्येक मैदान में प्रत्येक पहलू तथा प्रत्येक संकट के समय में मेरी सहायता करता है कि जब तक उसकी दृष्टि में कोई सच्चा नहीं उसकी ऐसी सहायता वह कभी नहीं करता और न उसके लिए ऐसे निशान प्रकट करता है"

(हकीकतुल वह्य, रूहानी खज़ायन जिल्द 20 पृष्ठ 461)

है कोई काज़िब जहां में लाओ लोगों कुछ नज़ीर
मेरे जैसी जिस की ताईदें हुई हों बार बार

आपका ऐसा प्रचंड विरोध हुआ कि कुछ लाइनों में इसका नक्शा खींचना असंभव है। हिंदुस्तान के 200 उल्मा से आप पर कत्ल का फत्वा लगाया गया। मक्का से कुफ्र का फत्वा मंगवाया गया। कत्ल के योग्य ठहराया गया। मेल-जोल सलाम कलाम से मना किया गया। ख़तरनाक़ मुकदमों में घसीटा गया। ख़तों में, तहरीर में, तकरीर में गालियों के अंबार लगाए गए लेकिन नतीजा क्या हुआ आप अकेले थे अल्लाह तआला ने एक जमाअत बना दी। फिर यह जमाअत पूरे पंजाब में फैल गई। फिर पूरे हिंदुस्तान में फैल गई। फिर हिंदुस्तान से बाहर यूरोप और अमेरिका जैसे दूर-दूर के देशों से नेक रूहें ने आपको क़ुबूल किया। आपकी ज़िन्दगी में अल्लाह तआला ने आप की जमाअत को लाखों में पहुंचा दिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं।

"फिर अब्दुल हक गज़नवी उठा और मुबाहल कर के मुकाबिल में दुआएं कीं कि जो झूठा है ख़ुदा के उस पर लानत हो। बरकतों से वंचित हो, दुनिया में उस की क़बूलियत का नामो-निशान ना रहे। तो तुम देख लो कि उन दुआओं का क्या अंत हुआ और अब वह किस अवस्था में और हम किस अवस्था में हैं। देखो इस मुबाहल के बाद हर एक बात में खुदा ने हमारी तरक्की की और बड़े-बड़े निशान प्रकट किए हैं। आसमान से भी और ज़मीन से भी और एक दुनिया को मेरी तरफ लौटा दिया और जब मुबाहला हुआ तो शायद 40 आदमी मेरे दोस्त थे और आज 70 हज़ार के लगभग उनकी संख्या है। (पैग़ाम सुलह में हुज़ूर ने जमाअत की संख्या 4 लाख बताई है।) और आर्थिक फतेह अब तक 2 लाख से भी अधिक और एक संसार को ग़ुलाम की तरह इरादतमंद कर दिया और ज़मीन के किनारों तक मुझे प्रसिद्धि दे दी। आनन्द तब हो कि पहले कादियान में आओ और देखो की इरादतमंदों का लश्कर कितना इस जगह ठहरा है फिर अमृतसर में अब्दुल हक ग़ज़नवी को किसी दुकान पर या बाज़ार में चलता हुआ देखो कि किस अवस्था में चल रहा है। बहुत अफसोस है कि ख़ुदा की ताकत खुले-खुले तौर पर मेरे समर्थन में आसमान से नाज़िल हो रही है परन्तु यह लोग पहचान नहीं करते।

(नुज़ूलुल मसीह, रूहानी खज़ायन जिल्द 18 पृष्ठ 410)

यही नहीं विरोधी अपने विरोध में असफल रहे और अल्लाह तआला ने आपको सफलता से हमकिनार किया बल्कि यह बात भी विचार योग्य है कि विरोधियों में से जिन्होंने भी आपके ख़िलाफ बद्दुआ की और आपकी मौत चाही। लानतुल्लाह अलल् काज़बीन कहा। आप से मुबाहला किया आप की मुख़ालफत में सीमा से आगे निकल गए। वह आपकी ज़िन्दगी में हलाक हुए और जो ज़िन्दा रहे वे इतना अपमानित हुए कि उनकी ज़िन्दगी मौत से बुरी हो गई। हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"कुछ मस्जिदों में मेरे मरने के लिए नाक रगड़ते रहे, कुछ ने जैसा कि मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर क़सूरी ने अपनी पुस्तक में और मौलवी इस्माईल अलीगढ़ी ने मेरे बारे में अटल आदेश लगाया कि यदि वह झूठा है तो हम से पहले मरेगा और अवश्य ही हम से पहले मरेगा क्योंकि झूठा है। किन्तु जब इन पुस्तकों को संसार में प्रकाशित कर चुके तो फिर अति शीघ्र स्वयं ही मर गए और इस प्रकार उनकी मृत्यु ने फ़ैसला कर दिया कि झूठा कौन था, परन्तु फिर भी यह लोग नसीहत ग्रहण नहीं करते। अत: क्या यह बहुत बड़ा चमत्कार नहीं है कि मुहयुद्दीन लखूके वाले ने मेरे बारे में मृत्यु का इल्हाम प्रकाशित किया वह स्वयं मर गया। मौलवी इस्माईल ने प्रकाशित किया, वह मर गया, मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर ने एक पुस्तक लिख कर अपनी मृत्यु से पहले मेरी मृत्यु हो जाने को बड़ी धूम धाम से प्रकाशित किया वह मर गया, पादरी हमीदुल्लाह पेशावरी ने मेरी मृत्यु के बारे में दस महीने का समय रख कर भविष्यवाणी प्रकाशित किया, वह मर गया, लेखराम ने मेरी मृत्यु के बारे में तीन साल की अवधि की भविष्यवाणी प्रकाशित की वह मर गया। यह इसलिए हुआ ताकि ख़ुदा तआला हर प्रकार से अपने निशानों को पूर्ण करे।"

(तोहफा गोलड़विया, रूहानी खज़ायन जिल्द 17 पृष्ठ 45)

कुरआन मजीद के अनुसार अल्लाह तआला झूठे नबी को हलाक़ कर देता है कभी सफलता का मुंह नहीं दिखाता। अगर आप झूठे थे तो अल्लाह तआला को आप को हलाक कर देता। परन्तु अल्लाह तआला ने प्रत्येक अवसर पर प्रत्येक क्षेत्र में आप को सफलता प्रदान की और दुश्मन को अपमानित किया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं कि

"मैं यह कहता हूं कि जो कोई ख़ुदा तआला पर इल्हाम का झूठ बोलता है और कहता है कि यह इल्हाम मुझ को हुआ हालांकि जानता है कि वह इल्हाम उस को नहीं हुआ वह जल्द पकड़ा जाता है और उसकी उम्र के दिन बहुत थोड़े होते हैं। कुरआन और इंजील और तौरात ने यही गवाही दी है। बुद्धि भी यही गवाही देती है और इसके विपरीत कोई इनकार करने वाला किसी इतिहास के संदर्भ से एक उदाहरण भी पेश नहीं कर सकता और नहीं दिखला सकता कि कोई झूठा इल्हाम का दावा करने वाला पच्चीस 25 वर्ष तक या अठारह 18 साल तक झूठे इल्हाम दुनिया में फैलाता रहा और झूठे के रूप में ख़ुदा के अंतरंग और ख़ुदा का नियुक्त और ख़ुदा का भेजा हुआ अपना नाम रखा और उसके समर्थन में कई सालों तक अपनी ओर से इल्हाम बना कर प्रसिद्ध करता रहा और फिर वह बावजूद इन आपराधिक गतिविधियों के पकड़ा नहीं गया।? क्या उम्मीद की जाती है कि कोई हमारा विरोधी इस सवाल का जवाब दे सकता है? कदापि नहीं। उनके दिल जानते हैं कि वे इन सवालों के जवाब देने में असमर्थ हैं मगर फिर भी इनकार से रुकते नहीं बल्कि बहुत सी दलीलों से उन पर हुज्जत हो गई मगर वह लापरवाही के ख़वाब में सो रहे हैं।"

(अय्यामुस्सुलह, रूहानी खज़ायन जिल्द 14 पृष्ठ 267)

फिर विचार योग्य है कि उस ज़माना में जब कि प्रत्येक धर्म की तरफ से इस्लाम को बहुत अधिक विरोध का सामना था। एक आप ही थे जिन्होंने इस्लाम की प्रतिरक्षा का हक़ अदा किया। और केवल प्रतिरक्षा नहीं की बल्कि बहुत मज़बूत दलीलों से इस्लाम का ज़िन्दा होना, मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़िन्दा रसूल होना और कुरआन मजीद को ज़िन्दा किताब होना साबित फरमाया। अगर

कोई इस्लाम के मुकाबला पर अपने धर्म का ज़िन्दा होना प्रमाणित कर दिखाए तो आप ने इस के लिए बड़े-बड़े इनाम निर्दिष्ट किए और इस के लिए भरपूर चैलन्ज दिया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं

"अंत में फिर हर एक सच्चाई के इच्छुक को याद दिलाता हूं कि वे सच्चे धर्म के निशान और इस्लाम की सच्चाई के आसमानी गवाह जिस से हमारे अंधे उलमा बेख़बर हैं वह मुझ को प्रदान किए गए हैं। मुझे भेजा गया है ताकि मैं प्रमाणित करूं कि एक इस्लाम ही है जो जीवित धर्म है। और वे करामतें मुझे प्रदान की गई हैं जिन के मुकाबले से सारे दूसरे धर्म वाले और हमारे अंदरूनी अंधे मुख़ालिफ भी आज असहाय हैं मैं हर एक मुख़ालिफ को दिखा सकता हूं कि कुरआन शरीफ अपनी शिक्षाओं और अपने ज्ञान और अपने मआरिफ और अपनी पूर्णता की दृष्टि से चमत्कार है मूसा के चमत्कार से बढ़कर और ईसा की मौत से सैंकड़ों गुना बढ़कर।

मैं बार-बार कहता हूं और ऊंची आवाज़ से कहता हूं कि कुरआन और रसूले करीम सल्लल्लाहो वसल्लम से सच्ची मुहब्बत रखना और सच्चा अनुकरण करना इंसान को करामत वाला बना देता है और इसी पूर्ण इन्सान पर ग़ैब के ज्ञान के दरवाज़े खोले जाते हैं और दुनिया में किसी धर्म वाला रूहानी बरकतों में इसका मुकाबला नहीं कर सकता। मैं इस में तजुर्बे वाला हूं। मैं देख रहा हूं कि इस्लाम के अतिरिक्त सारे धर्म मुर्दा उनके ख़ुदा मुर्दा और ख़ुद वे सारे अनुकरण करने वाले मुर्दा हैं और खुदा तआला के साथ ज़िन्दा संबंध हो जाना इस्लाम के क़ुबूल करने के अतिरिक्त हरगिज़ संभव नहीं। हे अज्ञानियो! तुम्हें मुर्दा की उपासना में क्या मज़ा है और मुर्दा खाने में क्या लज्ज़त ??? आओ मैं तुम्हें बतलाऊं कि ज़िन्दा ख़ुदा कहां है और किस कौम के साथ है वह इस्लाम के साथ है। इस्लाम इस वक्त मूसा का तूर है जहां ख़ुदा बोल रहा है और वह ख़ुद जो नबियों के साथ कलाम करता था और फिर चुप हो गया। आज वह एक मुसलमान के दिल में कलाम कर रहा है क्या तुम में से किसी को शौक नहीं।? इस बात को परखो। फिर अगर हक को पा जाए तो स्वीकार कर ले।"

(ज़मीमा रसाला अन्जामे आथम रूहानी ख़ज़ायन भाग 11 पृष्ठ 345)

कुरआन मजीद का ज़िन्दा किताब होने के बारे में आप फरमाते हैं कि

"यदि ईमान कोई निश्चित बरकत है तो निस्संदेह उस के कुछ लक्षण होने चाहिए परन्तु कहां है कोई ऐसा ईसाई जिस में वे लक्षण पाए जाते हों जिनका यसू ने वर्णन किया है? अत: या तो इंजील झूठी है या ईसाई झूठे हैं। देखो कुरआन मजीद ने जो ईमान के लक्षण वर्णन किए हैं वे प्रत्येक युग में पाए गए हैं। कुरआन मजीद फरमाता है कि ईमान वालों को इल्हाम (ईशवाणी) प्राप्त होता है। ईमान वाला परमेश्वर की आवाज़ को सुनता है ईमान वाले की दुआएं सब से अधिक स्वीकार होती हैं। ईमान वाले पर परोक्ष की सूचनाएं प्रकट की जाती हैं। ईमान वाले को आसमानी समर्थन प्राप्त होता है। इस से सिद्ध होता है कि कुरआन परमेश्वर की पवित्र वाणी है और कुरआन के वादे परमेश्वर के वादे हैं। उठो ईसाइयो ! यदि कुछ सामर्थ्य है तो मुझ से मुकाबला करो। यदि मैं झूठा हूं तो निस्संदेह मेरा वध कर दो अन्यथा आप लोगों पर ख़ुदा का आरोप सिद्ध होता है और नर्क की आग पर आप लोगों का क़दम है। वस्सलामो अला मनित्तबल हुदा।

(सिरीजुद्दीन इसाई के चार सवाल रूहानी ख़ज़ायन भाग 12 पृष्ठ 374)

इश्के इलाही और इश्के रसूल और इश्के कुरआन का एक ठाठें मारता हुआ समुन्द्र आप के सीने में था। आप का लिट्रेचर पढ़ने वालों पर यह इश्क तथा मुहब्बत नि:सन्देह अच्छी तरह रौशन होगा। यही वह इश्क था जिस के कारण पूरी ज़िन्दगी, ज़िन्दगी का हर लम्हा आप ने इस्लाम की सेवा में व्यतीत किया। किसी विरोधी को साहस नहीं था कि अल्लाह और उस के रसूल और उस की किताब के विरुद्ध आप के सामने मुंह खोले। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं कि

" ख़ुदा ने मुझ कुरआन के मआरिफ प्रदान किए हैं। और मेरा नाम अव्वलुल मोमिनीन रखा है। और मुझे समुन्द्र की तरह हकायक तथा मआरिफ से भर दिया है और मुझे बार-बार इल्हाम दिया है कि कि इस ज़माने में कोई इलाही मअरफत और कोई इलाही मुहब्बत तेरी मअरफत और मुहब्बत के बिना नहीं।"

(ज़रूरतुल इमाम, रूहानी खज़ायन जिल्द 13 पृष्ठ 502)

आप फरमाते हैं "मैं सच-सच कहता हूँ कि हम खारी ज़मीन (कल्लर वाली ज़मीन) के साँपों और जंगलों के भेड़ियों से सुलह कर सकते हैं, परन्तु उन लोगों से हम सुलह नहीं कर सकते जो हमारे प्यारे नबी पर जो हमें अपनी जान (प्राण) और माता-पिता से भी प्यारा है, गन्दे प्रहार करते हैं। ख़ुदा हमें इस्लाम पर मृत्यु दे। हम ऐसा काम करना नहीं चाहते जिसमें ईमान जाता रहे।"

(पैग़ामे सुलह, रूहानी खज़ायन जिल्द 23 पृष्ठ 459)

आप फरमाते हैं "अगर ये लोग हमारे बच्चों को हमारी आंखों के सामने कत्ल कर देते और हमारी जानी और दिली अज़ीज़ों को टुकड़े टुकड़े कर डालते और हमें बहुत अपमान से जान से मारते और हमारे सारे मालों पर कब्ज़ा कर लेते तो अल्लाह की क़सम फिर अल्लाह की क़सम हमें दु:ख न होता और इतना दिल न दुखता जो इन गालियों और इस तौहीन से जो हमारे रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की की गई दुखा।"

(आइना कमालाते इस्लाम, रूहानी खज़ायन जिल्द 5 पृष्ठ 52)

"तुम्हारे लिए एक अनिवार्य शिक्षा यह है कि क़ुर्आन शरीफ़ को अलग-थलग न डाल दो कि उसी में तुम्हारा जीवन निहित है। जो लोग क़ुर्आन को सम्मान देंगे वे आकाश पर सम्मानित किए जाएंगे। जो लोग हर हदीस और हर वाणी पर क़ुर्आन को प्राथमिकता देंगे उनको आकाश पर प्राथमिकता प्रदान की जाएगी। समस्त मानव जाति के लिए सम्पूर्ण धरती पर अब क़ुर्आन के अतिरिक्त कोई पुस्तक नहीं और न ही हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिवा कोई रसूल और सिफ़ारिश करने वाला। अत: तुम प्रयास करो कि सच्चा प्रेम इस प्रभुत्वशाली नबी के साथ हो। उस पर किसी अन्य को किसी भी प्रकार की श्रेष्ठता न दो, ताकि आकाश पर तुम्हारा नाम मुक्ति प्राप्त लोगों में लिखा जाए।"

(कश्ती नूह, रूहानी खज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 13)

कुरआन मजीद हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेशों के अनुसार आपका अत्याधिक पवित्र जीवन भी आपकी सदाक़त की एक दलील है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र ज़िन्दगी को अल्लाह तआला ने आपकी सदाक़त के रूप में प्रस्तुत फरमाया है। अल्लाह तआला फरमाता है

فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِّن قَبْلِهِ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ (सूरह यूनुस 17)

अर्थात मैं तुम में एक उम्र गुज़ार चुका हूं फिर भी तुम अक़्ल से काम नहीं लेते। यह नबी के सदाक़त की कसौटी है। आपने नियमित अपनी पुस्तकों में इस बात को वर्णन किया है और चैलन्ज दिया है कि कौन तुम में है जो मेरी पिछली ज़िन्दगी पर कोई उंगली उठा सके। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अत्याधिक पवित्र जीवन इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक एवं कुरआन मजीद के आशिक़ होने पर भी दूसरों की गवाहियां मौजूद हैं।

अल्लाह तआला से इलहाम और वार्तालाप का इनाम पाना यह दुनिया का सबसे बड़ा इनाम है। अल्लाह तआला के मामूर और उसके भेजे हुए उससे सबसे ज्यादा हिस्सा लेते हैं, उसके बग़ैर ज़िन्दा ही नहीं रह सकते। किसी अल्लाह तआला के भेजे हुए की सदाक़त की सब से बड़ी दलील यही है कि अल्लाह तआला उसे अपने वार्तालाप से नावाज़ता है उसे पेशगोइयां अर्थात भविष्य की ख़बरें बताता है और वे भविष्य की खबरें अपने-अपने समय पर पूरी होती हैं। कुछ शीघ्र पूरी होती हैं कुछ दिनों में, कुछ सालों में, और कुछ लंबे समय के बाद। आप को अल्लाह तआला ने बहुत अधिक भविष्य की ख़बरें प्रदान कीं। लाखों भविष्यवाणियां आप की पूरी हुईं। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कई बार विरोधियों को चैलेंज दिया कि यदि मैं झूठा हूं तो भविष्यवाणियां और भविष्य की ख़बरें बताने में मुझ से मुकाबला करो। आप फरमाते हैं

"हम ऐसे धर्म को क्या करें जो मुर्दा धर्म है। हम ऐसी किताब से क्या लाभ उठा सकते हैं जो मुर्दा किताब है। और हमें ऐसा ख़ुदा क्या लाभ पहुंचा सकता है जो मुर्दा ख़ुदा है। मुझे उस हस्ती की क़सम है जिस के हाथ में मेरी जान है कि मैं अपने ख़ुदाए पाक के विश्वसनीय और कतई मुकालमा (वार्तालाप) से लाभान्वित हूं और लगभग हर रोज़ लाभान्वित होता हूं और वह ख़ुदा जिस को यीशु मसीह कहता है कि तूने मुझे क्यों छोड़ दिया मैं देखता हूं कि उसने मुझे नहीं छोड़ा और मसीह की तरह मेरे पर भी बहुत हमले हुए मगर हर एक हमला में दुश्मन असफल रहे और मुझे फांसी देने के लिए मन्सूबा किया गया मगर मैं मसीह की तरह सलीब पर नहीं चढ़ा बल्कि हर एक पल में मेरे ख़ुदा ने मुझे बचाया और मेरे लिए उसने बड़े बड़े-बड़े चमत्कार दिखाए और बड़े-बड़े मज़बूत हाथ दिखलाए और हज़ारों निशानों से उस ने मुझे पर साबित कर दिया है कि ख़ुदा वही ख़ुदा है जिस ने कुरआन को नाज़िल किया और जिसने आंहज़रत सल्लल्लाहो वसल्लम को भेजा और मैं ईसा मसीह को हरगिज़ इन मामलों में अपने ऊपर कोई प्राथमिकता नहीं देखता।"

(चश्मा मसीही, रूहानी खज़ायन जिल्द 20 पृष्ठ 353)

हज़रत में मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाता हैं

"सीधी बात थी कि आप लोग मुलहम (जिस को इल्हाम हो) कहलाते हैं दुआ के कबूल होने का भी दावा है। कुछ भविष्यवाणियां जो दुआ क़ुबूल होने पर हों इस विज्ञापन के द्वारा प्रकाशित कर दें और इस तरफ से मैं भी प्रकाशित कर दूंगा। एक बरस से अधिक समय न हो फिर आप लोगों की भविष्यवाणियां सच्ची निकलें तो एकदम में हज़ारों लोग मेरी जमाअत के आपके साथ शामिल हो जाएंगे और झूठे का मुंह काला हो जाएगा। क्या आप इस निवेदन को स्वीकार कर लेंगे? संभव नहीं। अत: यही वजह है कि सच्चाई के इच्छुक आप लोगों से विरक्त होते जाते हैं।"

(तोहफा ग़जनविया, रूहानी खज़ायन जिल्द 13 पृष्ठ 502)

ईसाईयों ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इलहाम के दावा को कमज़ोर और झूठा करने के लिए क्रोध, द्वेष, और ग़ुस्सा की राह से एक चाल चली परन्तु वह चाल उन पर उल्टी पड़ गई। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"नूर अफशां में कुछ पादरियों ने छपाया कि हम एक जलसा में एक लिफाफा बंद पेश करेंगे। इसका विषय इलहाम के माध्यम से हमें बतलाया जाए परन्तु जब हमारी तरफ से मुसलमान होने के साथ से यह निवेदन स्वीकार हुआ तो फिर पादरियों ने इस तरफ मुंह भी न किया।"

(आइना कमालाते इस्लाम, रूहानी खज़ायन जिल्द 5 पृष्ठ 284)

जो ख़ुदा का है उसे ललकारना अच्छा नहीं
हाथ शेरों पर ना डाल ए रूबः ज़ारो नज़ार
आजमाइश के लिए कोई ना आया हरचंद
हर मुख़ालिफ को मुकाबिल पर बुलाया हम ने

अल्लाह तआला के बाद उसका मामूर और मुर्सल ही इंसान का सबसे ज्यादा सहानुभूति करने वाला होता है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में अल्लाह तआला फरमाता है क्या तू इस ग़म से अपने आप को हलाक कर लेगा कि लोग एक ख़ुदा पर ईमान क्यों नहीं लाते। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आं हज़रत सल्लल्लाहो वसल्लम के पूर्ण प्रतिरूप थे। आप को भी मानव जाति से असीमित सहानुभूति थी। घटनाएं तो बहुत हैं यहां पर हम केवल आपकी एक लेखनी ही देते हैं। आप फरमाते हैं

"मैं समस्त मुसलमानों, ईसाइयों, हिन्दुओं और आर्यों पर यह बात स्पष्ट करता हूँ कि संसार में कोई मेरा शत्रु नहीं है। मैं मानवजाति से ऐसा प्रेम करता हूँ कि जैसे दयालु मां अपने बच्चों से अपितु उस से भी बढ़कर। मैं केवल उन मिथ्या आस्थाओं का शत्रु हूँ जिस से सच्चाई का ख़ून होता है। मानव के साथ सहानुभूति करना मेरा कर्त्तव्य है तथा झूठ, अनेकेश्वरवाद, अन्याय और प्रत्येक दुष्कर्म, और दुराचार से विमुखता मेरा सिद्धान्त।"

(अर्बईन नम्बर 1, रूहानी खज़ायन जिल्द 17 पृष्ठ 344)

ख़ुदा के मामूर और भेजे हुए की दुआएं बहुत अधिक स्वीकार की जाती हैं यह खुदा तआला के मामूर की सच्चाई की एक विशेष निशानी है। दुआ की क़बूलियत में कोई उनका मुकाबला नहीं कर सकता। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने अपनी सच्चाई के सबूत के तौर पर दुआ की क़बूलियत का चमत्कार भी पेश फरमाया। अल्लाह तआला ने आप की हज़ारों दुआएं को स्वीकार फरमाया। आप ने दुआ की क़बूलियत के मामला में विरोधियों को मुकाबले की दावत दी कि यदि वे सच्चे हैं तो दुआ की क़बूलियत में आप से मुकाबला करें और अपना सानिध्य और अल्लाह के हुज़ूर मक़बूल होने का प्रमाण पेश करें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"मैं बहुत अधिक दुआओं के कबूल होने का निशान दिया गया हूं कोई नहीं जो इसका मुकाबला कर सके। मैं कसम खा कर कह सकता हूं कि मेरी दुआएं तीस हज़ार के लगभग क़ुबुल हुई हैं। और उन का मेरे पास सबूत है।"

(ज़रूरतुल इमाम 1, रूहानी खज़ायन जिल्द 13 पृष्ठ 497)

स्पष्ट हो कि ख़ुदा तआला के फज़्ल से मेरी यह अवस्था है कि मैं केवल इस्लाम को सच्चा धर्म समझता हूं और दूसरे धर्मों को झूठा और निरा झूठ का पुतला विचार करता हूं और मैं देखता हूं कि इस्लाम के मानने से नूर के चश्मे मेरे अन्दर बह रहे हैं और केवल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत के कारण वह उच्च स्तर वार्तआलाप और दुआओं के स्वीकार होने का मुझे प्राप्त हुआ है जो सच्चे नबी के अनुकरण के किसी को प्राप्त नहीं हो सकेगा। और अगर हिन्दू और इसाई अपने झूठे उपास्यों से दुआ करते करते मर भी जाएं तब भी उन को वह स्तर प्राप्त नहीं हो सकता और वह इलाही कलाम जो दूसरे ज़न्नी रूप से मानते हैं मैं उस को सुन रहा हूं और मुझे दिखलाया गया और समझाया गया है कि दुनिया में केवल इस्लाम ही सच है और मुझ पर प्रकट किया गया है कि ये सब कुछ हज़रत ख़ात्मुल अंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी की बरकत से तुझे मिला है। और जो कुछ मुझे मिला है इसकी तुलना दूसरे धर्मों में नहीं क्योंकि वे झूठ पर हैं। अब अगर कोई सच का इच्छुक है चाहे वह हिंदू हो ईसाई या आर्या या यहूदी या ब्राह्मण या

कोई और है उसके लिए बहुत अच्छा अवसर है जो मेरे मुकाबला पर खड़ा हो जाए और वह भविष्य की ख़बरों के प्रकट होने और दुआओं के स्वीकार होने में मेरा मुकाबला कर सके तो मैं अल्लाह तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि अपनी सारी जायदाद जो दस हज़ार रुपए के लगभग होगी उसके हवाले कर दूंगा या जिस तरह से उसकी तसल्ली हो सके उसी तरह से जुर्माना अदा करने में उसको तसल्ली दूंगा।"

(आइना कमालाते इस्लाम, रूहानी खज़ायन जिल्द 5 पृष्ठ 353)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने सच्चाई प्रमाणित करने के लिए ईसाइयों मुसलमान उल्मा, सौफिया और सज्जादा नशीनों को मुबाहला की दावत दी, ना सिर्फ एक बार बल्कि बार-बार मुबाहला की तरफ बुलाया ताकि दुनिया पर प्रकट हो जाए कि किस तरह अल्लाह तआला आपके लिए सच्चाई के निशान प्रकट करता है। अधिकतर ने फरार का रास्ता धारण किया जिसने आप से मुबाहला किया मुबाहला के अनुसार या हलाक हुआ या बहुत ही ज्यादा अपमानित हुआ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं

"एक तक्वा वाले आदमी के लिए यह काफी था कि ख़ुदा ने मुझे झूठ बोलने वालों की तरह हलाक नहीं किया बल्कि मेरे बाहर और भीतर को और मेरे जिस्म और मेरी रूह पर वह उपकार किए जिन को मैं गिन नहीं सकता अब भी अगर मौलवी साहिबान मुझे झूठा समझते हैं तो इससे बढ़कर एक और फैसला है वह यह कि मैं..... मौलवी साहिबान से मुबाहला करूं।"

(अन्जामे आथम रसाला दावते क़ौम, रूहानी खज़ायन जिल्द 11 पृष्ठ 50)

"अत: उठो और मुबाहला के लिए तैयार हो जाओ। तुम सुन चुके हो कि मेरा दावा दो बातों पर आधारित है। प्रथम कुरआन मजीद की आयतें और हदीस पर दूसरे अल्लाह तआला के उन इल्हामों पर। अत: तुम ने कुरआन मजीद की आयतों और हदीस को क़ुबूल न किया और ख़ुदा के कलाम को इस तरह टाल दिया जैसे कोई तिनका तोड़ कर फेंक दे। अब मेरे दावा की दूसरी बुनियाद दूसरे भाग पर है। अत: मैं उस क़ादिर और ग़ैरत वाले ख़ुदा की आपको क़सम देता हूं जिसकी क़सम को कोई ईमानदार रद्द नहीं कर सकता कि आप इस दूसरी बुनियाद पर फैसले के लिए मुझ से मुबाहला कर लो।"

(अन्जामे आथम रसाला दावते क़ौम, रूहानी खज़ायन जिल्द 11 पृष्ठ 65)

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने अपनी सच्चाई प्रमाणित करने के लिए निशान दिखाने के लिए भी दावत दी। मुसलमानों को भी दी, ईसाइयों को भी दी, प्रत्येक धर्म वालों को दी, और न केवल एक बार बल्कि बार-बार दी। आपने फरमाया अगर कोई सच्चे दिल से हमारे पास आ कर रहे तो ज़रूर अल्लाह तआला उसको कोई ना कोई निशान दिखा देगा और मुसलमान होने की शर्त पर भी आपने एक साल के अंदर अंदर निशान दिखाने का वादा फरमाया। बात यह है कि अधिकतर विरोध करने वाले दिल के सच्चे और तबीयत के नेक नहीं होते और ईमान से उनको कोई विशेष लगाव नहीं होता ख़ुदा के मामूर की दुश्मनी और द्वेष और हसद में बंधे होते हैं और हर तरह के धोखा और फरेब और झूठ को उसके ख़िलाफ प्रयोग करते हैं, ऐसे में वे निशान दिखाने की दावत को किस तरह क़ुबूल कर सकते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं।

"हे मेरे विरोधी मौलवियो ! अगर तुम में शक हो तो आओ कुछ रोज़ मेरी सुहबत में रहो। अगर ख़ुदा के निशान न देखो तो मुझे पकड़ो और जिस तरह चाहो इन्कार से पेश आओ। मैं हुज्जत को पूरा कर चुका। अब जब तक तुम उस हुज्जत को न तोड़ लो। तुम्हारे पास कोई उत्तर नहीं। खुदा के निशान बारिश की तरह बरस रहे हैं क्या तुम में से कोई नहीं जो सच्चा दिल लेकर मेरे पास आए? क्या तुम में से एक भी नहीं जो सच्चा दिल लेकर मेरे पास आए क्या एक भी नहीं।

( ज़मीमा रसाला अन्जामे, रूहानी खज़ायन जिल्द 11 पृष्ठ 50)

आप ने इस्लाम कबूल करने की शर्त पर मलका विक्टोरिया को भी निशान दिखाने की दावत दी। आप फरमाते हैं

"अगर हुज़ूर मलका मुअज़्ज़मा मेरे दावे की सच्चाई के लिए मुझ से निशान देखना चाहें तो मैं विश्वास रखता हूं कि अभी एक साल पूरा न हो कि वह निशान ज़ाहिर हो जाए न सिर्फ यही बल्कि दुआ कर सकता हूं कि यह सारा ज़माना भलाई और सेहत से गुज़रे लेकिन अगर कोई निशान प्रकट न हो और मैं झूठा निकला तो मैं उस सज़ा में राज़ी हूं कि सम्मान वाली मलिका के तख़्त के आगे फांसी दिया जाऊं। यह सब वेदना इसलिए है कि काश हमारी उपकार करने वाली मलिका को उस आसमान के ख़ुदा की तरफ ध्यान आ जाए जिस से इस ज़माना में इसाई मज़हब बेख़बर है।"

(तोहफा कैसरिया, रूहानी खज़ायन जिल्द 12 पृष्ठ 276)

अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम को केवल अपने फज़ल से कुरआन मजीद के हक़ायक तथा मआरिफ प्रदान किए आप ने कुरआन मजीद के गहरे ज्ञान और मआरिफ और सूक्ष्म बातों से मानव जाति को आगाह फरमाया। कई स्थानों पर आप ने अपनी किताबों में वर्णन किया है। सूरह फातिहा की अज़ीम तफसीर लिखी आप ने हिंदुस्तान और अरब के उल्मा को कुरआन के इल्म और कुरआन की तफसीर में मुकाबला की दावत दी लेकिन किसी को आप के मुकाबिल पर आने का साहस नहीं हुआ। हज़रत मसीह


## हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيْلِ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ(الحاقة 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

## ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit : www.alislam.org/urdu/library/57.html

मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"मैं कुरआन शरीफ के हकायक और मआरिफ वर्णन करने का निशान दिया गया हूं कोई नहीं जो उसका मुकाबला कर सके।"

(ज़रूरतुल इमाम, रूहानी खज़ायन जिल्द 13 पृष्ठ 496)

"मैंने यह ज्ञान पाकर सभी मुख विरोधियों को क्या अब्दुल हक का गिरोह और क्या बटालवी का गिरोह, अत: सब को ऊंची आवाज़ से इस बात के लिए दावत दी कि मुझे कुरआन के हकायक और मआरिफ प्रदान किए गए हैं। तुम लोगों में से किसी की मजाल नहीं की मेरे मुकाबला पर कुरआन शरीफ के हक़ायक तथा मआरिफ वर्णन कर सके। अत: इस ऐलान के बाद मेरे मुकाबला में इन में से कोई भी नहीं आया और अपनी अज्ञानता पर जो समस्त अपमानों की जड़ है उन्होंने मुहर लगा दी।"

(अन्जामे आथम, रूहानी खज़ायन जिल्द 11 पृष्ठ 311)

आप अरबी भाषा पर पूर्ण अधिकार रखते थे। उर्दू और फारसी पर आप की जबरदस्त हुक्मरानी थी। कुछ उल्मा झूठ के मार्ग से लोगों को धोखा देने के लिए यह मशहूर करते थे कि आपको अरबी का ज्ञान और कुरआन का इल्म नहीं है हालांकि अरबी पर आपको पूर्ण अधिकार था और इस पर अधिक यह कि अल्लाह तआला ने आपको इसमें और भी शक्ति प्रदान की। एक ही रात में अरबी भाषा के 40,000 धातुएं अर्थात "मसदर" अल्लाह तआला ने आप को सिखाए और चमत्कार के तौर पर अरबी भाषा की फसाहत तथा बलाग़त प्रदान की कि अरब उल्मा आप के गद्य तथा पद्य को देखकर दंग रह गए। और स्पष्ट रूप में इस बात को वर्णन किया कि कोई अरब भी ऐसा नहीं लिख सकता। अजम तो अजम अरब के भी किसी बड़े से बड़े आलिम को अरबी पद्य तथा गद्य पद में मुकाबला करने के लिए आपके सामने आने का साहस नहीं हुआ। आप की तरफ से 22 किताबें अरबी भाषा में प्रकाशित हुईं जब कि विरोधियों को इसके मुकाबला पर एक भी पुस्तक प्रकाशित करने की तौफीक़ नहीं मिली। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"मुझे एक बार यह इलहाम हुआ कि

اَلرَّحْمٰنُ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ یَا اَحْمَدُ فَاضَتِ الرَّحْمَۃُ عَلٰی شَفَتَیْکَ۔

अर्थात खुदा ने तुझे हे अहमद कुरआन सिखलाया और तेरे होठों पर रहमत जारी की गई और इस इल्हाम की व्याख्या में यह अर्थ मुझे इस तरह बताए गए कि करामत और निशान के तौर पर कुरआन तथा कुरआन की भाषा के बारे में दो तरह की नेमतें मुझ को प्रदान की गई हैं। (1) एक यह कि कुरआन मजीद के मआरिफ उच्च चमत्कार के रूप में मुझे सिखाए गए जिन में दूसरा मुकाबला नहीं कर सकता (2) यह कि कुरआन की भाषा यानी अरबी में वह पूर्णता मुझे प्रदान की गई कि अगर सारे विरोधी आपस में सहयोग करके भी इसमें मेरा मुकाबला करना चाहें तो असफल तथा अपमानित होंगे और वे देख लेंगे जो मिठास और पूर्णता और फसाहत अरबी भाषा की हकायक तथा मआरिफ के साथ मेरे कलाम में हैं वे इनको और इनके दोस्तों और उनके उस्तादों और उनके बुजुर्गों को हरगिज़ हरगिज़ प्राप्त नहीं। इस इलहाम के बाद मैंने क़ुरआन शरीफ के कुछ स्थानों और सूरतों की तफसीरें लिखीं और इसी प्रकार अरबी भाषा में कई पुस्तकें बहुत ही फसीह तथा बलीग़ लिखीं और विरोधियों को उनके मुकाबले के लिए बुलाया। बल्कि बड़े-बड़े इनाम इन के लिए निर्दिष्ट किया अगर वे मुकाबला कर सके और इनमें से जो नामी आदमी थे जैसा कि मियां नज़ीर हुसैन देहलवी और अबू सईद मुहम्मद हुसैन बटालवी संपादक इशाअतुस्सुन्नत इन लोगों को बार-बार इस बात की तरफ दावत दी गई कि अगर कुछ भी उनको अगर इल्म कुरआन में दख़ल है या अरबी भाषा में महारत है या मुझे मेरे दावा मसीह मौऊद में झूठा समझते हैं तो इन बलाग़त वाले हक़ायक तथा मआरिफ की तुलना पेश करें जो मैंने किताबों में इस दावा के साथ लिखे हैं कि वे इंसानी ताकतों से ऊंची शान वाले हैं और अल्लाह तआला के निशान हैं मगर वे लोग मुकाबला करने से आज़िज़ आ गए। न तो वे इन हक़ायक तथा मआरिफ की तुलना पेश कर सके जिन को मैंने कुछ कर्आन की आयतों की तफ्सीर लिखते समय अपनी किताबों में वर्णन किया था। और न उन फसीह तथा बलीग़ किताबों की तरह दो पंक्तियां लिख सके जो मैंने अरबी भाषा में लिखी थीं। अत: जिस आदमी ने मेरी किताब नूरुल हक और करामातुस्सादेकन और सिर्रुल ख़िलाफा और इत्मामुल हुज्ज: इत्यादि अरबी भाषा के रसाले पढ़े होंगे इन किताबों में किस ज़ोर शोर से फसाहत तथा बलाग़ की बातों को नज़म और नसर में वर्णन किया गया है और फिर किस ज़ोर-शोर से सारे विरोधी मौलवियों से इस बात की मांग की गई है कि अगर वह कुरआन करीम के ज्ञान और बलाग़त से कुछ हिस्सा रखते हैं तो इन कतिबों की तुलनाएं पेश करें। वरना मेरे इस कोरबार को ख़ुदा तआला की तरफ से समझ कर मेरी सच्चाई का निशान करार दें। परन्तु अफसोस कि इन मौलवियों ने न तो इन्कार को छोड़ा और न मेरी किताबों की तुलना बनाने में क़ादिर हो सके। बहरहाल इन पर ख़ुदा तआला की हुज्जत पूरी हो गई और वह उस आरोप के नीचे आ गए जिन के नीचे सारे वे इन्कार करने वाले हैं जिन्होंने ख़ुदा के मामूरीन से इन्कार किया।"

(तरयाकुल कुलूब, रूहानी खज़ायन जिल्द 15 पृष्ठ 230)

अल्लाह तआला ने आप पर कुछ ऐसे छुपे हुए राज़ खोले जो वह अपने नेक बंदों के ऊपर ही खोलता है जैसे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अपनी क़ुदरती आयु पाकर अन्य नबियों की तरह वफात पा गए। आपने मुल्क सीरिया से ईरान और अफग़ानिस्तान के रास्ते हिजरत करके कश्मीर में पनाह ली और श्रीनगर मुहल्ला खानियार में आप की कबर है। इसी तरह अल्लाह तआला से ज्ञान पाकर आप ने प्रमाणित किया कि अरबी भाषा सब भाषाओं की मां है।

अल्लाह तआला ने आप को इल्हाम के द्वारा फरमाया कि اِنَّہٗ اٰوَی الْقَرْیَۃَ कि वह कादियान को प्लेग से सुरक्षित रखेगा। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने सारे धर्मों को इसी तरह विरोधी मौलवियों को यह दावत दी कि हर एक के लिए यह उत्तम अवसर है कि अपनी अपनी सच्चाई प्रकट करें। अल्लाह तआला ने प्राथमिकता कर के कादियान का नाम ले लिया है। बाकी समस्त धर्मों वाले भी किसी न किसी स्थान या शहर का नाम लें। जैसे आर्या बनारस के बारे में भविष्यवाणी करें जो वेद के पढ़ने का स्थान है कि उन का परमेश्वर बनारस को ताऊन से बचा लेगा। और सनातन धर्म वालों को चाहिए कि किसी इस तरह के शहर के बारे में जिस में गाएं बहुत हों जैसे अमृतसर के बारे में भविष्यवाणी कर दें कि गायों के कारण उस में

**इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें**

**नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :**

**1800 3010 2131**

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

**Web.www.alislam.org**

**www.ahmadiyyamuslimjamaat.in**

ताऊन नहीं आएगी। यदि गाय अपना इतना चमत्कार दिखा दे तो कुछ आश्चर्य नहीं कि इस चमत्कारी जानवर के प्राणों को सरकार बचा दे। इसी प्रकार ईसाइयों को चाहिए कि कलकत्ता के बारे में भविष्यवाणी कर दें कि उसमें ताऊन नहीं पड़ेगी क्योंकि ब्रिटिश भारत का बड़ा बिशप कलकत्ता में रहता है। इसी प्रकार मियां शम्सुद्दीन और उनकी अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम के सदस्यों को चाहिए कि लाहौर के बारे में भविष्यवाणी कर दें कि वह ताऊन से सुरक्षित रहेगा और मुंशी इलाही बख़्श एकाउन्टेण्ट जो इल्हाम का दावा करते हैं उनके लिए भी यही अवसर है कि अपने इल्हाम से लाहौर के बारे में भविष्यवाणी करके अंजुमन हिमायत-ए-इस्लाम को मदद दें और उचित है कि अब्दुल जब्बार और अब्दुल हक़ अमृतसर शहर के बारे में भविष्यवाणी कर दें और चूंकि वहाबी सम्प्रदाय की असल जड़ दिल्ली है इसलिए उचित है कि नज़ीर हुसैन और मुहम्मद हुसैन दिल्ली के बारे में भविष्यवाणी करें कि वह ताऊन से सुरक्षित रहेगी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं कि

"तो इस प्रकार से जैसे समस्त पंजाब इस घातक रोग से सुरक्षित हो जाएगा और सरकार को भी मुफ़्त में दायित्त्व से निवृत्ति हो जाएगी और यदि लोगों ने ऐसा न किया तो फिर यही समझा जाएगा कि सच्चा ख़ुदा वही ख़ुदा है जिसने क़ादियान में अपना रसूल भेजा। और अन्तत: स्मरण रहे कि यदि ये सब लोग जिन में मुसलमानों के मुल्हम और आर्यों के पंडित और ईसाइयों के पादरी सम्मिलित हैं चुप रहे तो सिद्ध हो जाएगा कि ये सब लोग झूठे हैं और एक दिन आने वाला है कि क़ादियान सूर्य के समान चमक कर दिखा देगा कि वह एक सच्चे का स्थान है।"

(तरयाकुल कुलूब, रूहानी खज़ायन जिल्द 15 पृष्ठ 230)

इसी तरह चांद सूरज को ग्रहण का महान निशान अल्लाह तआला ने आप के समर्थन तथा सहायता में प्रकट किया। यह आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक भविष्यवाणी महदी के बारे में थी। जो अपने समय पर पूरी हुई। परन्तु अफसोस कि अत्यधिक निर्लज्जता और बेशर्मी से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस महान भविष्यवाणी को मुसलमान उल्मा ने आरोपों का निशाना बनाया। आप ने बड़े-बड़े इनाम का एलान फरमाया और चैलेन्ज दिया कि वह इन दलीलों का उत्तर दें। ये चैलेन्ज पाठक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तक नूरुल हक भाग 2, तोहफा गोलड़विया और रसाला अन्जाम आथम में देख सकते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"इन्साफ करना चाहिए कि किस ताकत और चमक से चांद सूरज ग्रहण की भविष्यवाणी पूरी हुई और हमारा दावा पर आसमान ने गवाही दी मगर ज़माना के मौलवी इस से भी इन्कार करने वाले हैं विशेष रूप से दज्जालों के रईस अब्दुल हक ग़ज़नवी और इस का सारा गिरोह

عَلَيْهِمْ نِعَالُ لَعْنِ اللهِ اَلْفَ اَلْفَ مَرَّةٍ

अपने नापाक इश्तेहार में बहुत ज़ोर से यह कहता है कि यह भविष्यवाणी भी पूरी नहीं हुई।"

(ज़मीमा रसाला अन्जामे आथम रूहानी खज़ायन जिल्द 15 पृष्ठ 230)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम फरमाते हैं

"भविष्यवाणी का तात्पर्य भी यह है कि यह निशान किसी दूसरे दावा करने वाले को नहीं दिया गया? चाहे सच्चा हो या झूठा, केवल महदी को दिया गया है। अगर यह अत्याचारी मौलवी इस प्रकार का कुसूफ ख़ुसूफ किसी अन्य दावा करने वाले के ज़माना में पेश कर सकते हैं तो करें इस से बेशक मैं झूठा प्रमाणित हो जाऊंगा वरना मेरी शत्रुता के लिए इतने महान चमत्कार से इन्कार न करें।

(ज़मीमा अन्जामे आथम, रूहानी खज़ायन जिल्द 11 पृष्ठ 332)

हम पहले भी इस बात को वर्णन कर चुके हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की सच्चाई को उस के यथा योग्य हक के साथ वर्णन करना बहुत कठिन काम है। कुछ पक्षों पर हम ने बहुत अधूरी सी बात की है। अल्लाह तआला हमारे विरोधियों के दिलों को खोले और उन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम की सच्चाई को समझने और इस इलाही सिलसिला में दाख़िल होने की तौफीक़ प्रदान करे। आमीन।

**(मंसूर अहमद मसरूर)**

**(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)**

☆ ☆ ☆


## अख़बार बदर ख़ुद भी पढ़ें और अपने दोस्तों को भी पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें।

**सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अख़बार बदर के विशेष नम्बर नवम्बर 2014 ई के लिए अपना पैग़ाम भिजवाते हुए फरमाया कि**

"यह बात बदर के दफतर और पाठकों को हमेशा याद रखनी चाहिए कि यह अख़बार जमाअत के दोस्तों के आध्यात्मिक सुधार और उन्नति के लिए जारी किया गया था और हमारे बुज़ुर्गों ने बावजूद विपरीत परिस्थतियों के पूरे यत्न से उसे हमेशा जारी रखने की कोशिश की और उनकी दुआओं और पवित्र प्रयासों से ही यह आज तक जारी है और यह चीज़ इस बात की मांग करती है अधिक से अधिक अहमदी इसे पढ़ें और लाभ प्राप्त करें। अल्लाह तआला अपने फज़ल से हिन्दुस्तान के अहमदियों को विशेष रूप से और बाकी दुनिया के अहमदियों को प्राय: इसका अध्ययन करने की और इस से जुड़ी हुई बरकतों को समेटने की तौफीक़ प्रदान करे। आमीन।"

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ इस महत्त्वपूर्ण और ईमान वर्धक उपदेश को सामने रखते हुए जमाअत अहमदिया भारत के दोस्तों की सेवा में अनुरोध किया जाता है कि हर घर में अख़बार बदर का अध्ययन किया जाना बहुत ज़रूरी है। इसमें कुरआन व हदीस और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के अतिरिक्त हुज़ूर अनवर के जुम्ए के ख़ुत्बे और भाषणों तथा हुज़ूर अनवर के विभिन्न देशों के दौरों की बहुत दिलचस्प और ईमान वर्धक रिपोर्ट नियमित प्रकाशित होती हैं जिस का अध्ययन हर अहमदी लिए आवश्यक है। अल्लाह तआला के फज़ल से अब यह अख़बार हिन्दी, बंगला, तमिल, तेलुगु , मलयालम, उड़िया भाषा में प्रकाशित हो रहा है। जिन अहमदी दोस्तों ने अभी तक अखबार बदर अपने नाम नहीं लगवाया है, उनसे अनुरोध है कि अख़बार बदर लगवाकर ख़ुद भी इसका अध्ययन करें और अपने बच्चों और घर के अन्य लोगों को भी इस अध्ययन का अवसर प्रदान करें। अल्लाह तआला हमें हुज़ूर अनवर के उपदेशों को पर अनुकरण करने की तौफीक़ प्रदान करे। आमीन।

मीटिंग से संबंधित किसी भी शिकायत या फीस को खोजने के लिए निम्नलिखित नंबरों से संपर्क करें। (नवाब अहमद, प्रबंधक अख़बार बदर)

**managerbadrqnd@gmail.com +91 94170 20616 ,+91 1872 224757**


Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad